

सैनिक तुझे सलाम!

SOLDIER, WE SALUTE YOU!

సేనానికి సత్కారం!

*A Poetic Tribute to the Param Vir Chakra Soldiers
in Hindi, English, Telugu Languages*



Editors :

Inampudi Shreelaxmi, Sudha Sekhar, Dr. Dumpa Sridevi



అక్షరాయన తెలుగు విమెన్ రాइटర్స్ ఫౌండేషన్
Aksharayan Telugu Women Writers Foundation

అభిజ్ఞ భారత్ ఆర్గానైజేషన్
Abhigna Bharath Organisation



सैनिक तुझे सलाम!

SOLDIER, WE SALUTE YOU !

సలాం సైనికా!

By

Aksharayan

(Telugu Women Writers Foundation)

&

Abhigna Bharath Organisation

Edition

August 2026

Copies : 500

Price : Rs. 300/-

ISBN :

Cover Design Al: **Dr. Rajan**

Published by:

Aksharayan

Flat No. 1002, Royal Pavillion Apartment,

Beside RBI Quarters, Ameerpet,

Hyderabad - 500 016

Ph : 9989928562, 9963374567

Email : aksharayantwwf@gmail.com

Abhigna Bharath Organisation

Fortune Sonthaliya B-1701,

Kokapet, Hyderabad.

Ph : 9440481111

Available at

All Reputed Book Houses

Printed at :

Sai Likhita Printers

6-2-959/2, D.B. Hindi Prachar Sabha Complex,

Khairatabad, Hyderabad - 500 004

Phone : 7207045979

परम वीर चक्र: अदम्यसाहस और श्रद्धांजलि

- एक भावपूर्ण काव्यात्मक संकलन -

राष्ट्र के इतिहास में ऐसे क्षण आते हैं जब असाधारण साहस की आवश्यकता होती है। परमवीर चक्र भारत का सर्वोच्च सैन्य सम्मान है, जो ऐसे ही अदम्यशौर्य का प्रतीक है।

यह संग्रह परमवीर चक्र विजेताओं को महिला लेखिकाओं की एक भावपूर्ण काव्यात्मक श्रद्धांजलि है। मैं अक्षरयान-तेलुगु विमेन राईटर्स फाउंडेशन का दिल से आभार व्यक्त करता हूँ। ये कविताएँ युद्ध की गाथाओं से परे, एक सैनिक के अंतर्मन, उसके बलिदान और देश प्रेम को दर्शाती हैं।



हर पदक के पीछे एक मानवीय कहानी होती है—माता-पिता का स्नेह, पत्नी की प्रतीक्षा और घर लौटने का सपना। पदक शौर्य को दर्ज करता है, जब कि कविता उस सैनिक की आत्मा से साक्षात्कार कराती है।

युद्ध की मूक साक्षी रही महिलाओं का दृष्टि कोण इन सैन्य कहानियों को एक नया आयाम देता है। यह स्मरण कराता है कि सैनिक का बलिदान पूरे परिवार, समाज और राष्ट्र का साझा दुख व गर्व होता है।

इस सराहनीय प्रयास के लिए लेखिकाएँ बधाई की पात्र हैं। उनकी कविताएँ इन नायकों को केवल इतिहास के पन्नों तक सीमित न रख कर हमारी सामूहिक स्मृति में जीवित रखती हैं।

आशा है कि यह संकलन युवाओं को साहस, कर्तव्य और राष्ट्र सेवा के सच्चे अर्थ से जोड़ेगा।

हम उन अमरवीरों को नमन करते हैं, जिन्होंने हमारे कल के लिए अपना आज न्योछावर कर दिया।

जय हिन्द!

- मेजर जनरल जी. श्रीनिवास, वीएसएम

जनरल ऑफिसर कमांडिंग
तेलंगाना & आंध्र सब एरिया

अनुक्रमणिका

परमवीर चक्र विजेता	तेलुगु कवयित्री	हिन्दी अनुवादिका	पृ.सं.
1. मेजर सोमनाथ शर्मा (मरणोपरांत) - 1947-1948 भारत-पाक वार, बटिल आफ बडगाम (1947)	हरिप्रिया	डॉ. सी. वसंता	13
2. नायक जदुनाथ सिंह (मरणोपरांत) बाटिल आफ नौषेरा (1948)	चन्द्रकला दीकोंडा	डॉ. सी. वसंता	16
3. सेकंड लेफ्टेनंट रामा रघोबा राणे - नौषेरा-राजौरी कार्यवाही (1948)	वी. शांति प्रबोधा	डॉ. सी. वसंता	19
4. कंपनी हवलदार मेजर पीरू सिंह शेखावत (मरणोपरांत) - टिटवाल सेक्टर (1948)	मणीनाथ कोपळे	डॉ. सी. वसंता	23
5. लान्स नायक करम सिंह - टिटवाल सेक्टर (1948)	पुलि जमुना	डॉ. सी. वसंता	25
6. कैप्टेन गुरबचन सिंह सलारिया (मरणोपरांत) - कांगो में संयुक्त राष्ट्र का अभियान (1961)	घालि ललिता प्रवल्लिका	घालि ललिता प्रवल्लिका	26
7. मेजर धनसिंह थापा - बेटिल आफ सिरिजाप (1962)	रमादेवी बालबोईना	डॉ. सी. वसंता	30
8. सूबेदार जोगींदर सिंह (मरणोपरांत) - बम ला-तवांग सेक्टर (1962)	बंडारु जयश्री	डॉ. सी. वसंता	32
9. मेजर सैतान सिंह (मरणोपरांत)- बेटिल आफ रिजांग ला (1962)	डॉ. सी. भवानी देवी	डॉ. सी. भवानी देवी	34
10. कंपनी क्वार्टर मास्टर हवलदार अब्दुल हमीद (मरणोपरांत) - बेटिल आफ असल उत्तर (1965)	सलीमा	नस्तीनखान	35

11. लेफ्टिनेंट कल्लल आरदेशिर बुर्जोरीजी तारापोर (मरणोपरांत) - बेटिल आफ चविन्दा (1965)	सुनीता बंडारू	सुनीता बंडारू	37
12. लान्स नायक अल्बर्ट एक्का (मरणोपरांत) - बेटिल आफ गंगासागर (1971)	डॉ. वाणी देवुलपल्ली	डॉ. पी. पद्मावती	39
13. फ्लाईंग आफ़ीसर निर्मलजीत सिंह सेखान (मरणोपरांत) - डिफ़ेन्स आफ़ श्रीनगर एयर फ़ील्ड (1971)	काट्रगड्डा भारती	डॉ. टी. श्रीलक्ष्मी	42
14. सेकंड लेफ्टिनेंट अरुण खेतरपाल (मरणोपरांत) - बेटिल आफ़ बसंतर (1971)	जयंती वासरचेट्ला	डॉ. पी. पद्मावती	44
15. मेजर होसियार सिंह - बेटिल आफ़ बसंतर (1971)	डॉ. कोंडापल्ली नीहारिणी	डॉ. पी. पद्मावती	47
16. नायाब सुबेदार बानासिंह - आपरेशन राजीव, सियाचिन ग्लेसियर (1987)	डॉ. बंडारू सुजाता शेखर	डॉ. पी. पद्मावती	51
17. मेजर रामस्वामी परमेश्वरन (मरणोपरांत)-आपरेशन पवन, श्रीलंका (1987)	चिवुकुला श्रीलक्ष्मी	श्रीवाणी शर्मा	53
18. कैप्टेन मनोज कुमार पांडे (मरणोपरांत)-खालूबर/जुबार कार्यवाही (1999)	वकुला वासु	डॉ. टी. श्रीलक्ष्मी	55
19. ग्रानेडियर योगेन्द्रसिंह यादव - टाइगर हिल (1999)	विश्वैका	विश्वैका	57
20. राइफलमेन संजय कुमार - एरिया फ्लाट टाप (1999)	डॉ. कोडूरु सुमनश्री	डॉ. टी. श्रीलक्ष्मी	61
21. कैप्टेन विक्रम बात्रा (मरणोपरांत)-पाइंट 5140 और पाइंट 4875 (1999)	आईनंपूडि श्रीलक्ष्मी	डॉ. सी. वसंता	63

सैनिक को प्रेम पत्र

प्रिय सैनिक!

यह चिट्ठी तुम तक पहुँचते क्षण में... तुम सब गहरे दुःख में डूबे हुए होंगे, पता है... तो भी विधि के प्रबंध में सरहद के हाते के पास आँखों को केमेरा बनाकर पहरा देते हुए... थार रेगिस्तान में तपती धूप में सरसर जलती-चलती गोलियों की वर्षा बन दमकते हुए... कश्मीर के हिम पर्वतों में बहुतेरे देहबम-से फूटते डरपोक आतंकियों के आगे सीना ताने... पूर्वी घने वनों में खींचे हुए धनुशों-से संचारण करते रहोगे, पता है... जो भी हो, मेरे देश के उदय सूर्य जैसे प्रहरी तुम ही हो... रात में चन्द्रमा जैसे पहरा देनेवाले तुम ही हो... सबसे भिन्न 140 करोड़ जनों की प्रशंसा मूर्ति तुम ही हो। जैसे भी हो... जहाँ भी हो... ज़रा-सा समय निकालकर मेरी यह चिट्ठी पढ़ोगे ना...!

प्रिय सैनिक... पुलवामा और सिंदूर घटनाएँ देखकर, लालिमा में बदले हिम पर्वत ही नहीं... करोड़ों लोगों के नेत्र भी, देश के चारों ओर बुने गए रक्षण हस्त हैं। तुम्हारे। हर पल देश की रक्षा की निगाह रखते नेत्र हैं तुम्हारे। तेज आँखें, कठिन शिक्षण से कड़क हुआ शरीर, आत्म स्थिरता भरी चाल, आत्मीय अभिवादन के साथ तुम कवायद कर रहे होते हो, तो जोश में आनेवाला लाल किला ही नहीं, हमारे देश के लोगों के दिल भी!

सरहदों का पहरा देना ही नहीं, प्राकृतिक विपत्तियों के आने पर भी दौड़ आकर सहारा देनेवाले, बाढ़ में बहते जानेवालों को किनारे पहुँचानेवाले, भूकंप के दौरान मलबे में फँसे लोगों को बाहर निकालनेवाले, भारी अग्नि दुर्घटना में फँसे लोगों के बचाव में लगे हुए तुम्हीं तो हो... प्रलय एवं विशाद को लाँघते हुए देश के झंडे की तरह खड़े होकर आत्मविश्वास को चहुँदिसाओं में बिछानेवाले तुम्हीं तो हो... भगवान की आराधना करने पर ही वह आकर बचाता है। लेकिन बतौर सैनिक तुम, देश विपदा में पड़ता है तो साथ ही रहते हो। रीढ़स्पर्श करके धैर्य दिलाकर, खड़ा करके जाते हो।

‘अमृत के बरसते रात’ में तिलक सैनिक की चिट्ठी पढ़कर मैं कितनी रातों में कितना रोया... अमेरीका के सिविल वॉर में अपनी पाँच संतान खोई माँ को तबके अमेरीकी प्रेसिडेंट अब्राहम लिंकन ने आदता से पत्र लिखा है जानकर उसी हृदय से मैं स्पंदित हुआ... पता है तुम्हें मैंने कितने आराधना-पत्र लिखे हैं!

कारगिल युद्ध में अमर हुए कैप्टन विक्रम बात्रा के कही आखिरी बातें अब भी मेरे कानों में गूँज रही हैं... ‘मैं लौटके आऊँगा... कारगिल पर अपने त्रिवर्ण पताका फहराने के बाद ही सही... नहीं तो उस त्रिवर्ण पताके से मरी देह को लपेटे शव-सा ही सही... लेकिन जरूर विजय पाकर ही लौट आऊँगा’... कितना धैर्य चाहिए ऐसा कहने के लिए... ? बस मेरे 19 वर्ष की उम्र में देह में गोलियाँ घुसकर छेद करने पर भी विच्छिन्न न होकर कारगिल युद्ध में कारगिल शिखर चढ़कर साथी सैनिकों को राह दिखानेवाले सुबेदार योगेन्द्र सिंह यादव की वीरता को कोई कैसे भुला पाएगा ?

1971 के इंडो-पाक युद्ध में मेजर जनरल इयान कार्डोज़ो (Ian Cardozo) के बारे में बहुत खबरें आती थीं। बम फटकर उसका पैर घायल होने पर अपने-आप अपने उस पैर को काटकर वह पुनः युद्ध में शामिल हुआ... देश विभाजित न हो, इसके लिए हमें कितने ही टुकड़ों में न बिखर जाना पड़ जाए कोई फिक्र नहीं, यह तबके सैनिक कहा करते थे... इनकी स्थिरता कितनी महान है... कारगिल में अमर हुए वीर जवान की माता ने जोश में एक बात कही - ‘मैं हर साल कारगिल यात्रा में निकलती हूँ, वहाँ मुझसी, बच्चों को खोई अनेक माएँ आती हैं। हमारे बच्चे हमें वहाँ गोचर होते हैं।’

तुम्हें मैं एक और घटना की याद दिलाऊँ... ब्रिगेडियर मोहम्मद उस्मान... यह नाम पुकारते ही तुम्हारी आँखों में आनंद का पता चलता है... भारत-पाकिस्तान के विभाजन के समय अपने मातृदेश भारत को छोड़कर नहीं आऊँगा, अपना सारा जीवन देश के लिए अंकित है, यह कहकर, आखिरी साँस तक अविवाहित ही जीवित रहनेवाले महान गुणोंवाले पुण्य पुरुष को कितनी रीतियों में हम याद करें... पुल्वामा के हमले में जाने कितने ही जवानों के हृदय विच्छिन्न हुए हैं... जाने कितने ही परिवारों की आशाओं ने आर्तनाद किये होंगे... कितना दुःख, कितनी वेदना, कितना ही हृदय की छटपटाहट... यह व्यक्तिगत नहीं है... व्यवस्थागत हैं।

शांति के लिए खड़े रक्षक दूतों को राक्षसत्व के साथ धोखे से वार करना कौन सा धर्म सिखाता है? धर्म सम्मति सबके हिताय होना चाहिए, लेकिन मनुष्य को मारनेवाला पागलपन नहीं होना चाहिए!... ऐसे लिखते जाएँ तो यह चिट्ठी कम पड़ेगी... यह समय भी काफी नहीं होगा... तुम्हारा त्याग... देश की जनता के लिए तुम्हारी दिलचस्पी यह देश कभी नहीं भुलाएगा।

खाइयों, कांटेदार झाड़ियों, हिमालय पर्वतों और गुफाओं में तुम्हारी साँसें ही तुम्हें डराते समय हृदय भर में देशभक्ति समेटकर मृत्यु की छाँवों में भी निर्भयता से तुम्हारे दिए जानेवाले पहरे के कारण ही है ना हम इतने इतमिनान से जी रहे हैं... गुलामी जिंदगी कितनी हीन होती है, जानने के बाद स्वतंत्रता से हम हृदय भर जी रहे हैं ना। देश गर्व से सिर उठाकर रहे, इसी की तो सभी इच्छा करते हैं... इस दायित्व को समर्थता से ढोकर देश प्रशांत रहे, ऐसी तुम्हारी वृत्ति-धर्म और प्रवृत्ति गुण को हम कैसे विस्मृत कर सकते हैं? इसके फलस्वरूप ही विद्रोह करके तुम्हें घायल किये हमले को सारी दुनिया धिक्कार कर रही है... इसका कड़ा जवाब देने की चेतावनी दे रही है।

नाम नहीं जानते। गाँव का पता नहीं... जाति-धर्म का भी नहीं पता... सभी की एक ही ब्रांडिंग है - Solderism... सोल्जर कहकर उच्चारण करते समय हाथ से सेल्यूट करने से पहले मन पैरों को साष्टांग वंदन करता है। मेरे सोल्जर सहोदर! तुम्हारी महानता तुम्हारे लिए कितना गौरव भाव बढ़ाती है, तुम्हारे परिवार को याद करते हर समय उससे भी कहीं अधिक मन में आराधना भाव होता है। रिश्तों और संबंधों को छोड़कर तुम एक महान बंधन से बाँधकर यात्रा कर रहे हो। मातृ देश की नित्य सेवा में लगे हुए हो तुम।

माता-पिता के हाथों के आशीश की जगह सिर पर लोह टोपियों के साथ, नन्हें संतान की चुंबन भरे मुखों की जगह काले लकीरों वाले मुखों के साथ, संगिनी के हाथ में हाथ न रखकर तुम्हारी हाथ की उँगली ट्रिगर पर रहती है - इस तरह हृदयों की गहराइयों में कितने अंतरयुद्ध झेलते रहते हो, तुम्हारी यादों के पृष्ठों में कितने दुःख-दर्दों को सहते रहते हो, तुम्हारी सोच की प्रवाह में कितनी चिंता के अश्रु भीतर ही निगल जाते हो ना! मन को शिला में बदलकर, आँख के रेटिना के पीछे अश्रुओं का ढेला जमाके ओंठों की बात और खून के बंधन को, स्नेह-गंध को पैरों तले गुम करके - एक लक्ष्य, एक गंतव्य, एक नारे के साथ चीरते जाते हुए तुम - केवल चिड़ी की आँख

पर दृष्टि रखने वाले आधुनिक अर्जुन ही लगते हो। प्रेम और द्वेष भावों से अधिक देश-भक्ति में आत्मानंद ढूँढ़ते आधुनिक भीष्म ही तो लगते हो तुम।

हे वीर सैनिक- घर पर अभी न देखी छः माह की नन्ही का पिता एक, निरे बुढ़ापे में आँखों में प्राण रखकर निरंतर राह ताकती माँ का सपूत एक, बाँधे मंगल सूत्र को नज़र न लगे इसलिए उसे वक्ष में छिपाये, मस्तक के सिंदूर में उसे हर रोज देखती हुई नींद में बड़बड़ाती पत्नी का पति एक, खून के बंधन को देश के लिए अंकित करके, परिवार का दायित्व निभा रहे भाई-बहनों का भाई एक -इन सबके त्याग का परिणाम ही है हमारा देश। देश की रक्षा के लिए मेरा बेटा गया है कहते हुए चौपाल के साक्ष्य से अहं के साथ फूलकर तुम्हें जन्मा गाँव कितना गौरवान्वित होता है, पता है सोल्जर... !

मेरे नेह ने एक बात कही... निस्संदेह ही देशभक्ति मंद पड़ जाती है... देशद्रोह निर्लजता से बढ़ता है... अंतहीन अनीति सभी जगह व्याप्त होती है... रहस्यमय रोग सभी को वेदित करता है। चाहे कितने ही तरीकों में अनीति और अन्याय झाँककर देख भी लें और देशद्रोही चाहे कितने ही रूप क्यों न बदल लें, कितने ही रास्ते अपना भी लें, तो हमें क्या बदल सकेंगे - किसी समय किसी बड़े ने कहा था, कहते हैं - 'भारत के सिपाही दो, मैं दुनिया को जीतकर दिखाऊँगा' - ऐसा कहना कितनी बड़ी प्रशंसा है ना सोल्जर !

मस्जिदों में घुसकर आतंकियों का अंत किया है... बरसती गोलियों की वर्षा से बच-बचाकर साहस से तुम आगे-आगे बढ़ रहे होते हो और मंदिरों में घुस आये आतंकवादियों का सामना करने के लिए तुम अपनी देहों को कवच में बदलकर दीवार-सा खड़े होते हो, तब भूमि-आकाश के बीच हिम शिखरों में लोमड़ियों की तरह छिपकर तुम्हारे साथियों को पकड़ ले जाकर, मर्मांगों को काटकर तुम्हें कमज़ोर करने की कुतंत्रता से चाल चल रहे होते हैं... संयम के साथ, सही योजना के साथ तुम उल्टा प्रहार करके विजय पाकर, मंदहास के साथ लौट रहे होते हो, तो देश का देह फूल उठती है... जैसे लोगों के लिए समय से पहले ही दीपावली आ गई।

एक बार मैं उत्तर भारत गया... वहाँ रेल्वे स्टेशन में तुम्हारी यूनिफार्म दिखाई दी तो काफी है, उसे देश का पता मानकर प्रणाम करता रहा... वंदन करता गया... ! एक हिलादेनेवाली घटना बताऊँ - अक्षरधाम घटना में तुम

अपना कर्तव्य निभा रहे थे, उस समय एक भरी गर्भवती, तभी जन्मे अपने शिशु को छाती से लगाये अपने पति को ढूँढ़ती हुई मंदिर के परिसर में आई... मृत माने पति को उसने तुम्हारी वजह से जीवित देखा, तो उसने अपने शिशु का तुम्हारा ही नाम रख दिया। तब मुझे महसूस हुआ - जन्म का मतलब यही है।

140 करोड़ जनता का मान, उनके प्राण तुम्हारे ही हाथों में है - यह भावना तुम्हें कितना आनंद देती है, दायित्व साझा करती है, तुम्हें देखकर ही पता चल जाता है। गगन में Air Force... जल में Navy... थल में Army को तीन नेत्रों-सा मानता है यह देश। तो सोल्जर... अपना दायित्व निभाने में लगकर अपने परिवार को देखे तुम्हें कितने ही दिन बीत गये होंगे। बंकरो में बैठे-बैठे नींद आने के संदर्भ में, झट से जागकर, मेरी बेटी की रुलाई सुनाई पड़ी कहते हुए चहुँओर देखते हो, तो गाढ़ा अंधकार ही दिखाई देता है ना... बतियाने के लिए साथी सोल्जर भी दिखाई न पड़ने की स्थिति... मुलायम माटी के दिखने पर माँ का शव-सा मानकर, माथे से लगाकर आनंदित होते तुम्हें... लाठी टिकाकर चलते कोई बूढ़ा दिखाई दे, तो दादाजी मानकर पैर छूकर, कंधा देकर सहायता करते तुम्हें... किसी पुष्प की गंध आ जाए आँखभर पानी के साथ पत्नी को याद करते हो... आँख का पानी वक्ष तक न पहुँचे इसलिए झंडे की ओर मुड़कर सेल्यूट करते तुम्हारे संस्कार देखते हैं, तो पता हम कितना गर्वित होते हैं... ?

पुल्वामा के अमर सिपाही! तुम हमारे हीरो हो... तुम वीर... धीर हो। तुम्हीं हमारा धैर्य हो और हममें स्थिरता भी तुम्हीं से है। हमारी ताकत तुम्हीं हो, हमारा सुभविष्य तुम्हीं से है। भिन्नता में एकता देखनेवाली जनता तुम से कहती है... शांति की स्थापना करते युद्ध में तुम्हारी मृत्यु आखिरी वाक्य नहीं है... तुम्हारा त्याग आखिरी चरण नहीं है। इसी तरह मातृभूमि की रक्षा में तुम्हारी वीरता-विजय ही संकेत हैं। तुम्हारी धीरता ही आत्मविश्वास का पताका है। तुम्हारी जिद और वचनबद्धता हमारे लिए नित्य चेतना है... तुम्हारी निस्वार्थता एवं सच्चाई हमारी निरंतर दीप्ति हैं।

आप सोचते होंगे कि इतना बड़ा प्रेम पत्र, इतना सुनहरा पत्र जिसने लिखा - कौन होगा ? है ना! हम हैं 1500 लेखिकाएँ... कोई कविताएँ लिखती हैं, तो कोई कहानियाँ... मगर हम सब एक ही परिवार की महिलाएँ हैं। -

‘अक्षरयान तेलुगु विमेन राइटर्स फाउंडेशन’; (Aksharayan - Telugu Women Writers Foundation) की। हमारी एक सोच है कि साहित्य ही एक मशाल है जिसके जरिए सामाजिक चेतना ला सकते हैं। आप बंदूक से युद्ध करते हैं, तो हम कलम से। चाहे गन हो या पेन, समाज की रक्षा के लिए ही है। आप देश की रक्षा में मग्न रहते हैं। और हम पूरे समाज के हित के लिए खड़ी होती है। आपसे यह कहना जरूरी है कि हमारे समूह में आयु में हम सब 50 बरस से ऊपर, लगभग 90 वर्ष की महिलाएँ भी हैं... यानी हम आपकी माँ, नानी, दादी और परदादी भी हैं!

स्त्रियों के खिलाफ अत्याचार के बारे में, स्वतंत्रता के 75 वर्ष के अवसर पर, तेलंगाना के बतुकम्मा त्योहार पर, विभिन्न फसलों और बीजों पर, उपभोक्ता अधिकार पर, एड्स (AIDS) के बारे में तथा कई अनेक विषयों पर हमारे द्वारा विद्वत्तापूर्ण लिखी गई। प्रेरणादायक एवं जोशीली कहानियाँ, कविताएँ ही नहीं, आलेख भी प्रकाशित किए हैं। हमारे लेखन का लक्ष्य सामाजिक स्वस्थता है। हमारी किताबें इसके लिए दवा हैं। हमारे पत्र बुराई को खत्म करने के हथियार हैं।

हम साधारणतः कवि सम्मेलन, विशेषज्ञों के साथ चर्चा और साहित्यिक कार्यक्रमों का आयोजन करती हैं। हर साल, हम उन महिला लेखकों को, जिन्होंने कम-से-कम अपनी दो किताबें प्रकाशित करवाई हैं और जो 70 या उससे अधिक उम्र की हैं, उन्हें ‘मातृवंदना’ की उपाधि से सम्मानित करती हैं। अगर वे इस सम्मान के लिए हैदराबाद नहीं आ सकतीं, तो भी हमारी स्थानीय अक्षरयान की टीम उन लेखिकाओं के घर जाकर, उन्हें श्रद्धापूर्वक सम्मानित करते हैं। हम उन्हें ‘वंश परंपरा पुरस्कार’ से भी सम्मानित करते हैं। इसी तरह हम उन महिला लेखिकाओं को, जिन्होंने तेलुगु में अच्छा साहित्य लिखा है, उन्हें तेलुगु के सुप्रसिद्ध लेखिकाओं के नाम से ‘अक्षरयान पुरस्कार’ देकर सम्मानित करते हैं। इन लेखिकाओं को 5,116.00 रुपये की राशि, एक यादगार मेमेंटो और सुन्दर साड़ी देकर सम्मानित करते हैं।

हम पैसों की तंगी से जूझ रहे कुछ लोगों की पढ़ाई में और कुछ अन्य जरूरतों के लिए मदद कर रहे हैं। हम कई लोगों को जरूरी काउंसलिंग देते हैं। हम माताएँ हैं।... हमारे लिए सबकी भलाई जरूरी है। भले ही आपने हमारे कोख से जन्म न लिया हो, आपका हमारा वही रिश्ता बनता है। हमें

ममता का पता है। हम आँसुओं की कीमत जानती हैं। हम भी लोगों की हर तरह से मदद करती रहेंगी, ठीक वैसे ही जैसे आप देश की सेवा कर रहे हैं!

इसीलिए हमने आपको यह Love Letter (प्रेम पत्र) लिखा है। इसमें आप सभी को हम सभी माँओं का आशीर्वाद है - स्नेह और बहुत ही प्यार के साथ। इसके अलावा हम आपको एक ऐसा तोहफा भेज रही हैं, जो अब तक देश में किसी ने भी इतनी ईमानदारी से न दिया हो। वह है - परमवीर चक्र से सम्मानित वीरों पर प्रकाशित हमारा कविता-संग्रह। आप वे महान हस्तियाँ हैं, जिन्होंने देश को अपनाया। एक बार फिर, हमारे वीरों के बलिदान और उन वीरों को जन्म देनेवाले माता-पिता और उनके महान विचारों को याद करते हुए... ये वे कविताएँ हैं, जिनमें उन सभी वीरों की शान को अक्षर-रूप दिया है। आनंद लें।

चार साल पहले अक्षरयान की तरफ से तेलुगु में पब्लिश हुए कविता-संग्रह 'सलाम सैनिका' को देखकर मेजर जनरल श्रीनिवास जी ने हमें सुझाव दिया कि यह संग्रह हिन्दी और अंग्रेज़ी में भी पब्लिश हो, ताकि देश का हर सैनिक और विद्यार्थी पढ़ सके। हम भी उत्साहित थी। हममें इस सोच की नींव रखनेवाले मेजर जनरल श्रीनिवास जी को धन्यवाद ज्ञापित करती हैं और सिकंदराबाद के बोलारम स्थित राष्ट्रपति निलयम की आफिसर-इन-चार्ज डॉ. रजनी प्रिया, जिन्होंने इस अच्छे काम पर फोकस करवाया, उन्हें भी धन्यवाद ज्ञापित करते हैं। पूरी अक्षरयान टीम की ओर से मैं, अपने देश के सैनिकों को यह भेंट स्वीकार करने का अनुरोध करती हूँ।

इसीलिए हमारे देश की प्रजा की आँखों में तुम बसे रहते हो... देश के हृदय में तुम बसते हो... हमारी पहली सुबह की प्रार्थना में तुम रहते हो। अमर आत्माओं की शांति और सिपाहियों के परिवारों को धन्यवाद ज्ञापित करते हुए... Dear सोल्जर्स Long live your spirit.

- अइनपूडि श्रीलक्ष्मी, सुधा शेखर, डॉ. दुम्पा श्रीदेवी

अक्षरयान तेलुगु विमेन राइटर्स फाउंडेशन

हैदराबाद, तेलंगाना

99899 28562

हिन्दी अनुवाद: देवा प्रसाद मयला

हैदराबाद, 9849468604



1. शौर्य तेज! (मेजर सोमनाथ शर्मा)



भूमाता कितनी हर्षोल्लासित हो रही है
उसकी रुधिर गंध को लगा कर
जननी के ओंठों पर नृत्यरत उसकी अंतिम मुस्कान
माँ के पलकों की तिजोरी में रखा
उस समय आँखों की रेटीना में प्रतिबिम्बित विजय धैर्य-स्थैर्य

नस-नस में कण-कण में परम्परागत वीरता
प्राण-त्याग ही सरनेम से प्रसिद्ध धीरोदात्त
माँ के आँचल को पकडकर घूमनेवाला पुत्र
चूड़ियाँ पहने हाथ को थामकर युगलगीत गाते हुए
जीवन जीने का था नवयुवक
जान-जवान था वह नवयुवक
भारत माता का वह था कोहनूर हीरा
स्वयं घेरा बनकर श्रीनगर की रक्षा करनेवाला वीरजवान
चौथा बेटालियन रेजिमेंट मेजर सोमनाथ शर्मा ।

उस समय के पंजाब प्राविन्स में जन्म हुआ
दूसरे विश्वयुद्ध में वीर-धीर बनकर युद्ध किया
भारत माता की दास्य शृखलायें टूट गईं
सारा देश विजयोत्सव मना रहा
अखंड भारत बनाने का प्रयत्न
कश्मीर के राजा ने
इंडियन यूनियन में मिला दिया
लश्कर तीव्रवादियों का शडयंत्र है कश्मीर का आक्रमण



आपरेशन गुलमार्ग में षडयंत्र पर शडयंत्र रचते
युद्ध व्यूह को नाकामयाब करने केलिये जिम्मेदारी ली सोमनाथ ने
हाकी के खेल में टूटेहाथ को पट्टीबाँधकर
शत्रु सहस्त्र होने पर भी
केवल उनसठ सैनिकों के साथ
आत्म स्थैर्य-धैर्य शब्दों के औषधों में साँस भरकर
लडा यद्धरत अभिमन्य

303 रैफिल्स, मिशन गनों से फैरिंग
इतने बड़े युद्ध में बडगाम गाँव के
बड़े-बूढ़े, बच्चे-कच्चे के रक्षण के लिए उस ओर से
शत्रुओं का सामना करने केलिये आज्ञा देनेवाला सोमनाथ।

ठीक समय पर रीफिल्स टीम न आने पर भी
होशियारी से युद्ध करनेवाला समर चक्रवर्ती
एक हाथ से गन पकड़कर दूसरे हाथ से
बचा-कुचा बारूद को सैनिकों तक पहुँचाकर
50, गज की दूरीपर रहनेवाले शत्रुओं के समाचार जानकर
कुछ ही देर में विजय प्राप्त होगी ही, जाननेवाला सव्यसाची

विजयी बनेंगे ही, अटल विश्वास
बिन-थकान युद्ध करके देशमाता की रक्षा करेंगे ही
सेना टेरपोरट पहुँचने तक
रक्षक बनेंगे, वादा करने वाला युद्धवीर।

चर-चर रेंगने वाला साँप की तरह
घेरने वाली शत्रु-सेना
अंतिम क्षण में आरिवरी बुलेट दागनेवाला
छः घंटे तक घमासान युद्ध करनेवाला वीर-धीर
शत्रु चदाव करते समय



ग्रेनेड के पास की बारूद का विस्फोटन
घायल होकर, अग्निकण बनकर
आखिरी बुलेट को दागते हुए हवा में उड़नेवाला
भारतीय तेज

पीछे मुड़ने वाली पाक की सेना
धरा पर गिरते हुए आकाश को चीरकर जानेवाले
भारत के हवाई जहाजों को देखकर
जय हो भारत माता! कहते हुए माँ की गोद में
थकान दूर करनेवाला लाल चाँद, तुम्हें जोहार।

थोड़े समय के बाद मिला पार्थिव शरीर में
भगवद् गीता के भक्ति भाव दिखाई देनेवाला पुण्य जीव हो।

शौर्य, त्याग, वीरत्व, साहस, देशभक्ति से ओत-प्रोत
मेजर सोमनाथ शर्मा को पहलीबार अलंकृत परमवीरचक्र
धरती-आकाश रहे तक स्फूर्तिदाता बनकर...
हमारी आँखों की निश्चित निद्रा बनकर
चिरंजीव बनकर जियो-जियो शौर्य तेज!
स्वीकार करो हमारे अभिनंदन की अमर-माला!

तेलुगु : सी.एच. हरिप्रिया
निजामाबाद
9603099334



हिन्दी अनुवाद : डॉ. टी.सी. वसन्ता
हैदराबाद
9951484545 - 9848624542





2. अजात शत्रु (नायक जदुनाथ सिंह)



इस ओर दो ही सैनिक... उस ओर सैकड़ों सैनिक
आखिरी सांस तक अंतिम युद्ध करके...
शत्रुओं के हृदयों में डर पैदा करके...
सैनिकों में आत्म विश्वास बढ़ाने वाला साहसी

जान गँवाने पर भी फ्रंट लाइन पोस्ट न छोड़कर...
इज्जत का सवाल कहते हुए गर्जन करनेवाला फस्ट बेटालियन
रेजिमेंट नायक... राजपुत्र क्षत्रिय।

बातों से, कार्यों से सैनिकों में आत्म विश्वास भरनेवाला
चेतना लाकर असाध्य को सुसाध्य बनाकर
जादू (इंद्रजाल) करनेवाला जदुनाथ सिंह राठोड़
शत्रु संहारक... वीरोचित लड़ाई... आध्यंत - रोमांचित

शाखाहारी होने पर भी... सवाल करके कुस्ती में
विजेता बननेवाला उस्ताद।
उपहार में डबुलकोटा रोटी प्राप्त करनेवाला विजेता।

1947 में प्रथम कश्मीर युद्ध में
नौशेरा शहर, बाद में जम्मू को
स्वाधीन करने के लिये पाक व्यूह को....
बिना किसी जान गँवाये उन्हें भगाने वाला धीर-वीर
पाक शेल्लिंग चढ़ाओं को पराजित करके
भयंकर युद्ध करनेवाला धीरोदात्त।





दूसरी बार फैरिंग हुआ, टूट पड़े शत्रुओं के लक्ष्य को धराशायी करके
तीन पोस्टों में घायल बाघ की तरह घूम-घूम कर
साथी दार सैनिकों में आत्मविश्वास भर कर
धैर्य दिखाने वाला धीरोदात्त धीर-वीर

चोरी-छुपी वार करनेवाले सैनिकों को
मुष्टिघातों से माटी खिलाकर
तलवार से काटने वाला साहसी

नौ सैनिकों में अंतिम समय तक दो ही जवान बचे
वीरगति वरदान समझ कर...
मृत्यु का आह्वान करनेवाला आदर्श सैनिक।
आत्मबल से... आत्मविश्वास से
शत्रुओं का सामना करनेवाला अजातशत्रु

अति समीप से फायरिंग हुआ, गोलियाँ धाती को चीर गईं
अंतिम श्वास तक शत्रु से लड़ - भिड़ कर उन्हें धराशायी कर
भारत वीरों के पराक्रम को सब जानें,
शत्रुओं के मृतदेहों पर विजयगर्व से चलते हुए
मातृभूमि की गोद में चलेजानेवाला वीर जदुनाथ सिंह राथोड

रणरंग का सैनिक।
मातृदेश के रक्षणार्थ मृत्यु से युद्ध करनेवाला धीर-वीर
प्राणों को दाँव पर लगानेवाला धीरोदात्त

शत्रुओं की गोलियों के सामने सीना तानकर, हमारे दिलों की
धडकनों की रक्षा की
हमारी सुख निद्रा केलिये, बिना नींद कितनी रातों जागकर
कितनी - कितनी बार अनशन (निराहार दीक्षा) किया
अम्मा का अभिमान... पिता की आत्मीयता... अर्धांगिनी का
प्रेमानुराग...





सब के परे तुम्हारा सौ साल का जीवन
तृण समान माननेवाला तुम्हारा हृदय...
तुम से जीते गये पर्वत शिखरों से महान है...
अतुल्य तुम्हारा त्याग...
कितने भी करोड देने दो यह ऋणा चुकता है.... ?

धन्य हुआ तुम्हारा जीवन
हमेशा केलिये जीने वाले कौओं की हस दुनियां में...
प्रजा के मन की गलियों में विहार करनेवाला राजहंस हो।

बरफीले पहाड़ ही मोगरे फूलों की तकिया है सोचकर
इस पर लेटनेवाले परमशिव हो।
शत्रुओं पर विलय तांडव करनेवाला प्रलय रुद्र हो
सामने आये कष्ट नष्टों को पारकर
खतरों का सामुना करते हुये लोक कल्याण केलिये गरलकंठ बना तुम

जोहार जोहार वीर जवान
तुम्हारे जैसे वीरों का त्याग ही देश की रक्षा है
सैनिकों के साहस ही प्रजा के लिये अभयहस्त है
तुम्हारे परमवीरत्व ही शत्रुओं को नाश करनेवाला
सुदर्शन चक्र है।

तेलुगु : चन्द्रकला दीकोंडा
मेडचल
+91 9381361384



हिन्दी अनुवाद : डॉ. टी.सी. वसंता
हैदराबाद
99514 84545 - 9848624542





3. युद्ध - शांति (सेकेंड लेफ्टिनेट राम रघोभा राणे)



असहाय आंदोलन, दूसरा विश्व युद्ध ने
नव यौवन में तुम्हें प्रभावित कर
देशके लिए पलक बनकर रक्षा करने का बीज बोकर
चंडिया, कारवार ही नहीं
इंडिया गर्व करने वाला वीर बनाया
हमारा वंदन, मेजर राम रघोभा राणे।

जिम्मेदारी, हौदा कुछ भी हो, कर्तव्य निभाना ही तुम्हारा लक्ष्य
युद्ध केलिये तैयार शत्रुसेना को भगाना तुम्हारी मंजिल
रण तंत्र में आनेवाले हादसों से न डरने वाला तुम्हारे गुण ने
कश्मीर युद्ध में तुम्हें मुख्य बनाया,
शत्रु के हाथों में गये जुंगार के पलक बनकर दिया समाधान
नौशाहरा से राजौरि तक भारत दिलों के पुरोगमन में
तुम्हारे अद्भुत कार्य को न भूलेंगे रघोभा राणे।

तभी आजाद हुये दो देशों के बीच
संघर्ष, शत्रुता की भावना
अशांति हिंसात्मक हादसे, धर्म युद्ध
घुस पैठियों की गद्दारी, युद्ध परिणाम
भौगोलिक राजनीति प्रभावित करतेहुए
सारे लोग निश्चिंत घरों में सोते समय
आंधी तूफानों में कर्तव्य निभाने
काश्मीर राज्य सरहदों पर सूर्योदय बना
घनीभूत बरफीले पहाड़ों पर तैनाद किये गये पाक सैनिकों के
मोरटार आँखें, मुँह खोलकर तडपने वाले



फैरिंग... बुलेटों के ओलों को बरसानेवाले
कदम - कदम पर लांड मइन्सू, रोड ब्लाक्स
खतरों के बीच तुम्हारे सैनिकों का सफर
शत्रु दो प्राणों को निगलने पर भी
तुम्हारे साथ और पाँच घायल हो गये, रक्त-सिक्त हो गये
देश की शान को आंच न आने केलिये, उसी ध्योय केलिये

हीरे सा सख्त बनकर, छूढ़ता से धैर्यवान बनकर
भारत युद्ध टैकरो केलिये नया मार्ग बनाकर
शत्रु सेना को श्मशान की अस्तियों में बदलकर
मंजिल की ओर चला दूसरे लेफ्टिनेंट बनकर।

साहस से लिया गया निर्णय
व्यूहात्मक नायकत्व, रण चतुरता
कितनी भी भयंकर विपदा आने दो न डरा, न खोया आत्म बल को
प्रतिघात करने का स्वभाव कर्तव्य पथ पर चलने का धैर्य
चटक चाँदनी से भर दी,
नौषेरा - राजौरी के रास्ते के हृदय-कमरे में
चिंगास, राजौरी प्रजा के दिलों में
वीर पुत्र बनकर इतिहास में चिरंजीव हो गया मेजर राणे।

खतरनाक काम पूरा करने में
जातीय भद्रता तुम्हारा दृढ़ संकल्प है, जातीय ऐक्यता तुम्हारा लक्ष्य है
हिमालयों से उन्नत बनकर
तुम्हारे जीवन को मशाल बनाकर
दीर्घ युद्ध काल शौर्य पतक, अत्युन्नत धैर्य चक्र
परम वीर चक्र तुम्हारे हृदय का अलंकार बना
आन-बान शान से, रहे जब ही स्वीकार करनेका
सौभाग्य किसे मिलता है, बोलो राणे।



अद्वितीय शौर्य का प्रतीक बनकर
INS चापेल वार शिप म्यूजियम में स्थान पाकर
प्रेरणा देने वाला तुम शिला हो ही नहीं सकता
तुम अपने आपको तराशा गया शिल्प हो
तारों में चाँद बनकर चमका तुम
तुम्हारे नाम पर क़रूड आइल का टैंकर
MT लेफ्टिनेंट राम रघोबा राणे PVC बनकर
अठावीस वर्षों की सर्वोस में
पांचबार तुम्हाराप्रस्ताव
देश की आन-बान-शान हो, महान हो रघोभा।

गर्व से ऊँचा उठने वाला तुम्हारे चेहरे पर
आँसू के दाग क्यों ? परम वीर चक्र राणा।

क्या ? क्या बोलूँ ?
वार ईज़ये राकेट
हाँ आपने जो सुना सच है...
मानव के रक्त-मांस को खाने वाला शत्रु
रणक्षेत्र में रहे जब तक
देश केलिये ही मेरा जीवन समझा
राणे और सैनिक हमेशा तैयार थे
परन्तु...
युद्ध रिमोट शत्रुओं के हाथों मैं है.....
युद्ध पूँजीपतियों के स्वार्थ केलिए है...
पूँजीपतियों के पक्ष में जीवन भर लड़ा - भिडा
यह समझने के बाद ऐसा लगा फिरंगी गोली चली दिल पर
टीस... दुःख....दरद...
जाति-धर्म, प्रांत, राजनैतिक
द्वेषों का अग्नि कण फेंक कर
युद्धाग्नि को भभगाकर



युद्ध से लाभ उठा कर
युद्ध के नशे में झूमते हुए
युद्ध काल के श्मशानों में
शवों की बदबू से आनंदित होकर,
जले हुए जीवनों को भट्टी के चने की तरह,
चुनकर खाने वाले मरचंट्स आफ डेथ करालनृत्य...
पलकों का त्याग आँसू बहाये बिना कैसे रह सकता

कब तक ? कब तक ऐसा ?
दुनिया में युद्ध कब समाप्त होजायेंगे
शांति-कुसम कब खिलेंगे ?

तेलुगु :
वी. शांति प्रबोधा
वर्नि
91 98667 03223



हिन्दी अनुवाद :
डॉ. टी.सी. वसंता
9951484545, 9848624542





4. भारतीय धीरोदात्त धीर वीर

(कंपनी हवलदार मेजर पीरुसिंह शेखावत) ◆▶



हवलदार पीरुसिंह भारतजाति कभी न भूलनेवाला युद्ध
कश्मीर युद्ध में शत्रुओं से युद्ध करके अमर बन गया है
धीर-वीर की युद्ध कला केलिये “परमवीरचक्र” सत्कार प्राप्त करनेवाला
छोटी उमर में ही अतुल्य प्रतिभा को दिखानेवाला
हिमालय शिखर पर भारतीय कीर्तिपताका को पहरानेवाला विजय वीर

आजादी के पहले भाई-भाई कहनेवाले
स्वार्थी होकर.. शत्रुबनकर ... भूभाग आक्रमण केलिए...
कपटी बनकर... आम आदमी से मिल-जुल कर
कार्यों पर ध्यान रखते हुये.... समाचार प्राप्त करते हुए
हमारे सैनिकों को धराशयी करने वाले शत्रु विद्रोही।
धुप्प अंधकार में छोटा सा दिया बनकर प्रकाश देनेवाला पिरुसिंह।

ऊँची टिथ्वाल पर्वत श्रेणी में
जन्मा, बरफ में पेड़ों की आड में धुपकर
पाक के राक्षसीय कृत्यों को नष्ट-भ्रष्ट करने...
मुश्कर शिविरों पर चढ़ाई करनेवाला महावीर।

साथीदार सैनिक पाक सेना के हाथों से मृत्यु प्राप्त करने पर भी
धैर्य-स्थैर्य न खोकर अकेला युद्धरत साहस वीर था वह
बहुत पास में ग्रेनैड उस पर फेंकने पर भी वह
माथे पर गोलियाँ चलने पर भी वह
छाती चीरने वाली गोलियाँ चलने पर भी वह
न थका, न डरा, न पीछे मुड़ा, धैर्य-स्थैर्य सहास वीर वह।
देह से रक्त बहनेपर भी... शरीर धराशयी होने पर भी
अंतिम साँस से... धैर्य-साहस से...



ग्रेनैड से पाक पोस्ट पर चढ़ाई करनेवाला बाहुबलवीर
शत्रु शिबिरों को समूलनष्ट करनेवाला शत्रु संहारी।
तिथवाल की रक्षा करके भारत को सौंपने वाला सिंह वह।

राजपुत्र वंश में जन्मा, लाडला लडका बना
शिक्षा से भी क्रीड़ाओं के प्रति आकिर्षित हुआ
आखेट में और-और आसक्ति दिखातेहुए
देश शत्रुओं का शिकार करना है, उसी दिन दृढ़ निर्णय लिया
सेना में भरती होकर, उन्नतशिखर पर पहुँचनेवाला जवान सैनिक।

बचपन से देशभक्ति को नस-नस में भरकर
उम्र के कारण दोबार रिजकट होने पर भी
फिर एक बार लायक होने के बाद, सैनिक बना अठारह वर्ष का युद्धवीर
नायक बना... हवलदार बना...
राजपुताना धट्वाँ बटालियन में आद्य बना।

निस्वार्थ से देश सेवा में निमग्न, न्योछावर, देशका नागरिक
वीरोचित युद्धकला कौशल, धैर्य-साहस केलिये
'उन्नत धैर्य चक्र', वही है 'परमवीर चक्र'
प्राप्त करने वाला, बलिचढ़नेवाला मेजर पीरूसिंह।
अगर ऐसे वीर-धीर धीरोदात्त सैनिक न रहे तो हमारा अस्तित्व कहाँ

सारा जग जब गहरी नींद में होता है उस समय...
जमी बरफ के पर्वतों पर देश रक्षा केलिये पहारा देते रहा..
जवान का जीवनमाने वीरगति है, मालूम होने पर भी...
शत्रुओं से देश को रक्षा करने की देश भक्ति से...
अंतिम सांस तक युद्धरत अमर वीरजवान...
कंपनी हवलदार मेजर पीरूसिंह शेखावत् जोहार...जोहार
जय हो... जय हो.... शेखावत्।

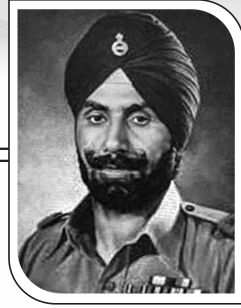
हिन्दी अनुवाद :
डॉ. टी.सी. वसंता
हैदराबाद
9951484545
9848624542



तेलुगु :
मणिनाथ कोपल्ले
हैदराबाद
9703044410



5. युद्ध क्षेत्र में शौर्य सिंह (लान्स नायक करम सिंह)



पंजाब के बरनाला जिले सेहना गाँव में
उदित उज्ज्वल किरण करम सिंह।
देश को अन्नपूर्णा बनाने वाला किसान कुटुम्ब में
देश रक्षा ही ध्येय है सोचकर जीनेवाला जवान
सिख रेजिमेंट पहले बेटालियन में प्रवेशकर
अडमिन बाक्स युद्ध में अपनी अप्रतिम प्रितभा के लिए
उन्नत सैनिक पतक को प्राप्त करनेवाला

धीरोदात्त वीर लान्स नायक करम सिंह
स्वतंत्र मिलने के बाद हमारे अत्म चिह्न बना
हमारे भारत जातीय पहराने का अद्भुत अवसर प्राप्त
पाँच सैनिकों में चुना गया
भारत माता का लाडला लडका करम सिंह।

प्रथम काश्मीर युद्ध में भारत रक्षण दल
पाक सेना से घमासान युद्ध करके
मुख्य धुरी ठिथवाल को जीतने के लक्ष्य से
पाक शत्रु से किया गया आकस्मिक समर का
नायक बनकर भारत की शक्ति को दिखानेवाला
अतुलनीय व्यूह शिल्पी सुबेदार करम सिंह।



रिचमार गली के फारवार्ड पोस्ट के पास
हुई चढ़ाई का सामना करनेकेलिये तैयार होने पर भी
शत्रुओं से युद्ध करनेकेलिये, भरपूर सेना नहीं
फैरिंग कर सके उतनी गोलियाँ नहीं
फेलुयर वैरलेस सेट के कारण
संदेश न भेजसकने की मजबूरी
मारना ? या मरना ? क्लिस्ट स्थिति में
दल पर दल टूट पडनेवाली पाकसेना की शक्ति के सामने
न डरनेवाला - न भयभीत होनेवाला धीरोदात्त धीर वीर
पाक से फेंका गया पिन न निकाला गया ग्रेनेड को पहचानकर
पिन निकालकर शत्रुओं पर फेंककर, उन्हें तितर-बितर कर
साथी सैनिकों में आत्म स्थैर्य भरकर
आत्म विश्वास का आलंबन बनकर लडा-भिडा
अमर युद्धवीर करम सिंह

शक्तिशाली पाक मोटार शेल्लिंग के साथ कीगई फैरिंग
रक्त-सिक्त होने पर भी बिलकुल न ध्यान देते हुए
एक बंकर से दूसरे बंकर तक होशियारी से बदल-बदल कर
मौके केलिये इंतजार करनेवाला मुश्करो को मशीन गन से धराशयी कर
बिजली की रफ्तार से बंकरों में घुसकर
एक होने पर भी बलवान सेना की तरह टूट पडा।

शत्रु को भगानेवाला शौर्य सिंह
उसके धैर्य-साहस अतुलनीय
आठबार शत्रुओं से की गई चढ़ाई में
रक्त-सिक्त होकर कुछ घायल हुए
फैरिंग में दस सिखों को वीरगति प्राप्त हुई
गोलियों से डर कर न पीछे मुडनेवाला



रक्त-सिक्त होने पर भी आगे-आगे चलनेवाला
भग - भग कर उठनेवाली अनिल बनकर, ज्वलित होकर
शत्रुओं के हृदयों में भय पैदाकर
सैनिक समयस्फूर्ति को दिखा कर
कभी न सर-झुकाने वाला केप्टेन करम सिंह
परमवीर बनकर साहस से युद्ध करके
इतिहास में चरितार्थ होनेवाला
महान देश भक्त करम सिंह।

‘यह एक अद्भुत युद्ध है’ कह कर प्रशंसा पाने के समय में
प्रथम राष्ट्रपति राजेन्द्रप्रसाद जी के करकमलों से
अनमोल पुरस्कार “परमवीर चक्र” पानेवाला
“प्रथम सजीव सैनिक” लान्स नायक करम सिंह
पल-पल जीते हुये पल-पल मरते हुये यात्रारत
धैर्य-स्थैर्य का निदर्शन बनकर
भरत माता रक्षक कवच बनकर जीनेवाला धीर-वीर !
तुम्हें सहस्र अक्षर अभिनंदन वंदन !

तेलुगु : पुलि जमुना

महबूबनगर

8500169682



हिन्दी अनुवाद : डॉ. टी.सी. वसन्ता

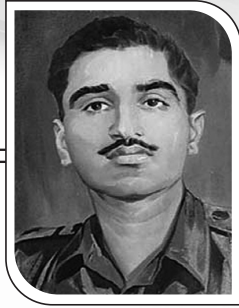
हैदराबाद

9951484545, 9848624542





6. शांति का कबूतर (केप्टेन गुरबचन सिंह सलारिया)



जंगल को चीरती तलवार जैसी,
बर्फीले पहाड़ लांघने वैसी,
भारत के गौरव को और बढ़ाने,
चला सिपाही साँस न थकाने।

पंचनद के पावन तट पर,
जांवाल की धरती गर्व से भर,
उनतीस नवंबर की सुबह में,
जन्मा शेर मुंशीराम के घर में।

गरीबी की छाया में हौसला चमका,
माँ के गहने ND को बेचा,
मुक्कों से कर्ज़ को चुकाया,
बैंगलोर RMS में बीज बोया।

देहरादून IMA में पला,
यश का वृक्ष बनकर खिला,
गोरखा टोपी का था गहना,
इतिहास में लिखा उसका चर्चा।

जून 61 कांगो की धरती,
हू के झंडे की थी संगति,
एलिजाबेथविले के रास्ते पर,
शांति बचाने के जज्बे पर।



सोलह दीप थे हिम्मत वाले,
सामने नब्बे अंधे काले,
मौत को देखकर भी हँसा,
शेर सी नज़र से डटा।

टैंक पर बना आग का गोला,
ग्रेनेड बरसे जैसे बोला,
चालीस दुश्मनों में नाम किया,
गर्दन पर घाव का तिलक सजा।

आखिरी साँस तक न झुका,
शांति को खून से पुकारा,
पाँच दिसंबर को उड़ गया,
छब्बीस बसंत में सिमट गया।

परम वीर चक्र की छठी चमक है,
धनदेवी अम्मा के हाथ रकम है,
तन भले कांगो में सोया,
पर भारत में ज्वाला होया।

देह को अलविदा, देश को सलाम,
यही सलारिया का पैगाम,
खून की हर एक बूंद से,
गूँजे शांति की धुन से।

जय गुरबचन ! सलाम सलारिया !

तेलुगू मूल, हिन्दी अनुवाद:
घालि ललिता प्रवल्लिका
महबूबनगर, 9603274351





7. वीर शौर्य धीर वीर (मेजर धन सिंह थापा)



सौभाग्यशाली माँ के गर्भ से जन्मा
अप्रैल 10-1928 में आँखों का तारा
प्रभात सूर्य वीर शौर्य धीर वीर धनसिंह थापा
1949 में असमान प्रतिभाशाली क्रांतोदय जयहिन्द गीतोंका
कठिन तरफ़ीद पाया, वह प्रणवनाद
लेफ्टिनेंट कलनल बना गूरखा रैफिल यूनिट का
धरती माँ का लाडला।

भारत भूमि की कारकोरम्पास को
चीन हडपते समय रक्षा न कर सके
धारादत्त किया, हमारे पड़ोस की कायरता ने
भारत, लडाख खतरे में पड़ गये
भारत प्रथम प्रधान मंत्री ने शांतिसे
हिन्दी-चीनी भाई-भाई नाम से पंचशील समझौता किया
पर सब कुछ चीन ने पाँवों से मसलते हुए
हस्तीन का साँप बनकर पीछे से धुरी मारी।

1962 अक्टूबर 21, त्रीजाप युद्धभूमि में
फिरंगियों की भयंकर आवाज से वातावरण गूँज उठा
भयंकर वातावरण, फारवरड पालसी व्यूह अमल हुआ, उस समय
पोस्ट कमांडर मेजर थापा ने साहस से
टेंट भी न डाल सकने की मजबूरी में भी
साधन उपलब्ध न होने के कारण
पत्थर के टुकड़े साधन बने, डाले गये टेंट
छाया बने, प्यांकरों का इंतजाम सफलबना
अग्नहोत्र से हाथ मिलाकर शत्रुसंहार के लिये आह्वान किया।



जीत युद्धनाद बना, धनसिंह थापा का शौर्यश्वास - स्पर्श लगकर
एक-एक सैनिक का शौर्य लोहे जैसा अटल संकल्प बना
उत्साह-उमंग से भरा थापा की प्रेरणा ने जातीय गीत बनकर
एक-एक सैनिक के हाथ से दस-दस शत्रुओं का अंत करवाया

घायल चीन ने अधिक संख्या में सैनिकों को - तैनाद किया।
भारतीय सैनिक स्थावरों के रहस्यों के रक्षणार्थ
भयंकर लड़ाई में घायल थापा समूह को बंदी बनाया
रक्त-सिक्त घायल थापा को कितनी - कितनी क्रूर यातना दी गयीं
फिर भी थापा टस से मस न हुआ, मुँह खोला ही नहीं
शत्रु चीनी सैनिकों का खेल थापा ने चलने नहीं दिया।

मातृभूमि की रक्षा के लिए दूसरी बार घायल होने पर भी
जिद न धोड़ने वाला प्रचंड वीर धीरोदात्त थापा।
निशाना पर लगे गन् के लिये थापा का धैर्य ही फिरंगी बना
भारत सेना ने सोचा उसे वीरगति प्राप्त हुई
युद्ध कैदी बनकर भी संदेशा भेजा मैं आऊँगा जरूर-जरूर मेरी मृत्यु
नहीं हुई - आऊँगा...आऊँगा....
इस शौर्य तेज के बारे में क्या कहें भारत का आन बान शान।

चीन का पिशाचत्व का सामना किया धीर वीर धनी
साथीदार के हृदयों में श्वास गीत की प्रेरणा बना मेजर थापा
भारत भूमि को वापस आया।

6 सितंबर 2005 में पुने के आकाश का तारा बना
न धेरा, न सरहद के आकाश मार्ग में त्रिवर्ण पताका के फर-फर में
परम वीर चक्र बनकर चमक कर चिरायु बनकर
भारत के इतिहास में अमर हो गया मेजर धन सिंह थापा।

हिन्दी अनुवाद :
डॉ. टी.सी. वसंता
9951484545
9848624542

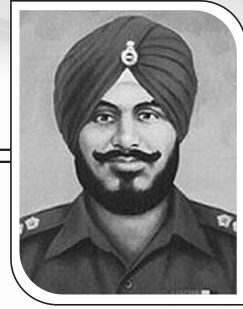


तेलुगु :
रमादेवी बालबोइना
7893261262





8. जय हिन्द जोगींदर सिंह (सुबेदार जोगींदर सिंह)



सिंह शिकार करने दो या गर्जन करने दो
जंगल चौंक जाता है
सिंह विजयी हो या पराजित
जंगल याद रखता ही है
वही अगर सैनिक सिंह हो तो
अति भयंकर बनकर
मध्याह्न का मार्तांड बनकर
शत्रु पर टूट पड़ता है
यही तो हुआ चीनी युद्ध में
यहाँ का बब्बर शेर था जोगींदर सिंह
सिख रेजिमेंट फर्स्ट बेटालियन का
प्रचंड वीर धीरोदात्त जोगींदर सिंह
महान देश भक्त था।

अरुणाचल प्रदेश की ओर दूटपड़ने वाले
चीनी मुश्करोँ का डरकर सामना करने के लिए
तंगपेनला भारत सैनिक पोस्ट पर चला गया।
इस स्थावर पर नज़र रखनेवाले चीनी शत्रुओं ने
अधिक संख्या के दलों से घुसपैठ किया।
अंतिम गोली, अंतिम क्षण तक
आखरी श्वास तक युद्ध करने का वादा भरत माता से किया।
धीरोदात्त प्रचंड वीर
स्थावर तक जाने केलिये चीनी शत्रुओं ने रोका टोका



भारत दल ने तंगपेनला तक पहुँच न पाया।
फिरभी फिर भी अटल विश्वास से
लौह संकल्प से
जोगींदर ने चीनियों का जबरदस्त सामना किया।
भयंकर-भीकर युद्ध था
चीनी शत्रुओं को जमीनोदस्त कर दिया
चीनियों ने जोगींदर सिंह को घेर लिया
चक्रबन्ध डालनो पर भी
उन मुश्करोँ से आमने-सामने लड़ने वाला धीरे-वीर था वह
एक हाथ से, धैर्य से
कई चीनी शत्रुओं को मारडालने पर भी
कायर चीनी शत्रुओं ने पीछे से धुरी से मारा
वीर जोगींदर सिंह को वीर गति प्राप्त हुई
मृत्यु के बाद उसे परमवीरचक्र मिला
भारतीयों के हृदयों में अमर वीर बन गया जोगींदर को
हमारी हृदयपूर्वक श्रद्धांजलि,
जय हिन्द, जय भारत।

तेलुगु :
बंडारु जयश्री
भुवनगिरि
9885623485



हिन्दी अनुवाद :
डॉ. टी.सी. वसंता
हैदराबाद
9951484545, 98484542





9. ठानी हुई बंदूक (मेजर शैतान सिंह)



उस परमवीर के माथे का लाल तिलक
कुमाऊँ रेजिमेंट के दिल में
दहकते अंगारे की तरह जल रहा है
उस सैनिक की वर्दी को
पूरी तरह से खून भिगो दिया
वह भारत की वीरता को नमन करती हुई
चीन की अंजलि जैसी लगती है।

लद्दाख के रेज़ांग ला की पहाड़ियों के पीछे
अपनी कुशलता और दृढ़ता का परचम लहराया
तीन शेरों .. अशोक स्तम्भ के प्रतीक वाली बानी वह टोपी
संपूर्ण भारतवर्ष के प्रति आदर और श्रद्धा से
घुटने टेकने पर मजबूर कर दिया है।

पालने में दूध पीते बच्चों की स्वच्छ मुस्कान में..
प्रेममयी रातों में समय को भूल चुके नव-दंपतियों में..
व्यापारियों में... विद्यार्थियों में..
सभी नागरिक, उन पलकों की छांव तले सुरक्षित हैं
आँख की पुतलियों की तरह आराम महसूस करते हैं।

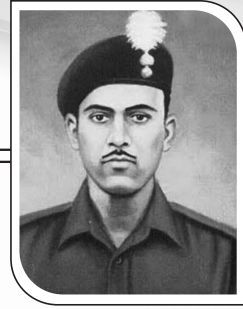
पंद्रह हजार फीट की ऊंचाई पर युद्ध लड़ते
हमारे प्रिय वीर 'शैतान सिंह', अपनी आँखें कभी नहीं मूंदी
साथी जवानों को बार-बार प्रेरित और उत्साहित करते
वह सिंह सद्रूप पराक्रमी,
ठानी हुई बंदूक में ही अपने प्राण समर्पस ण किये।

तेलुगू मूल, हिन्दी अनुवाद:
डॉ. सी. भावानी देवी
हैदराबाद
98668470000





10. अमर नायक! हवलदार अब्दुल हमीद।



जिस मां ने तुम्हें जन्म दिया वह गर्व से भरी हुई थी,
जिस धरती पर तुम चले वह उत्साह से भरी हुई थी।

एक दर्जी के परिवार में जन्म लिया अब्दुल हमीद,
चौथी ग्रेनेडियर सेना में एक सैनिक के रूप में
सांस रुका दिया।

हमारे दिलों में हमेशा के लिये गर्व से बस गया।

आप वो सेना हैं जो शांति के पंख फैलाकर
सीमाओं की रक्षा करती है।

जब युद्ध अपरिहार्य हो गया,
तब आपने एक सौ चालीस करोड़ जनता को
अपने बच्चों में देखा।

आपने भारत की रक्षा के लिए
अपने हृदय को सुरक्षित ढाल बनाया।

जब भी आपने हिम्मत नहीं हारी;
कब्रिस्तान चारों ओर सरसों के दाने से घिरा हुआ था।
आपके साथी शव भले ही क्षत-विक्षत हो रहे थे,
तब भी आप एक पल विचलित नहीं हुए।



भूख-प्यास को भूलाया
 आपने दुश्मन से लड़ाई किया
 अकेले ही हजारों मील का सफर तय किया
 और मातृभूमि को चूम लिया।

तुम वह सूर्य हो; जो संसार को प्रकाश देता है
 भले ही तुम झुलस रहे हो
 लेकिन तुम दुश्मन के टैंकों से आंखें मूंद लेते हो,
 भले ही तुम्हारा शरीर खून से लथपथ हो।

पूर्णिमा की रात को; मानो तुम
 हमारे लिए ही मौजूद हो।
 हर रात अपनी ठंडी चांदनी की छांव में
 हमें शांति से सुला देती हो।

लेकिन तुम अपनी आँखों में
 अग्नि की ज्वाला लिए, देश की रक्षा करते रहे।

आपने बहादुरी से चार पैटन टैंकों को मिट्टी में ध्वस्त किया
 और एक बादशाह बन अंतिम स्वास लिया।

आपके यादों की प्यासी परिवार के लिए
 आपने हमें उपकृत बना दिया।

हालांकि...

आप परमवीर चक्र के रूप में
 हमेशा हमारे दिलों में रहेंगे...।

हिन्दी अनुवाद:
नस्त्रीन खान
 हैदराबाद
 9652432981



तेलुगु:
सलीमा
 हैदराबाद
 9490099083

सैनिक तुझे सलाम!



11. अमरसेनानी

(लेफ्टिनेंट कर्नल अर्देशिर बुरजोरजी तारापोर) ◆



राष्ट्र-रक्षा को ही जीवन का परम ध्येय बनाकर,
भारतीय सेना में साहस का अमर पर्याय बनकर,
सीमा पार के शत्रुओं के लिए जो काल बन गए,
भारतीय इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठों में ढल गए...
महानायक... अर्देशिर बुरजोरजी तारापोर !

1965 के युद्ध की वह भयंकरी समर-भूमि,
फ़िल्झौरा और चविंडा की रक्त-रंजित रण-भूमि !
17 हॉर्स रेजीमेंट का नेतृत्व करते हुए,
सियालकोट सेक्टर पर विजय का ध्वज फहराते हुए,
शत्रु के हृदय को काँपा देने वाले अजय योद्धा...
रण-धीर... अर्देशिर बुरजोरजी तारापोर !

तोपों के गर्जन से जब वसुंधरा काँप रही थी,
पाकिस्तानी टैंकों की श्रृंखला आगे बढ़ रही थी,
तब भी बिना एक कदम पीछे हटे, अचल-अडिग खड़े रहे,
सैनिकों के प्राणों में हुंकार भरकर समर में अड़े रहे !
वीरता की जीवंत परिभाषा बनकर उभरे
अजेय योद्धा... अर्देशिर बुरजोरजी तारापोर !

सवारी करता टैंक जब क्षत-विक्षत हो गया,
हृदय का राष्ट्र-प्रेम और अधिक प्रदीप्त हो गया !
द्वितीय टैंक में सवार होकर जो बग्न बनकर टूटे,
एक-एक कर शत्रु के टैंकों के परखच्चे छूटे !



विजय का मार्ग प्रशस्त करने वाले असाधारण वीर...
रण-वीर... अर्देशिर बुरजोरजी तारापोर !

मातृभूमि के चरणों में प्राण-पुष्प अर्पित करना ही परम पूजा माना,
मृदु मुस्कान के साथ मरण का भी सहर्ष स्वागत किया !
सह-सैनिकों के लिए जो अमिट प्रेरणा का स्रोत बने,
रण-प्रांगण में तिरंगे के गौरव को अनंत ऊँचाइयों तक ले गए...
धीरोदात्त महामानव... अर्देशिर बुरजोरजी तारापोर !

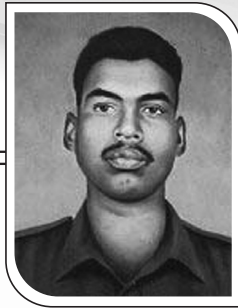
उनका महा-त्याग कालजयी इतिहास है,
उनकी शौर्य-गाथा हर भारतीय की साँस है !
परमवीर चक्र से अलंकृत इस अमर बलिदानी को,
अजरामर देशभक्ति और अनन्य सेवा को
कोटि-कोटि नमन ! जय हिंद !

तेलुगु मूल, हिन्दी अनुवाद:
सुनीता बंडारु
पालामूरु
9440671530





12. देश के वीर जवानो (लांस नायक अल्बर्ट एक्का के प्रति)



वह जो गिरिपुत्र था!

कहीं जनारण्य से दूर कोने में बसा पर्वतीय आदिवासी है वह!

निरत अनवरत शिकारी क्रीडा का सहवासी!

धनुष बाण थे उसके वस्त्र

जंगल को ही आवास बनाया स्वेच्छाविहारी!

निशानी लगाकर लक्ष्य के छेदन में

अर्जुन जैसा धनुर्धारी!!

दृढ संकल्प का तपस्वी था! अपनी प्रतिभा दिखाकर

मातृभूमि की सेवा में तत्पर रहें

तन-मन अर्पित करें आशय था उनका!

वह कोई गिरगिट नहीं,

जो परिस्थितियों के अनुसार रंग बदल ले।

वह तो निरंतर राष्ट्र की सेवा में समर्पित

एक सच्चा सैनिक था।

दुश्मन के दिलों में डर के धड़कन की तेजी

बढ़ाने वाला मन्यम् का पुत्र था वह!

धैर्य का साथी बन

श्वास लिया था साहस को निःश्वास बनाकर

ऐसी थी हालत, जान भी खो दें

युद्ध की आग में कूद पड़ें!



जो भी हो!

वह एक भारतीय वीर जवान था
नाम था उनका,
भरा हुआ दिल भर आत्मविश्वासी!
लगन से समरांगण में कूद पड़ें!

साहस शौर्य था उसका नाम!
त्याग का दर्पण है वह
देश की सेवा का अर्पित भाव है मन भर!

इसीलिए उनका आगमन हुआ था
बिहार के रेजिमेंट में अपनी युद्ध की प्रतिभा से
अटल स्थान बनाया स्थिर
चतुराई दिखाकर भारत-पाकिस्तान की लड़ायी में,
गंगासागर के बॉटिल में
अभेद्य दुश्मन के स्थावर बन्कर्स पर
विध्वंस रचाया!

सदा मुस्कुराते हुए
अपने जीवन को मातृभूमि के लिए अर्पित कर देने वाला
वीर योद्धा था वह!
शत्रु के सामने
कभी झुकना नहीं सीखा,
बल्कि दुश्मन को धूल चटाना ही
मान लिया था अपना धर्म।

इसीलिए—
आतंकवादियों की गोली का शिकारी बनकर भी
अमर वीर की तरह
इतिहास में अमिट स्थान बना लिया
अपना अचंचल स्थिर दृढ़ता से!



गंगा सागर के बॉटिल में अभेद्य शत्रु स्थावर को
मिट्टी में मिला दिया
दुश्मन के मशीन-गन के आगे सर न झुकाया
कोई शत्रु बच न पाये आखरी दम तक लड़ता रहा
भारत मां की मान बचाने अपनी जान गँवा दी तेजस्वी ने..!

उसके लहू की हरेक बूंद
बहाया भारत माता के चरणों में
गंगा-सागर के पवित्र जल के अभियुक्त अभिषेक
पवित्र जल
देशभक्ति का संदेश देती रही।

उसकी शहादत ने
देशवासियों के हृदय में
देशप्रेम की ज्योति जलाई,
जिसे युगों तक भुलाया नहीं जा सकें।

गंगा-सागर जैसी पवित्र भूमि पर
उसने अपने रक्त से
शौर्य की अमर गाथा लिख दी,
जो आने वाली दरबदर पीढ़ियों के लिए
सदैव प्रेरणा बनी रहेगी
साहस भरी हुई उनकी वीरता की अमर कहानी।

तेलुगु :

डॉ. वाणी देवुलपल्ली
वारंगल्लू, 9866962414



हिन्दी अनुवाद :

डॉ. पी. पद्मावती
हैदराबाद, 6302093356





13. परमवीर चक्र निर्मल जीत सिंह (निर्मल जीत सिंह सेखोन)



समय के साथ दौड़ा हे कार्य शूर!

अटूट साहस के साथ सामना करके

लड़ाई लड़ी हे समर वीर!

बचपन में ही भविष्य की ओर झांककर देखा

अपनी मातृभूमि की रक्षा करने

देखा कई सपने।

आचंद्रार्क तुम्हारा यश दस दिशाओं में ज्योति की तरह प्रकाशमान रहे।

तुम भारतीय राष्ट्र के गौरवशाली प्रियतम की तरह

हमारे मन में सदा के लिए बसे रहो!

पिता के पदचिन्हों पर चलने का आप का संकल्प

भारत माता की सेवा करने का आपका दृढ संकल्प,

जो बचपन में ही आपमें समाहित एक मजबूत लक्ष्य था,

श्रीनगर को पाकिस्तानी हमले से बचाने के एक कार्य में परिवर्तित हो गया,

जिसके लिए आपको परम वीर चक्र से सम्मानित किया गया।

भारतीय पायलट बनने की आपकी इच्छा को

पिता का समर्थन प्राप्त था

स्वाभाविक रूप से माता का डर दोनों एक साथ होने के संकटों के बीच

अथक परिश्रम किया

भारत माता की रक्षा के लिए।

पायलट के रूप में अग्रणी बनने कार्यदीक्षा लिये थे।

थोड़े ही समय में आपने अधिकारियों का आदर पाये थे।

आप अपने साथियों के लिए एक आदर्श बन गए।



देशभक्ति आपकी नस नसों में बसी है।

देशभक्ति आपके खून में बही देशभक्ति ही आप का प्राण होकर देशभक्ति ही आप का स्वर बनकर देशभक्ति ही आपके कदमों को आगे बढ़ाई ।

श्रीनगर के हवाई अड्डे को नष्ट करके
भारतीय सेना को कमजोर करने की चाह रखने वाली
दुष्ट शक्तियों के विरुद्ध वीरतापूर्वक युद्ध किया।
हे वीर!

आपको हमारा हार्दिक नमन।

बमों की वर्षा की परवाह किये बिना अभिनव भीष्म की तरह
प्राणों की परवाह किये बिना

आगे बढ़कर अमर हो उठे

हे वीर सिपाही! यही हमारा सलाम

आपको वहाँ दिन हो या रात,

धूप हो या बारिश और सर्दी की परवाह न करके,

कार्योन्मुख होकर आगे बढ़ रहे हैं

हम यहां शांति से रह रहे हैं!

हे योद्धाओं! हे वीर पुरुषों!

हम आपका ऋण चुकाने के लिए क्या दे सकते हैं?

हम अपनी भावनाओं को अक्षरमालाओं के रूप में पिरोकर

आप के लिए कृतज्ञता की माला बनाने के सिवाय

हम आपको क्या दे सकते हैं?

तेलुगु:

काट्रगडु भारती, बोधन

85004 50540



हिन्दी अनुवाद:

डॉ.टी.श्री लक्ष्मी, हैदराबाद

7386176326





14. सूरज का रक्तबिंब (अरुण खेतरपाल)



मत धर्म की विश्रृंखल क्रीडा
मनुष्य के अस्तित्व को खींचने लगी
उद्भव हुआ एक सैनिक मुट्ठी बांध के
लिया था जनम एक वीर !

तिमिर को चीर
सूरज का रक्तबिंब..
विश्व प्रयत्न से बचा लिया
मिट्टी का ऋण चुकाने
अकुंठित दीक्षा दक्ष बना !

देश को विजय पथ पर डटाने
अरुण खेत्रीवाल बना लेफ्टिनेंट धीरज धर
भरा हुआ था अणु-अणु में देश की भक्ति प्रकोप
युद्ध टैंकर्स का वारिस बन !

पिता ब्रिगेडियर खेत्रीपाल का मन
गर्व से फूल उठा
दीक्षा दक्ष पुत्र को देख
उम्र था खेत्रीवाल का खेल मिचौनी का
इंडो-पाकिस्तान का बसंतर युद्ध
अरुण को, बुलेट्स से युद्ध में खेलता देख
अकेला भी हो, वह शत्रु की सेना पर टूट पड़ा
सिंह किशोरी बन हुंकार किया !





बीस साल का बचपना मन है उनका
जॉचा नहीं अब तक वह दुनियां को
पूरा नहीं हुआ सरहद का शिक्षण
धीर वीर पराक्रमी था वह माँ के खून का वारिस
मातृभूमि से प्यार का अमिट वात्सल्य
भरा हुआ था उसका तन-मन..!

प्रतिभा थी उनकी दिन दूनी रात चौगुनी तरक्की
करती रही
विद्या जो भी हो उनके यहां नतमस्तक होने लगी
बना था सव्यसाची युद्ध कला में!

दुश्मन की सेना से जब-तब अकस्मात् अवसर पड़े
लक्ष्य था उनका शत्रु समूह का तत्क्षण सामना करें
टैंकबंड के कंट्रोल लेने का शिक्षण लेना था उनको
ऐसी थी शिक्षा लेने की जरूरत थी उनकी
एक भी पग ना रखें देश में शत्रु समूह!

बैटल ऑफ़ बसंतर की नदी है एक सरहद की रक्षण रेखा
पदातिदल के साथी बन..
आदेश था उनको युद्ध के टैंकर्स नदी के पार करावें
किंतु संकल्प था उनका जंग का भागस्वामी बनें!

तन के अणु-अणु में बढ़ती रही मातृभूमि की रक्षा की कांक्षा
लक्ष्य था उनका घुसकर आने वाले शत्रु समूह का सामना करं
वीरोचित साहसी बन गले दबाया शत्रुमूक के प्राणों को
रणक्षेत्र में उनके पंजे का धक्का, प्रतिपक्ष के दिल का धड़कन
बढ़ाया
गुस्से से भरा हुआ अरुण



बायें-दायें तितर बितर युद्ध के टैंकों को निशाना लगाया, बंदूक के गोली बरसाया
भभकने वाले अग्नि की ज्वालाओं के बीच श्वास की थैली कसकर बांध,
टूट पड़ा था युद्ध के टांको पर विध्वंस का रास रचाया!

बंदूक की गोलियाँ बरस पड़ीं
घाओं से छलनी हुई उसका देह
लहू की बूंदों से तर-तर बिखर गया
तो भी जप करने लगा, देश की रक्षा का मंत्र
भारत मां की गोद में लिया अंतिम सौंस
सौभाग्य था उनका प्रकृति माता का सिंदूर बना
जाति के गर्व का झंडा ऊँचा फहराया
जय हिन्द का नारा लगाया
फौलादी स्वर संगम का गीत
वन्दे मातरम् सुर ऊँचा किया
बना जाति का अमरवीर ..!

तेलुगु:

जयंती वासरचेट्ला

हैदराबाद

9985525355



हिन्दी अनुवाद:

डॉ. पी. पद्मावती

हैदराबाद

6302093356





15. परमवीर चक्र का केतन (मेजर होशियार सिंह)



रो रही है बहुत पड़ोसी की छोटी बच्ची
घर के आंगन में कराह रही है बूढ़ी माँ से
ऊब झिड़कियों की डाँट डपट कर रही हैं भय कंपित
दिल को निचोड़ रहे हैं पीछे घर के बातों का बौछार
कोई नहीं चाहते मुसीबतों को
औरों के दुख से वास्ता हम रखें क्यों ?
जन के बीच में भी रहें साथी नहीं बनते
होते नहीं कोई मददगार !

घुसकर आने वाले पड़ोसी देशों की अराचक कृत्यों का
सामना कर

करोड़ों की जान को बचाने वाले रक्षक बन जाते
हमारे वीर सैनिक साहसी बन उनका अद्भुत शौर्य
नहीं दिखता रे अपनी आंखों को !

मन के रंग स्थल के सिंहासन चढ़ाएंगे उनको
कल के भावी वारिस का जीवन चमक उठे
आजायें दिल की अलमारी को खोलेंगे !

होशियार ! होशियार !
यह कोई चेतावनी नहीं
सुनेंगे थर्ड ब्रिगेडियर मेजर होशियार सिंह दहिया की कहानी !



कितने! दुखों को देखा है संसार के कलरवों को
अपना लिया है उन्होंने!

कितने युद्ध के व्यूहों को छेद लिया है उन्होने!
दीक्षा दक्ष हो देश का रक्षण कवच बना है वह!
इंडियन आर्मी सैनिकाधिकारी की प्रतिभा देखा है बसंतर
के बहाव को ही मालूम है!

सचमुच! परमवीर होशियार सिंह जैसे महावीरों का जीवन
युवाओं के लिए प्रेरणा का अक्षय स्रोत है।
उनके अमर त्याग और साहस की गाथाएँ
अनंत काल तक भारतवासियों के हृदयों में जीवित रहेंगी।

शत्रु के विरुद्ध उनका प्रचंड पराक्रम
युद्धभूमि में अद्वितीय साहस का परिचायक था।
उनका अदम्य धैर्य और वीरता
सदैव वंदनीय रहेगी।

यही हैं परमवीर चक्र से सम्मानित
युद्धभूमि के महान योद्धा।

परमवीर चक्र विजेता मेजर होशियार सिंह
अविस्मरणीय मानवीय मूल्यों के प्रतीक हैं।

उनका साहस,
उनका समर्पण,
उनका स्वाभिमान,
और उनकी वीरता—
प्रत्येक भारतीय के जीवन में
प्रेरणा का दीप बनकर सदैव प्रकाशित रहेंगे।



उनकी कीर्ति समय के परिवर्तन से कभी धूमिल नहीं होगी।

उनका त्याग

हर युग में

एक संदेश बनकर रहेगा।

मरुस्थल की तपती रेत में भी

उनकी वीरगाथा गूँजती रहेगी।

सीमाओं पर बहने वाली हर हवा में

उनका पराक्रम सुनाई देगा।

धरती का प्रत्येक कण

उनकी अमर गाथा का साक्षी रहेगा।

ऐसे शौर्य से आलोकित

उस महान योद्धा मेजर होशियार सिंह को

मेरा हृदय से आत्मार्पण, विनम्र प्रणाम

श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए..।

शत्रुओं की गोलियों की वर्षा के बीच

अपने देश के सैनिकों का नेतृत्व करते हुए,

विजय के मार्ग प्रशस्त करते हुए,

दुश्मनों के मोर्चों को ध्वस्त करते हुए,

राष्ट्रधर्म का पालन करने वाले

वीर भारत के महान सपूत!

सीमाओं पर शत्रु की छाती चीरकर

विजय-पताका फहराने वाले अमर योद्धा!

तुम्हारे शौर्य की गाथाएँ

हमारी प्रत्येक पीढ़ी के लिए प्रेरणा हैं।

यदि किसी को यह पूछना हो कि

वीरता वास्तव में कैसी होती है,

तो यह विजयगाथा ही उसका उत्तर है।



तुम्हारा अद्भुत शौर्य और पराक्रम
हम सबके लिए दीपस्तंभ है।
तुम्हारे समान साहस जुटाना कठिन है,
तुम्हारी तुलना किसी से नहीं की जा सकती।

होशियार! ओ वीर होशियार!!
आज भी तुम्हारा नाम लेते ही
हृदय गर्व से फूल उठता है।
धन्य हैं ग्रेनेडियर मेजर होशियार सिंह,
धन्य है तुम्हारा पराक्रम!

तुम्हारे अद्वितीय साहस ने
समूचे विश्व को चकित कर दिया।
तुम्हारे यश और वीरता ने
भारत के इतिहास में स्वर्णिम अध्याय लिख दिया।

परमवीर चक्र सम्मान से विभूषित
इस भारतीय वीर को
हमारा शत-शत नमन! शत् शत् कोटि प्रणाम ..!

तेलुगु:

डॉ. कोंडापल्ली नीहारिणी
हैदराबाद
9866360082



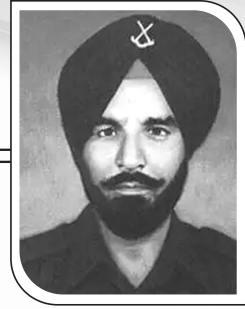
हिन्दी अनुवाद:

डॉ. पी. पद्मावती
हैदराबाद
6302093356





16. हिमवन्नगम (सूबेदार बानासिंह)



कर्तव्य-निष्ठा का पर्याय,
अडिग साहस का हिम-शिखर।
देश की रक्षा के लिए
अपने प्राणों का अर्पण करने वाले वीर।

युद्धभूमि में
दुश्मनों के लिए सिंह समान गरजने वाले,
अपनों के लिए
करुणा और स्नेह का स्वरूप।

देशभक्ति को जीवन बनाया,
धर्म और कर्तव्य को पूजा माना।
मातृभूमि की रक्षा के लिए
अपने रक्त का तिलक चढ़ाने वाले अमर सपूत।

शत्रु के सामने कभी नहीं झुके,
विजय ही जिनका संकल्प था।
युद्ध ही उनका कर्मक्षेत्र,
सेवा ही उनका जीवन-धर्म।

कारगिल की बर्फीली चोटियों में
अदम्य साहस के साथ लड़ते हुए,
भारत माँ की आन-बान-शान की रक्षा करते हुए
वीरगति को प्राप्त हुए।



आपका बलिदान
भारत माता के मस्तक का मुकुट है।
आपकी कीर्ति
युगों-युगों तक अमर रहेगी।
अपनी अद्वितीय वीरता से
शत्रु-दलों को परास्त कर,
उनके षड्यंत्रों को ध्वस्त करते हुए,
युद्धभूमि में अदम्य साहस का परिचय दिया।

लगभग चार सौ दुश्मनों के लिए
वह भय का पर्याय बन गए।
शत्रुओं के लिए मानो
एक जीवित ग्रेनेड सिद्ध हुए।

रणभूमि में विजय का इतिहास रचते हुए
अमर हो गए—
सूबेदार बलजीत सिंह!

आपकी वीरता के सम्मुख
शौर्य भी नतमस्तक हो जाता है।
आपके त्याग के आगे
वीरता का प्रत्येक मानदंड छोटा प्रतीत होता है।

भारत माता की गोद में
अमरत्व प्राप्त करने वाले
हे हिमवत शिखर!

आपका बलिदान
युग-युगांतर तक स्मरणीय रहेगा।
अमर शहीद बलजीत सिंह को
अश्रुपूर्ण श्रद्धांजलि।

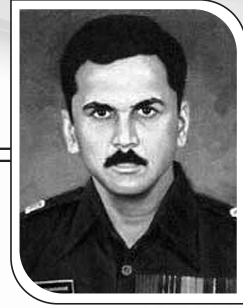
हिन्दी अनुवाद:
डॉ. पी. पद्मावती
हैदराबाद,
6302093356



तेलुगु:
डॉ. बंडारु सुजाता शेखर
हैदराबाद
9866426640



17. विश्वशांति का कबूतर (मेजर रामस्वामी परमेश्वरन) ◆▶



युद्ध में विजय जितनी अनिवार्य हो,
अहिंसक शांति भी उतनी ही अनिवार्य।
भारतमाता के तीनों प्रहरी-सेनादल,
साहस और शौर्य के अनुपम प्रतीक।

अपने देश की सीमाओं पर संग्राम हो,
या परदेश में संकट-सेवा का भार,
शत्रु-समूहों और आतंकी झुंडों पर
लक्ष्य छेदना ही उनका प्रथम संकल्प।

रामास्वामी और जानकी के दुलारे,
मेजर रामस्वामी परमेश्वरन,
पच्चीस वर्ष की अवस्था में सेना में आए,
महार रेजिमेंट की कीर्ति को ऊँचा किया।

जब श्रीलंका में एल.टी.टी.ई. का आतंक फैला,
तब भारत ने यू.एन.ओ. के साथ हाथ मिलाया;
इंडो-श्रीलंका समझौते के अंतर्गत 'ऑपरेशन विंड' में
शांतिदल आतंकियों को कुचलने चल पड़ा।

न बिजली थी, न जल था, न अन्न,
और वह देश भी अपना न था;
जहाँ रेडियो भी मौन रहा।
हथियारों के अड्डों की खोज था।
तीर, बंदूकें, ग्रेनेड लिए स्थानिकों की पहार।



मेजर की टुकड़ी धरती पर रेंगती चली,
उग्रदल नारियल वृक्षों पर घात लगाने रहा।
घोर अँधेरे में हुई बिजली-सी छापामारियाँ,
मानो जटाएँ झटकते सिंह गरज उठे हों।

भारी मशीनगन के विस्फोट में
मेजर की कलाई कट गई,
आतंकी का फेंका ग्रेनेड सीधे हृदय में घुसा।
“उफान मारकर गिरी भारतपुत्र की रक्तधारा”

जिस गोली ने उनका अपना हृदय छेदा,
उसे शत्रु के हृदय पर साध दिया।
अपने कमांडों को स्पष्ट आदेश दे रहा था।
भोर होते-होते शत्रु-शिविर पर विजय पा ली।

निर्भय वीर की आँखों ने विजय देखी,
साहस का एक नया रूप बनकर प्राण त्यागे।
शांति स्थापित करने वाला श्वेत कबूतर
शांति-प्रतीक बनकर नभ में उड़ गया।

आधुनिक शस्त्रों का ध्वस्त किया।
पाँच आतंकियों का अंत हुआ,
वो युद्ध बना वीरता का इतिहास,
इन वीरों की गाथा स्वर्ण पत्रों में लिख दिया।

चेन्नै में परमेश्वरन विहार कॉलोनी है,
जहाँ कांस्य प्रतिमा की आँखों में अडिग संकल्प बसता है।
इस घटना में अमर जवान परमेश्वरन
सर्वोच्च परम वीर चक्र-पुरस्कार ? पाये।
भारत माता गर्वित हुई।

तेलुगु मूल, हिन्दी अनुवाद:

- श्रीलक्ष्मी चिवुकुला

9441957325





18. हिमवत्पर्वत (केप्टेन मनोज कुमार पांडे)



“कार्गिल में घुसपैठ करने वाले पाकिस्तानी बंदूकधारियों” से मुक्त कराए गए खुकर थांग चौकी का पोस्ट कब्जा करने के लिए...

विजय अभियान चलाया गया।

घोर अंधेरे में पहाड़ों की चोटियों पर चढ़कर
अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए सेना दल के साथ।

बहादुरी से लड़ाई लड़ी

हमारे बहादुर पांडे...

शत्रु के समुदाय ने घोर अंधेरे में प्रकाश के रॉकेटों का इस्तेमाल करके।
शिविर को नष्ट करने का प्रयास किया...

भारतीय सेना के आगे खड़े होकर बहादुरी से पाकिस्तानी सेना को हराने में।
उनके बंकरोड़ों नष्ट करने में...

एक वीर के रूप में भारतीय पराक्रम का परिचय दिया।

हिमवत्पर्वत हमारे केप्टेन मनोज कुमार पांडे ...

फिर, बिना आराम किए, गुर्खा राइफिल्स कालूबार की लड़ाई की तैयारी की
बुन्कर क्षेत्र में पाकिस्तानी सैनिकों से भिड़ गए...

कड़ाके की ठंड में अंधकार में वीरतापूर्वक लड़ाई लड़ी

दुश्मनों के बंकरोड़ों को राख कर दिया...

कंधे में गोली लगा घायल होकर भी पीछे नहीं हटा।

सीधे मुकाबले के लिए बंदूक एक तरफ रख दी,

एक चाकू उठाकर आगे बढ़ा पाकिस्तानी बंकर में कूद पड़ा

सलाम सिपाही



दुश्मनों के गलों को काटकर...

उन लाशों के ऊपर से चलते हुए आ रहा।

भरत वीर पांडे जी के ऊपर।

रहस्य स्थल से दुश्मनों ने बरसाया था गोलियों का बौछार।

गोलियाँ सीधे उनके दिल में जा लगीं...

दुश्मन की तलवारें दुश्मन के घावों को चीरती हुई आगे बढ़ीं...

जब जमीन पर गिरते हुए भी ग्रनेट फेंककर दुश्मनों को मिट्टी में मिलाकर
चंदू के द्वारा समाचार भेजा....

अपनी माँ से (जिसने उसका जन्म दिया) कहा-“क्या मैं छुट्टी ले लूँ”

भारत जननी के चरणों पर अमर पारिजात कुसुम बनकर गिर गया।

परम वीर चक्र था हमारा मनोज कुमार पांडे...

इसीलिए उत्तर प्रदेश के सीतापुर में जन्म लिया एक गरीब बच्चा

पांडे ने सैनिक बनने का लक्ष्य चुना था...

भले ही वह धरती के लिए लड़ते हुए शहीद हो ज, उनकी यही ख्वाहिश है
कि उन्हें परमवीर चक्र पुरस्कार मिले...

हे भारत माता के वीर बालक।

कप्तान मनोज कुमार पांडे।

कृपया वकुलपूला कैदंडा की यह भेंट स्वीकार कीजिए।

तेलुगु:

वकुला वासु

हनमकोंडा

9989198334



हिन्दी अनुवाद:

डॉ.टी.श्रीलक्ष्मी

हैदराबाद

7386176326





19. अमर पराक्रम (ग्रेनेडियर योगेन्द्र सिंह यादव)



कारगिल की काली रातों में
बारूद की बरसती आग के बीच
शौर्य के शिखर पर
एक नवयुवक सूर्य बनकर उगा।
उस अडिग संकल्प के आगे
भारत माता ने
विजय का तिलक स्वयं अपने हाथों से सजाया।
दस मई उन्नीस सौ अस्सी की सुबह
उत्तर प्रदेश की पावन धरती पर
जन्मा एक अस्त्र।
सीमाओं को ही साँस मानने वाले
सैनिक करण सिंह के आँगन में
एक ऐसा जीवन उतरा
जो केवल पुत्र नहीं
राष्ट्ररक्षा का ब्रह्मास्त्र था।
बाल्यकाल से ही
वीरों की गाथाओं को घुट्टी में पीकर बड़ा हुआ,
देशभक्ति जिसकी
हर धड़कन में बस गई।



अठारहवीं ग्रेनेडियर्स की पंक्ति में
भारत की भुजाशक्ति बनकर खड़ा हुआ।
सत्रह हजार फीट ऊँची
हिमाच्छादित चट्टानों की नीरवता को चीरते हुए,
दुश्मन के बंकरों पर टूट पड़े उसके कदम
और साहस का अर्थ
एक नया इतिहास बन गया।

भोर से पहले,
अँधेरे को ही अपना पथ बनाकर,
साथियों संग शिखरों की ओर बढ़ता रहा।
गोलियों की वर्षा हुई,
तन रक्त से भीग गया,
साथी एक-एक कर गिरते गए,
पर उसने पीठ नहीं दिखाई।
उसका अदम्य साहस
वीरता की अमर शिला बन गया।

एक-एक बंकर
उसकी विजय का साक्षी बना।
वह बिजली की तरह
दुश्मन के शिविरों में उतरा,
मृत्यु की आँखों में आँखें डालकर
रण का तांडव रच दिया।
वह केवल योद्धा नहीं—
सिंह-हृदय का स्वप्न था।



गोलियों ने तन को छलनी किया,
घावों ने शरीर को थका दिया,
पर शेष बची साँसों को ही
उसने अपना अस्त्र बना लिया।
बर्फ पर रेंगते हुए भी
दुश्मन की हर चाल पहचान ली,
उनके आक्रमण को ध्वस्त कर दिया,
और टाइगर हिल की चोटी पर
तिरंगे को फिर से
गर्व के साथ लहरा दिया।

पन्द्रह गोलियाँ
शरीर को घायल कर सकीं,
पर उसके साहस को नहीं।
उसके वज्र-संकल्प के आगे
यम का फंदा भी झुक गया,
और नियति स्वयं
उसकी वीरता की दासी बन गई।

सोलह महीनों की पीड़ा,
असंख्य अग्निपरीक्षाओं के बाद भी
वह फिर उठा
मानो आकाश में लहराता तिरंगा
नई ऊर्जा से भर उठा हो।
कर्तव्य उसकी साँस बना,
राष्ट्र उसका मंदिर,
और सेवा उसकी पूजा।
वह फिर चल पड़ा
रणभूमि की ओर
अथक, अजेय, अविराम।



सिर्फ उन्नीस वर्ष की आयु में
राष्ट्रपति के कर-कमलों से
परमवीर चक्र प्राप्त कर,
उसने इतिहास के पन्नों पर
अपना नाम
अमर अक्षरों में अंकित कर दिया।

ग्रेनेडियर योगेन्द्र सिंह यादव...

वह केवल एक सैनिक नहीं।
वह भारत माता के मस्तक का
विजय-सिंदूर है।
वह शहीदों के अमर बलिदानों का
जीवंत प्रतीक है।
सीमाओं पर डटे
हर जवान की प्रेरणा-ज्योति है।
भारत का गौरव,
युगों-युगों तक गूँजने वाली
वीरता की अमर गाथा है
अमर पराक्रम।

तेलुगू मूल, हिन्दी अनुवाद:

विश्वैका

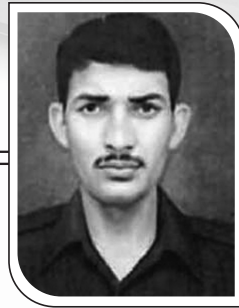
सिकिंदराबाद

9550183143





20. परमवीर चक्र पुरस्कार विजेता को अक्षरार्चना (रैफिलमान संजय कुमार)



बरसे गोलियों को केसर के फूल सोचनेवाला हे वीर संजय कुमार... !
पैदा हुए थे मातृभूमि की सेवा के लिए ही...

कई बार परीक्षा दे-देकर

कई बार हार का सामना कर-कर अपनी इच्छाशक्ति का परिचय देकर प्राप्त
की सेना में राइफलमान की नौकरी...

भले ही एक छोटे से गाँव से आकर हमारे देश में वीरता के मामले में आप
छोटे नहीं हैं प्रकट करके उनके मजबूत दिल का साहस तथा उनकी मांस
पेशियों की ताकत ही उनकी शान हैं

13वीं सेनादल में एक वीर सैनिक के रूप में ख्याति अर्जित कर

आपने पहाड़ पर चढ़कर युद्ध करते-करते

पाकिस्तानी सेना, जिसने हम पर हमला किया था

पल भर न रुके वे बरसाये गोलियाँ हमारे सैनिकों के विनाश की ओर

एक ऐसे तरीके से जो ज़मीन पर मौजूद हमारे सैनिकों को रास्ता दिखाते हुए...

कुशलतापूर्वक दुश्मन की गोलियों से बचते हुए उपाय से घुटनों से चला

उस चोटी पर पहुँच गया जहाँ वे थे, और बंकर में छिपे दो दुश्मन सैनिकों

को गोलियों से मारकर मिट्टी में मिला दिया था

उसी रणनीति के साथ अपनी यात्रा जारी करते हुए

एक और बंकर में पहुँचकर।

वहाँ जमा हुए परसेनाओं को पकड़कर बहादुरी से सामना करके उनसे
लडकर.....

पराजित करते समय



तुम पर आग बरसाते हुए उनकी गोली तुम्हारे पैर को घायल कर दिया
बिना हिचकिचाए साहस के साथ छलांग मारकर तुम ने
पाकिस्तानी सैनिकों को भेज दिया परलोको
उस लड़ाई के दौरान, दुश्मन की गोलीबारी में शहीद हो गए
केप्टेन विक्रम बात्रा.....

अदम्य उत्साह से भरे हुए
अपने प्राणों की आहुति देते हुए।
वीर सैनिकों का प्रतिनिधित्व करते हुए।
आपने देश की रक्षा करने के।
अपने सपने को साकार कर दिखाये हो
राष्ट्रीय ध्वज आपको प्रकाश दिया...
मातृभूमि आपको आशीर्वाद दिया
भारत सरकार आपको सराहते हुए परमवीर चक्र पदक से सम्मानित किया।
आपने अपनी मातृ भूमि के लिए ही जन्म लिया था।
कहती हुई तुम्हारे जैसे वीरों का स्मरण करती हुई।
यह अक्षर सुमार्चना करने का अवसर।
मुझे कविता के माध्यम से
आपको नमन करने का
अक्षरयान ने यह अब्दुत अवसर प्रदान किया
मुझे यह पत्र लिखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।
जय हो वीर संजय कुमार।
जय हो!! भारत परमवीर चक्र धर!! जयतु जयतु!!

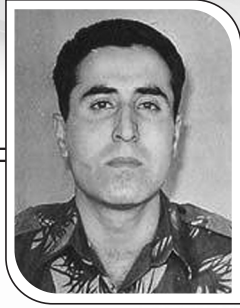
हिन्दी अनुवाद:
डॉ.टी. श्रीलक्ष्मी
हैदराबाद
7386176326



तेलुगु:
डॉ. कोडूर सुमनश्री
तिरुपति
9490401968



21. पहरेदार सूर्य (केप्टेन विक्रम बात्रा)



उषः काल का रखवाला सूर्य
रात का पहरेदार चन्द्र
अलग ढ़्क अलग हो सकते
परन्तु देश के निघा नेत्र बनकर
जाति रक्षण हस्त बनकर
देश टुकडे-टुकडे न हो
अपनी देह का बलिदान
करनेवाला वीर तथा जवान एक ही हैं
जय जवान। जय जय जवान।

आक्रमण करनेकेलिये, कारगिल, खींचकर लेनेके लिये देश,
फिजूल नहीं हैं,
रण समरनाद को
विक्रम ने चारों ओर गूँज उठे जैसा सुनाया।

धर्म को पौडर की तरह लगाकर
मनुष्य के रक्त की छिडकाव पर
बैठकर खुश होने वाले शत्रु केलिये
बचपन में ही आर्मी का वरण किया
मर्मांग को काटकर विकृत विन्यास करनेवाले
पडोसी देश को सबक सिरवाने केलिये,
देश गौरव बनेगा,
जातीय पताका को शरीर पर लपेट कर



विजयी बनकर आयेगा, इस तरह
माँ कमल बात्रा को वादा करने वाला
पालमपूर का पाशुपतास्त्र वह था।

टोलोलिंग पर्वत

5140 फीट ऊँचा रहने पर भी
विक्रम संकल्प के सामने
सर झुकाया, नतमस्तक हुआ
बंकर टैंकर कितने भी रहें तो क्या
जंवाल से मिलकर विक्रम ने व्यूह बनाया
सब राख बन गए
आपरेशन कोड नेम के सामने सर झुकार विजय केलिये
आपरेशन सफीद सागर कहते हुए
देश भक्ति से भरा उस हृदय ने
दिल माँगे मोर कहकर निनाद किया
शेर शाह बनकर खड़ा रहा
आरमी जनरल वी.पी. मालिक ने
प्रशंसा की वर्षा की, अभिनंदन, हर्ष.... हर्ष
200 करोड़ तालियों की प्रशंसा
वीर रक्त ने फिर एक बार युद्ध भूमि में भेजा
मुश्का रवाई में, मुश्करों के बंकर ध्वस्त हो चुके

चौथा बंकर दागते समय,
धाती में चुभा बुलेट को देखकर
जिसे उसने पीछे ढकेल दिया बच्चे - कच्चे रहने वाले
उस सैनिक को मुस्कुराते हुए सेल्यूट किया
देशमाता की गोद में समागया
हे कारगिल शूर विक्रम वीर।



शांति केलिये भी
युद्ध करने का समय है यह
वीर तिलक लगाने के लिए
अपना रक्त तर्पण करने का काल है यह
कारगिल यात्रा में हर कोई तुम्हारे युद्ध कौशल को याद करे ॥
4875 पाइंट को
देश ने तुम्हारा नाम रखा
तुम्हारे त्याग के लिये पूरा देश
साष्टांग नमस्कार करेगा
तुम्हारे साहसी कृत्य का गीत गायेगा।

जयहो जय जय हो विक्रम बात्रा।
माँ भारती रहे जब तक
तुम्हारा नाम रहेगा।

तेलुगु :
अइनंपूडि श्रीलक्ष्मी
हैदराबाद
9989928562



हिन्दी अनुवाद :
डॉ. टी.सी. वसन्ता
हैदराबाद
9951484545, 98484542





सरहद के सैनिक!

युद्ध में
सारे साथियों को खोकर
अकेलापन
एकांत दुःख बन
मैं बिखर गया, यह सच है
तो क्या
मैं तो इन पहाड़ों, जंगलों का प्रेमी
मुझे अपनी गोद में लेकर
क्या वे आश्वासन दिये बिना रहेंगे ?
अपने आपको सुदृढ़ रहने के लिए
हर पेड़ मुझे दिलासा देगा
हर डाल झूला बन बुलायेगी
पत्ता- पत्ता मिल शय्या बनेंगे
भूख मिटा लो कहकर फल मेरे आगे उतर आयेंगे
मधुपात कल-कल कर झरेगा
प्यास बुझाने को स्रोत रिसेंगे
यह जंगल मुझमें नई शक्ति भर
ये पहाड़ धैर्य का कवच पहन
युद्ध के लिए सन्नद्ध होंगे
पक्षी सरहद पर संदेश देंगे
शत्रु कितनी ही बार वध करने पर भी
अपनी जन्मभूमि के लिए
पुनः पुनः जन्म लेते ही रहूँगा
सरहद की ओर मार्च करते ही रहूँगा।

- वी.आर. विद्यार्थी
वरंगल

The First Ever
Tri-lingual Anthology of
Poems on the Lives of Indian Soldiers

सैनिक तुझे सलाम!
SOLDIER, WE SALUTE YOU!
సలాం సైనికా!

*A Poetic Tribute to the Param Vir Chakra Soldiers
in Hindi, English, Telugu Languages*



शब्दों में वीरता
कहानी उनकी



Stories of Courage
Forever in Words



వీరుల కథలు
మన పదాల్లో

My dear Soldiers!

Oh! Defenders of borders
You are great sons of my land
When we are all asleep
You still hold on to your deed
Windy season or snowy days
Or scorching sun's sweltering rays
You are there guarding all the time awake
Treading the lonely expanses as yogis
Climbing the heights or striding the valleys
Defending the deserts or guarding the marshes
Surveillance in seas and by securing the air
Prime of your youth given to the nation!!
Wind chimes of my land vibrate your feat
We pray for you brave men!!
May the Lord bless you all!!

- A.P.J. Abdul Kalam ji

Foreword

There are moments in the life of a nation when the ordinary measure of courage becomes inadequate. In those moments, some men rise beyond the instinct for survival. They place the nation before themselves and, in doing so, become immortal. The Param Vir Chakra, India's highest military decoration for gallantry in the face of the enemy, bears testimony to such extraordinary courage.



This evocative collection of poems is a heartfelt tribute to those exceptional soldiers who have been adorned with the Param Vir Chakra. Yet, it is much more than a compilation of verses about battles and bravery. Through the sensitivity and imagination of a group of women writers, these poems seek to enter the inner world of the soldier to understand his courage, his sacrifice and ultimately, his love for the motherland.

But behind every citation lies a human story. A soldier who had parents who loved him, a wife who waited for him, comrades who trusted him, and a dream of returning home. The medal records the act, poetry perhaps allows us to glimpse the soul behind it.

What makes this collection particularly meaningful is that these stories are being retold through the eyes and voices of women. Women have always been silent witnesses to the nation's wars. The poetic gaze of these writers therefore adds another dimension to the familiar narratives of military valour. It reminds us that the story of a soldier's sacrifice is never his alone, it is shared by families, comrades and an entire nation.

I compliment the Aksharayan Telugu Women Writers Foundation who have undertaken this noble endeavour. Their verses ensure that these heroes are not reduced to names on memorials or paragraphs in history books. They remain alive in our imagination, in our collective memory and, most importantly, in the values they embodied.

May these poems inspire every reader, especially our young people, to reflect on what courage, duty and service to the nation truly mean.

To the immortal Param Virs, we bow our heads. They gave the nation their today, so that India could have a tomorrow.

Jaihind !

- Major General G. Srinivas, VSM
*General Officer Commanding
Telangana & Andhra Sub Area*

A Perfect Poetic Tribute to Soldiers!

"Oh Soldier.... My Soldier....
You are the five senses of my country
Your eternal vigilance
Your responsible intelligence
Your decisive patriotism
Your courageous nationalism
Always motivates me...
Your love for the country
Your affection for the fellow people
Your unflinching bravery,
Your strategic strikes,
Your selfless sacrifice
Your endless magnificence
Always an inspiration to me...

Yes, you are my real hero—
Either in war or in peace!
Yes, you are my ideal idol—
Either in crises or in compassion!!"

True! The soldier and their lives are unsung legends! Their lives, sacrifices, struggles, sweat and success need to be recorded, rewarded, recognised and respected by the fellow citizens, besides the defence personnel. Their silent grief and roaring graph needs to be appreciated and perpetuated through literature, poetry etc. Because, literature is the best way to pay a humble tribute to the renunciation done by soldiers for the well-being of our lives and continuation of our dreams!

As we know, a poem, a song, a story or any piece of literature will become a perfect testimony and tribute to the war heroes for their restless efforts and relentless manoeuvres in protection of our future!

Even the gigantic cold mountains bow their heads to the commitment of the soldiers! The hot deserts kneels down to the perseverance of the soldiers!! The times and seasons fall flat to the love of the soldiers for their motherland !!!

The 'AKSHARAYAN', the largest women writers foundation in India, had rightly observed the contribution of soldiers for the country in general and the sacrifices of PVCs in special and decided to portray the lives and times of the war heroes of India, through poetry.

Govt. of India confers "Param Vir Chakra" to those great sons of Mother India, who fought against the enemies in protection of the integrity, sovereignty, fraternity, boundaries and peace of the country. As this award is highest honor to the defense personnel in India, it had its own impact and impressions not only to the families of the soldiers, but also to the common public.

The women writers of 'AKSHARAYAN' under the leadership of Smt Inampudi srilaxmi, a prolific Telugu writer and State Awardee, have sensibly presented the lives of the great soldiers in their poems, firstly in Telugu language and compiled into a book, titled "SALAAM SAINIKA" in November 2022. Later, after 4 years, the selected poems have been translated to English and Hindi languages and now compiled all of them at one place, where the poems in three languages and named "SALUTE TO THE SOLDIERS"!

The poems in this collection not only depicted the life journey of the soldiers, but also celebrated their lives.

As such, I feel, the poems may be portrayed specific PVC winners, starts from Somnath Sharma to Vikram Batra, but the poems represent the soul and spirit of all the soldiers of India.

Thus, the book of poems become a unique and special work in the world of literature in India and I believe that it is one of the sincere and heartfelt tribute to the soldiers of India through letters!

Congratulations to all the poets, translators and soldiers!!!

- Dr Harikrishna Mamidi

Director, TG BC STUDY CIRCLE, Hyderabad
8008005231



INDEX

Param Vir Chakra	Telugu Poetess	English Translators	Pg No.
1. Major Somnath Sharma (Posthumous) – 1947–48 Indo-Pak War, Battle of Badgam (1947)	Namani Sujanadevi	V. Shanthi Prabodha	75
2. Naik Jadunath Singh (Posthumous) – Battle of Naushera (1948)	Urimella Sunanda	V. Shanthi Prabodha	77
3. Second Lieutenant Rama Raghoba Rane – Naushera–Rajouri operations (1948)	T. Kiranmayi	V. Shanthi Prabodha	79
4. Company Havildar Major Piru Singh Shekhawat (Posthumous) – Tithwal sector (1948)	Dr. Aduvala Sujatha	V. Shanthi Prabodha	81
5. Lance Naik Karam Singh – Tithwal sector (1948)	Kala Gopal	V. Shanthi Prabodha	83
6. Captain Gurbachan Singh Salaria (Posthumous) – UN Operation in the Congo (1961)	Sujana Raj	Sujana Raj	86
7. Major Dhan Singh Thapa – Battle of Sirijap (1962)	Dr. Kandepi Rani Prasad	V. Shanthi Prabodha	88
8. Subedar Joginder Singh (Posthumous) – Bum La–Tawang sector (1962)	Aitha Anitha	V. Shanthi Prabodha	90
9. Major Shaitan Singh (Posthumous) – Battle of Rezang La (1962)	Raveena Chavan	V. Shanthi Prabodha	92
10. Company Quartermaster Havildar Abdul Hamid (Posthumous) – Battle of Asal Uttar (1965)	Dr. Sobha Perindevi	Dr. G.L.K. Durga	94

11. Lieutenant Colonel Ardeshir Burzorji Tarapore (Posthumous) – Battle of Chawinda (1965)	Kiran Bala	V. Shanthi Prabodha	96
12. Lance Naik Albert Ekka (Posthumous) – Battle of Gangasagar (1971)	Valeti Sailaja	Dr. G.L.K. Durga	98
13. Flying Officer Nirmal Jit Singh Sekhon (Posthumous) – Defence of Srinagar Airfield (1971)	Sudha Sekhar	Sudha Sekhar	100
14. Second Lieutenant Arun Khetarpal (Posthumous) – Battle of Basantar (1971)	Dr. Sarada Hanmandlu	Dr. Dumpa Sridevi	103
15. Major Hoshiar Singh – Battle of Basantar (1971)	Dr. Sammeta Vijaya	Dr. K. Rajani Priya	105
16. Naib Subedar Bana Singh – Operation Rajiv, Siachen Glacier (1987)	Nellutla Ramadevi	Dr. Dumpa Sridevi	107
17. Major Ramaswamy Parameswaran (Posthumous) – Operation Pawan, Sri Lanka (1987)	Vijaya Kishan Reddy	Dr. Dumpa Sridevi	110
18. Captain Manojkumar Pandey (Posthumous) – Khalubar/ Jubar operations (1999)	Ramadevi Kulakarni	Ramadevi Kulakarni	112
19. Grenadier Yogendra Singh Yadav – Tiger Hill (1999)	Dr. Tallapalli Yakamma	Usha Turaga-Revelli	115
20. Rifleman Sanjay Kumar – Area Flat Top (1999)	Kolipaka Sobha Rani	Usha Turaga-Revelli	117
21. Captain Vikram Batra (Posthumous) – Point 5140 and Point 4875 (1999)	Valepe Satya Neelima	Usha Turaga-Revelli	119

A Memorial - The Vedic Significance

The highest recognition and the Award
Accorded by the Indian government,
Conferred to

The sacrifice of the brave soldiers
Of the three types of armed forces
Fought with the enemy hordes
With unwavering courage
Risking their lives for the protection
Of the country
Is the Paramveer Chakra

The memoir of Paramveer Chakra
Is circular in shape
On all sides with the symbols of
The Vajrayudha of Indra
In the middle with the national
Emblem of the country
It looks humble.

Thousands of years back
To kill the demon Vrithasura
Saying, "the body is to benefit others,"
Maharshi Dadhichi sacrificed his life,
gave the bones
In charity to Indra and other deities

The bones became
the most powerful weapon
Vajrayudham of Indra
Killed the demons
Protecting the Gods.

Today, every soldier who fights
Till the last breath
To save the country
Sacrificing life is a reflection
Of Dadhichi

As a symbol of
Dadhichi Maharshi's memory
To the emblem of our nation
On four sides
We have the symbol of Vajrayudha
In the memento of
Paramvir Chakra.

Given to the brave soldiers
The most sacred memoir
With the holy Vaidik history.

The most powerful Vajrayudha
Is the most prestigious award
Param Vir Chakra.
Cheers, cheers and cheers
To the brave soldiers
Receiving it.

- Dr. Kethavarapu Rajyasree

918500 121990



1. The Pashupatastra of the Borders

(Major Somnath Sharma)



Blood need not be shared to guard the land,
Nor born of one kin to hold a helping hand.

When the nation's integrity faced the trial,
He stood as a sentinel, free from guile.
Like a tireless sun, in devotion profound,
He shielded the soil, our sacred ground.
To the soldier who values his life as naught,
The Motherland offers the honor he sought.

Against the vast waves of the enemy's might,
He stood unyielding, a star in the night.
With a roar of courage, he held the fray,
A fierce, undying light in the battle's play.
The Param Vir Chakra sought his name
A mark of his valor, a legacy of fame.

The first to be crowned, the first to lead,
He answered the call with a heroic deed.
In the dawn of the struggle, when Kashmir was besieged,
To the cause of the nation, his soul was pledged.

Soldier, We Salute You!



He divided his force, he sent the word,
A voice of command that the heavens heard.
Though wounded and broken, his arm in a sling,
He fought for the victory that glory would bring.
With courage relentless, he defied the rain of fire,
And forced the enemy to flee and retire.
With no arms left, but a spirit ablaze,
He fought till the end, through the battle's haze.

He promised the base, with his final breath,
To fight to the last, in the shadow of death.
A star in the firmament, a beacon so bright,
He vanished from sight, but remains our light.

A child of the Motherland, a hero for all time,
Your sacrifice, Major, is a victory sublime!

Namani Sujanadevi

Karimnagar
+91 7799305575



Translated by

V. Shanti Prabodha
Varni Nizamabad Dist.
9866703223





2. The Eternal Flame of Valor

(Naik Jadunath Singh)



In the tender days of budding youth,
With the weight of duty in your eyes,
When dreams beckoned, you chose the truth,
To shield the land beneath these skies.
A heavy resolve, a gun in hand,
To save the borders of the motherland,
Oh, Jadunath Singh, the youth of pride,
With the nation's fate by your side!

Renouncing bonds, the worldly maze,
A devotee of Hanuman, a soul so pure,
To serve the Mother was your only gaze,
A heart that stood, steadfast and sure.
You faced the Japanese, the encroaching tide,
Like a roaring lion, with nowhere to hide,
You struck them down like a storm at bay,
And proved the might of the Indian way!
Jammu and Kashmir, the crown so bright,
Glowing like the sun in the morning light,
When Pakistan's shadows sought to tear,

The sacred mark the mountains wear,
You stood a guard with a watchful eye,
A storm of valor against the sky,

Soldier, We Salute You!





From blood-stained peaks to the rocky crest,
You put the enemy to the final test!
Through the frozen pass, the deadly hail,
A Section Commander who would not fail,
At Naushehra's gate, you stood your ground,
Where heavy hearts and courage are found.
With wounds that bled but a spirit tall,
You led the charge, you answered the call,
Till the final breath, you stood like stone,

To the army, a courage you made your own.
Your sacrifice, a sacred lore,
A legacy carved on the eternal shore,
Blessed are the parents who gave you birth,
The jewel of India, the pride of the earth!

Your form now shines like a holy light,
In the mother's heart, through the endless night.
The "Param Vir Chakra" upon your chest,
Will forever blaze in the heavens' rest!

Vurimalla Sunanda

Khammam
94418 15722



Translated by

V. Shanti Prabodha

Varni Nizamabad
9866703223





3. The Unconquerable

(Second Lieutenant Rama Raghoba Rane) ◆▶



A terror in the enemy's heart, a sudden dread,
To those who dared to cross where he had led.
Through heavy fire, amidst the battle's roar,
He moved with grace, a hero to the core.
The nation stands in awe, with heads held high,
Saluting the courage that will never die.

From the soil of Karnataka, a spirit so grand,
Born to protect the honor of our land.
Born in June, in nineteen-eighteen's light,
A life dedicated to the sacred fight.
With devotion to country, his duty refined,
A warrior born, with a noble mind.

From the rank of Nayak to the officer's grade,
He led with honor, never to fade.
An unmatched leader, in every fray,
Lighting the path with the sun's own ray.
In the Kashmir war, where the Jhelum flows,
He overcame hurdles, faced all his foes.
With mines cleared away, he opened the road,
Carrying on his shoulders a heavy load.

Soldier, We Salute You!



A modern-day Arjuna, with aim so true,
He broke the enemy's strength, and saw them through.
With wisdom and wit, he judged the time,
A hero of courage, in his golden prime.
The Motherland adorned him, with pride so deep,
For the promises he made, and the ones he did keep.
The "Param Vir Chakra", a crown for his name,
A mark of his service, a symbol of fame.
Forgoing his rest, forgoing his sleep,
He guarded the borders, with a vigil so deep.
We bow our heads, to the soldier so brave,
Whose life is a story, that history will save.

T. Kiranmai

Nirmal

+91 9441711652



Translated by

V. Shanti Prabodha

Varni Nizamabad Dist.

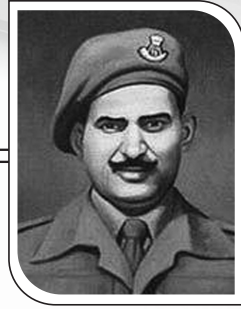
9866703223





4. The Endless Army

(Major Piru Singh Shekhawat) ◆



Many are born, but few truly live,
Beyond the selfish bounds, they have much to give.
Walking the path of the greater good,
They stand for the nation, as martyrs should.

Few families nurture such noble souls,
Who sacrifice all to reach higher goals.
Amongst these legends, shining and bright,
Is Major Piru Singh, a beacon of light..!

A hero of courage, beyond compare,
In the first Kashmir war, he fought with a flare.
Like lightning he struck, the enemy at bay,
Winning the heights in the heat of the fray.

Though wounded and battered, his mission was clear,
To shield the Motherland, devoid of all fear.
With blood flowing free, he rose from the ground,
In his final assault, where glory is found..!

Soldier, We Salute You!



With knife in his hand, and fire in his soul,
He marched to the bunker, to reach the goal.
Though eyes were dimming, and breath grew thin,
He fought with a vigor, determined to win.
His steps may have faltered, but his spirit was fast,
A warrior fighting until the very last.
Even Death stood in awe, of a courage so grand,
As he captured the bunker, for his beloved land..
He rose like a flame, an army of one,
A legend immortal, under the sun.
The earth trembled deeply, his valor to see,
A Param Vir Chakra, for all eternity.

Oh, Major Piru Singh, your story we trace,
With tears in our eyes, and a heart full of grace.
No death can touch you, you live in our song,
To whom millions of prayers and salutes belong..!

Dr. Aduvala Sujatha

Karimnagar
9989558678



Translated by

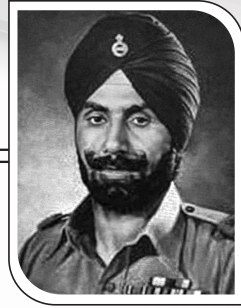
V. Shanti Prabodha

Varni Nizamabad Dist.
9866703223





5. S/o Sardar.. C/o The Fire.. The Cannon of War..!! *(Lance Naik Karam Singh)*



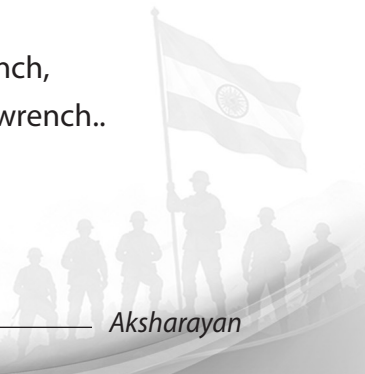
A name synonymous with sacrifice and might,
When the borders burned in the dead of night,
When embers rained from the darkened sky,
He stood as a shield, where the sparks would fly.
Against the invader's treacherous hand,
He was a wall of fire, defending the land..!
In the Admin Box, where the battle roared,
His valiant fight was his greatest reward,
A military honor, pinned to his chest,
A hero renowned, put to the test..!!
In Operation Gulmarg, where the Pashtun creep,
Into the saffron valleys, dark and deep,
Stealing the innocent, bringing despair,
He struck them down, with a fierce, burning glare..!!
More than a soldier, a guardian of peace,
Where defense and protection would never cease.
Though war was a burden, his sacrifice pure,
A tree of mercy, steadfast and sure..
Captain Subedar Karam Singh, the brave!



At the Tithwal line, where the cold winds blow,
In the Richmar Gali, amidst the snow,
When the Pak army struck, tearing bunkers apart,
Eight times they charged, but he held his heart.
To his Sikh Regiment, he gave the command,
"Karo Ya Maro" to fight for the land..!
With the roar of a lion, he tasted the fight,
A warrior unmatched, in the thick of the night...!!
When the enemy surged at India's door,
And orders came to retreat from the war,
He defied even death, with an unbroken will,
Though wounded and bleeding, he stood on the hill..
Throwing a smoke bomb, a daring embrace,
He saved his men with an elegant grace..
C/o Humanity, a savior so grand...!!

In the chaos of war, when connections were lost,
When cannons fell silent, at a terrible cost,
His courage remained, his network secure,
With bravery leading, his path was sure..
Treating the wounded, in the bunker's deep,
With patience and strength, his promise to keep..
A dauntless leader, winning the fray...!!

With a positive attitude, he rose from the trench,
With bare hands he fought, with a powerful wrench..
Pulling a grenade, with audacious flair,
He struck at the foe, with a defiant glare..
With his rifle bayonet, he cried out aloud,





"Ghasa Nikaal.. Ghasa Nikaal..!" a warrior proud..

Piercing the enemy, with valor untold..

C/o Rebel, a spirit so bold..!!

In the Richmar Gali, a flame in the snow,

C/o Ignited Soul, with an inner glow..

From the first President's hands, in the year fifty,

The first living hero, a legend to be,

To receive the Param Vir Chakra, a glory his own..

C/o Glory, on a majestic throne..!!

Hoisting the tricolor, free in the sky,

C/o Grace, where the eagles fly..!!

As a Subedar, his duty fulfilled,

A high esteem, beautifully skilled..

Finally, you embodied our nation's lives..

In these few words, your memory survives..!!

We hold you close in our tear-filled eyes..!!

B. Kala Gopal

Nizamabad

+91 9441632029



Translated by

V. Shanti Prabodha

Varni Nizamabad Dist.

9866703223

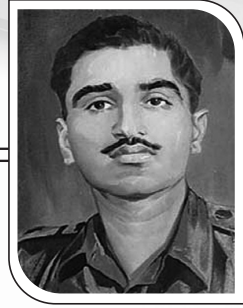


Soldier, We Salute You!



6. A warrior of the world

(Captain Gurubachan Singh Salaria) ◆▶



The sons of valour, crowned with victory
are the eternal pride of every nation
like stars that brighten the infinite heavens,
their glory guides generations yet unborn.
Sacrifice was the strength that
shaped his soul.
The battle field where peace was threatened
became his sacred shrine.

Amid the thunder of ruthless gunfire
he stood unshaken,
a mountain of courage,
steadfast as an ancient pillar.

His valiant spirit blazed like a beacon
His fearless heart and dauntless will
made even mighty foes retreat;
his gallantry thundered through
the war, a lesson written in their defeat.

To guard the cause of lasting peace,
he offered life without regret;
his noble offering became





the divine effulgence
the world shall not forget
His unconquerable resolve
to preserve the fragile dream of harmony,
surrendered his heartbeat

roaring at the tyranny.
His life became a timeless inspiration
inscribing his name upon
the pages of eternity.
History accentuates
his radiant deeds forever shine
for Mother land Bhaarat, proud and free,
his legacy of bravery is a tribute
Not merely born to live and fade,
he lived to serve humanity.
His courage crossed all bounds of land
embracing universal unity.
Though years may pass and ages change,
his name shall never disappear
from the chronicles.
"Captain Gurubachan Singh Salaria
The world's immortal hero"

Written & Translated by

Sujana Raju

Pune, Maharashtra

sujana.raju.v@gmail.com | 9881496122





7. The Pride of Bharat

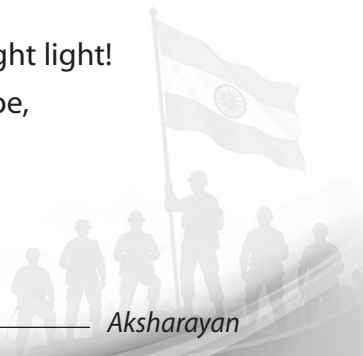
(Major Dhan Singh Thapa)



Across the borders, the Karakoram Pass was seized,
A dark alliance, where shadows were pleased,

To snatch the neighbor's land with a cold, hollow pride,
A treachery born where the wicked reside!
The beauty of Kashmir, the Aksai Chin torn,
The promise of friendship left tattered and worn,
'Hindi-Chini Bhai-Bhai' a mask for the blade,
A stab in the back, in the peace we had made!

At the Indian bunker, the ultimatum they cast,
"Surrender now!"—but the die had been cast.
Under Thapa's command, like a thunderous flame,
Bullets rained down, putting demons to shame!
Each spark grew to fire, a volcanic might,
Turning the tide of the treacherous night.
With no thought for life, only duty in sight,
They turned their cold gaze to a burning, bright light!
Like Abhimanyu, trapped in the web of the foe,
Thapa stood firm, amidst the dark blow.





A heroic display of a warrior's grace,
Terror he sowed in the enemy's face!
Though surrounded, outnumbered, and held in their snare,
No secrets were spilled, no sign of despair.
With truth as their armor, their spirits ran high,
Not a word could be wrung, beneath the cold sky!
No secret to steal, no conquest to gain,
The enemy faltered in shadows and pain.

The "Param Vir Chakra" —a crown for his name,
Dhan Singh Thapa, in eternal fame!
Like a sentinel guarding the Himalayan height,
His glory shall blaze, forever in light!

Dr. Kandepi Raniprasad

Sirisilla

98661 60378



Translated by

V. Shanti Prabodha

Varni Nizamabad Dist.

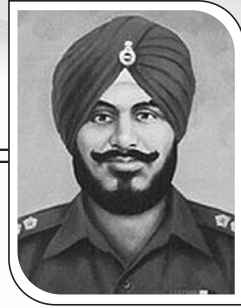
9866703223





8. The Sacrifice of Valor

(Subedar Joginder Singh)



Amidst the borders, rising in strife,
When shadows loomed o'er the nation's life,
In Nehru's era, the world in a fray,
The drums of war echoed far away.
A spark of valor, a brilliant light,
Stepped forward to defend the height,
With life as the stake, a promise so grand,
To shield the honor of our motherland.

Born in Moga, a son of the soil,
In the ranks of the Sikh Regiment, through grit and toil,
With devotion to country, deep in his soul,
A noble purpose, a singular goal.
An eternal legend, in the Army's breast,
A spirit that soared, put to the test,
With courage as his armor, and duty his pride,
He stood as a beacon, with none by his side.

A leader of platoons, with a lion's heart,
He played in the battlefield his valiant part.
Against the waves of the enemy's might,
He fought like a tiger in the fading light.
Many a foe fell to his steady hand,





Defending the pass, the holy land,
At Bam La Pass, he met his fate,
But left behind a name, immortal and great.
Subedar Joginder Singh, a hero so bold,
His story of sacrifice, in heaven is told.
The "Param Vir Chakra", a crown of his grace,
Shining forever upon his face.
A guiding light, a mark of blood,
He lives on as a hero, a rising flood.
Though he departed, his legend stays,
In the heart of the nation, through all our days!

Aitha Anitha

Jagityala

8985348424



Translated by

V. Shanti Prabodha

Varni Nizamabad Dist.

9866703223



Soldier, We Salute You!



9. The Embodiment of Valor

(Major Shaitan Singh)



In the silent drifts of frozen snow,
Where rivers of moonlight softly flow,
A warrior's gaze, with vigilant fire,
Stood guard o'er the borders, never to tire.

Though love awaited in the warmth of home,
His eyes were fixed on the mountain dome,
A guardian born to the soldier's creed,
To serve the nation in its hour of need.
At Rezang La, where the icy breath,
Coupled with valor, danced with death,
He held the mountain with a heart of steel,
A warrior's oath that the foe would feel.
Like a lion roars in the thick of the fray,
He led his men in the darkest day,
At fifteen thousand feet, where the cold winds bite,
He stood as a beacon of undying light.
When waves of enemies surged like a tide,
He stood his ground, with nowhere to hide.
With bullets piercing, and spirit unworn,
He fought till the last, till the break of the morn.





He ordered his men to a safer place,
While he stood alone, with a steady grace,
Behind the rocks, with his gun in hand,
A solitary shield for the motherland.
His body was riddled, his life-force spent,
A tribute of blood, in silent consent.
His sacrifice, a golden ray,
That lights the path for the sons of today.

Oh, Hero of Valor! Oh, Pillar of Might!
What can we offer, in this fading light?
But a teardrop's grace and a grateful prayer,
And a tribute of words, floating in the air.

Jai Hind, Major Shaitan Singh!
Jai Hind, 13 Kumaon Regiment!

Raveena Chavan

Kigali, Ruvanda
9922927527 / 7744066305



Translated by

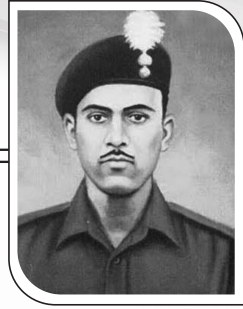
V. Shanti Prabodha

Varni Nizamabad Dist.
9866703223





10. Ballad of Abdul Hamid (Halildar Abdul Hamid)



Oh womb that bore brave Abdul Hamid,
Blessed with dreams of a hundred years
Father, mother, hearts entwined in pride,
Destiny stole your hopes, yet left your tears.

He rose, a son of the sacred soil,
Through scorching suns and monsoon rains,
A sentinel while the village slept,
Guarding peace through sleepless pains.
Four Patton tanks he felled alone,
Each strike a hymn of valor sung;
You trembled at home, fasting in fear,
While his courage through battle rung.
And when the ninth tank claimed his breath,
You wept, yet smiled through grief's embrace

For the nation crowned your noble son,
With Param Vir Chakra's grace.
From Ghazipur's heart his name resounds,
A tailor's child, a martyr's flame;
You prayed through nights of hunger's ache,





As war's dread whispered his name.
Promotion brought both pride and dread,
For every gun he aimed might turn—
Yet faith and duty lit his path,
Till stars of honor brightly burn.

All homes of heroes share this tale,
Of iron anguish, love, and loss;
The flag that soars reflects their smiles,
Their triumph sanctified by cross.
Parents of soldiers—steadfast souls,
Find solace in their sons' pure fight;
Their hearts, though weary, glow with peace,
Till final dawn dissolves the night.

Dr. G. Sobha Perindevi

Hyderabad
9246546584



Translated by:

Dr. GVL Durga

Hyderabad
9346656051



Soldier, We Salute You!



11. The Eternal Victor (Lt. Col. A.B. Tarapore)



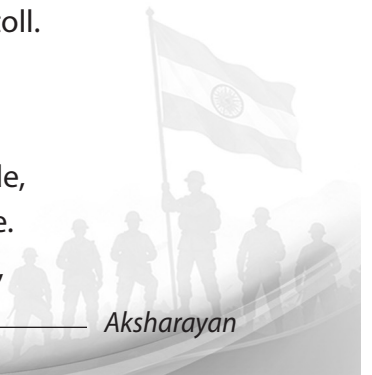
To a warrior, battle is but a game,
Where the goal is glory, the prize is fame.
Not to lose, nor let the foe prevail,
A daring charge where the brave ne'er fail.

In the Indo-Pak war, when the borders shook,
At Phillora, Sialkot the path he took.
The 17 Poona Horse rode into the fray,
To sweep the enemy's tanks away.

Lt. Col. Tarapore, with a steely gaze,
Led the squadron through the battle's blaze.
With tactics sharp and a spirit bold,
He commanded the tanks, a sight to behold.

He charged like a lion, with a roar so deep,
Through the enemy's lines, where the shadows creep.
He sought the end, he struck the blow,
To crush the might of the lurking foe.
To the warrior, war is a test of the soul,
To face not just the enemy, but Death's own toll.

Amidst the hail of fire and steel,
He bore the wounds that only heroes feel.
The battlefield shook, the earth trembled wide,
As he stood his ground, with nowhere to hide.
Like a spark in the night, he burned so bright,





A guiding force in the thick of the fight.
War is a maze, a path to the light,
To win the struggle, or fall in the fight.
With his final breath, his duty he kept,
While the motherland watched, and the enemy wept.
one-man army, in the heart of the fray,
He carved his name in the light of the day.
Whether in victory or sacrifice grand,
He stands as a legend of this sacred land.
Lt. Col. A.B. Tarapore, the hero so true,
The "Param Vir Chakra" belongs to you.

Whether winning or losing, or falling in strife,
You conquered death with the gift of your life!

Kiranbala

Armoor
9848868067



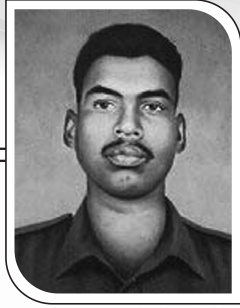
Translated by

V. Shanti Prabodha
Varni Nizamabad Dist.
9866703223





12. Ode to Lance (Naik Albert Ekka)



Upon Gangasagar's steadfast shore,
A warrior rose, his heart of ore
Forged in fire, in grief, in pain,

Yet unyielding through the storm and strain.
His comrades fell, the earth did quake,
But his spirit none could ever break;
The flag's soft flutter stirred his soul,
Its rhythm made his courage whole.

A master born of war's fierce art,
With weapon steady, fearless heart,
He soared like hawk through battle's cry,
Where freedom's dream refused to die.
In Bangladesh's dawn he lit the flame,
Of liberty's call, of India's name;
Through valor pure, through blood and strife,
He gave a nation breath and life.
The bunkers fell, the tyrants reeled,
His plan precise, his fate was sealed;
He sounded victory's clarion tone,
And met his death—yet stood alone.





O Param Vir, thy name resounds,
In every heart where honor bounds;
Thy martyrdom, thy sacred fight,
Still guides our souls through darkest night.
When India wept, and freedom soared,
The world beheld what faith restored;
A beacon bright for soldiers' way,
A light that shall not fade away.

Veleti Sailaja

Siddipeta
9441544806



Translated by:
Dr. GLK Durga
Hyderabad
9346656051



Soldier, We Salute You!



13. A Shield in the Sky

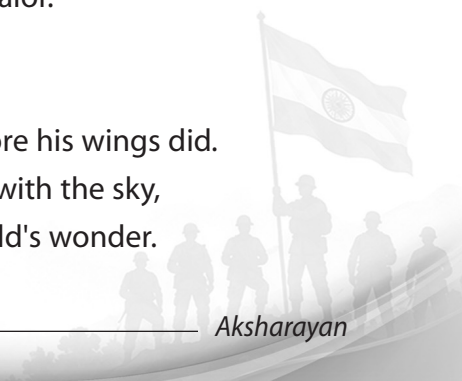
(Flying Officer Nirmal Jit Singh Sekhon) ◆▶



He was no ordinary man, but a modern Arjuna,
whose eyes saw only duty and the honor of his motherland.
Beyond the pulls of passion and hatred,
he found his purpose in unwavering devotion to the nation.

A Bhishma of our age, steadfast and unyielding.
When the enemy marched upon our land,
and darkened skies threatened Srinagar's stand,
"Let Srinagar stand ready," he seemed to declare,
as he rose alone through the freezing air.
Like a lone warrior answering duty's call,
he faced the tempest, determined not to fall.
Into the storm of battle he flew,
with steadfast courage and honor true.

To those who knew no language but the thunder of guns,
he replied with the fierce poetry of valor.
Who else could it be but Sekhon?
Inspired by his father's dreams,
his young heart took flight long before his wings did.
He gazed at the heavens, fell in love with the sky,
and reached for the moon with a child's wonder.





When enemy aircraft threatened the skies above Kashmir,
he rose to confront them, undaunted and alone.
Above Srinagar's runway, amid roaring engines and fire,
he challenged overwhelming odds with unflinching resolve.

At thirty-five thousand feet,
where courage and sacrifice write the history of nations,
he proved that a fighter pilot's duty
never bows before danger.
As his squadron prepared for battle,
he saluted in silence,
his gaze fixed upon Srinagar,
veiled in winter mist.
Clad in courage and armed with patriotism,
he struck fear into the enemy,
shattering arrogance, scattering formations,
and defending the skies he had sworn to protect.
Even as flames engulfed his aircraft,
even as he descended toward destiny itself,
his spirit remained unbroken.
In death, his glory only soared higher.
The first and only officer of the Indian Air Force
to be awarded the Param Vir Chakra,
he became an immortal legend.

Yes, while we release white doves as symbols of peace,
there are moments when peace itself must be defended
by heroes like Nirmal Jit Singh Sekhon.
His valor was a beacon of victory.

Soldier, We Salute You!



His courage was a banner of faith.

His dedication was an eternal inspiration.

His selflessness remains a flame that never fades.

And so he lives on,
not merely in history books or in medals of honor,
but in every tricolor that dances in the wind,
in every young pilot who looks to the sky and dares to dream,
and in every grateful heart that remembers
the warrior who became a shield in the sky.

Written & Translated By

Sudha Sekhar

Milwaukee, USA

+1 6306216815





14. THE RED BLOOD SUN! (Arun Khetarpal)



When the demonic fangs of religious fanaticism
Threatened to snatch away our existence,
A handful of resolve rose as a soldier—
Giving birth to yet another hero!

To pierce through the darkness,
The monumental effort of the Red Blood Sun!
To repay the debt owed to the soil,
An unswerving dedication and devotion,
To lead the Motherland to victory—
Lieutenant Arun Khetarpal's heroic struggle!

As patriotism flowed like a legacy through every vein,
His playful young age erupted like an atomic bomb!
The heart of his father, Brigadier Khetarpal,
Swelled like an ocean of immense pride!
In the Indo-Pakistani Battle of Basantar,
The battleground became a playground where
Arun played with bullets!
Riding like a fierce storm on a wild horse,

Soldier, We Salute You!



A lion cub charging single-handedly against the enemy alliance!
A heroic battle where ten tanks were destroyed with just two tanks—
Inscribed in gold upon the canvas of the Indian Military!
In his burning Famagusta tank,
He rose like a tsunami of radiant flames!
Decimating the enemy hordes,
He sanctified the battlefield of Shakargarh!

His death is immortality;
His sacrifice, unforgettable through eternity!
The moment that filled the tricolor with goosebumps,
The moment that made the land of Bharat swell with pride—
A life that glowed bright as a lamp,
Spreading rays of patriotism far and wide,
And claimed the Param Vir Chakra!

Dr. Sharada Hannandlu

Nizamabad
9912275801



Translated by

Dr. Dumpa Sridevi

Hyderabad
9440481111





15. A SALUTE TO THE SOLDIER

(Major Hoshiar Singh)



He is the one of Mother India's cherished blessing
Heera Singh and Madhuri's beloved child
He is Dhani Devi's heart ruler
The country's authentic soldier

Surpassed in studies, peerless in sports
His step is fierce either in play field
or war ground and glory would rise
His courage would shine before every eye.

As a proud Third Grenadier, he stood tall,
Breaking through the enemy across Basantar's tide.
Overcoming every barrier with fearless might,
He drove the enemy back with pride.

Vigilance lived within his very name
Alertness soaked in his every stride
He defended the four relentless attacks
Defeating the three platoon Pak tanks with pride

Though a bullet pierced his leg, he marched ahead,
Leading the charge through fire and flame.
Standing firm against the enemy's assault,
He etched his valour into eternal fame.

Soldier, We Salute You!



At the sight of his courage,
At the strength of his valour,
The Tricolour smiled with pride.
For the hero of supreme sacrifice,
The Param Vir Chakra found its warrior.

While still in service,
The nation's highest honour adorned his chest.
Mother Earth beamed with pride.

Promotions came in swift succession,
For the hero of the Second Indo-Pak War.
A gallant soul at the National War Memorial, Delhi.
An eternal inspiration to generations.

Param Vir Chakra Awardee
Major Hoshiar Singh—
Brave warrior and a valiant soldier
Accept our heartfelt salute.

Dr. Sammeta Vijaya

Hyderabad
9989820215



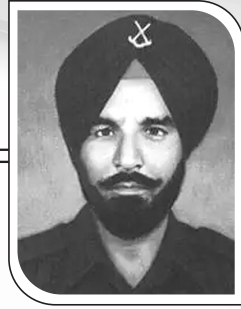
Dr. K. Rajani Priya

Hyderabad
+91 88977 86788





16. FIRE ARROW! (Subedar Bana Singh)



You and I fight a battle just to live,
But he fights holding death in his fist
so that we can live with confidence!
You and I may have a family of four,
On his head rest 120 crore families!
On his shoulders rests not just a barrel rifle,
On his shoulders rests the glory and
honor of 90 crore citizens!

He is a fire arrow...
He alone is a hundred-man army!
To avenge the brave soldiers
lost in the failed Operation Meghdoot,
To flutter the Tricolor flag atop the
peak of Quaid-e-Azam Jinnah Post,
To recapture the Siachen glacier
usurped by the enemy and return victorious,
He took a vow to restore our fading glory.
Choosing danger willingly and embracing hardship,
Becoming the most vital part of Operation
Rajiv from the Jammu & Kashmir Light Infantry Regiment,
He displayed blazing, boiling courage!
Can the world's most dangerous battlefield deter him?

Soldier, We Salute You!



Can icy snow mountains at minus degrees
extinguish his flowing lava of fire?
Can constantly changing extreme
weather halt his burning valor in every atom?
Can 5,000 meters of snow accumulation
stand against patriotism taller than Mount Everest?
Can a snowstorm stop the battle lion that challenged death itself?

There stood the impregnable peak,
an extraordinarily perilous journey,
Here aimed the arrow,
its target the enemy stronghold itself!
Though the path was blocked and
the journey exceedingly tough,
The army of four pressed forward,
And our arrow—their leader lionóled the way!

Bone-chilling cold...
The icy embrace of death right ahead!
Yet the warrior lion could not stop the fight;
Pledging his life,
gritting his teeth to suppress the pain,
Crossing the avalanche,
climbing the snow mountain through another route,
He eliminated the enemies lying in wait inside the bunkers!
Wiping out three enemies in hand-to-hand combat,
He presented the world's second-highest peak as a gift to the nation!
The Subedar who planted the Indian flag atop the fortress of ice!
A glorious hero who gifted his own name to the mountain peak!



Renaming Quaid-e-Azam Post as 'Bana Top',
Receiving honor from the Army,
Awarded the prestigious Param Vir Chakra by the Government,
A champion who brought victory to the country and won himself!

He is a fire arrow...

A young lion who knows no defeat!

He is Param Vir Chakra Bana Singh!

Nellutla Ramadevi

Warangal

94406 22781



Translated by

Dr. Dumpa Sridevi

Hyderabad

9440481111

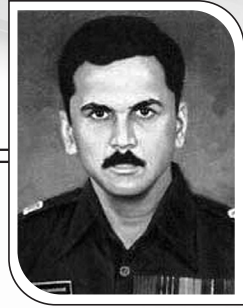


Soldier, We Salute You!



17. Vir Chakra

(Major Ramaswamy Parameswaran) ◆➤



Whether it is the motherland or another battlefield,
The duty assigned by the nation must be fulfilled!
Whether in scorching heat or snowy mountains,
One must constantly battle with death!

It was the decade of the eighties,
An incessant civil war in Sri Lanka,
A time when riots erupted
Between the Tamils, Lankans, and the LTTE.
Our army, which is the nation's wealth,
Journeyed to Lanka to establish peace in the burning land,
Led by Major Ramaswamy Parameswaran!

Heroes who know warfare
Must also know restraint.
It is not a battle fought for just one side to win,
It is a war fought for peace
Where both parties achieve victory!!

Appeals, advice, warnings, threats—
When all efforts for peace failed,
And in the tired moments of resting...





An incessant shower of bullets by the LTTE...

Even as fellow soldiers fell to the ground right before his eyes...

Even knowing his life was fading due to a bullet wound...

Fighting until the very last minute to protect his soldiers,

The hero who surrendered his life is Parameswaran!

Remembering the well-being of millions of people,

He repaid the debt of his motherland.

O servant of the nation, crores and crores of salutations!

Turning his heart to stone,

Forged like a shield for protection,

what can we give to this warrior?!

O soldier who made the national flag flutter high

with his supreme sacrifice,

Whatever is more valuable than a salutation is dedicated to you!!

The Param Vir Chakra that binds together millions of hearts!!

N. Vijaya Kishan Reddy

Hyderabad

984886808



Translated by

Dr Dumpa Sridevi

Hyderabad

9440481111



Soldier, We Salute You!

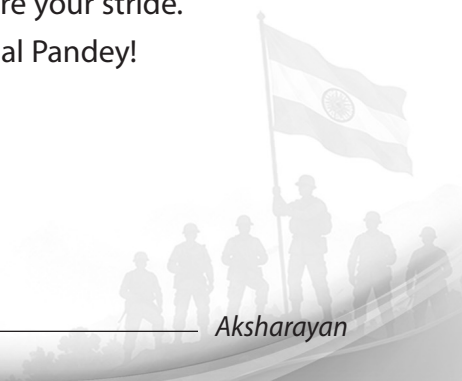


18. HE IS THE VERY SUDARSHANA CHAKRA (Captain Manoj Kumar Pandey) ◆➤



How glorious you are,
O Mother Bharati!
Blessed is the womb
That gave the nation
A son like Captain Manoj Kumar Pandey.
Long before destiny called,
He had declared with unwavering resolve,
"The Param Vir Chakra shall be my life's achievement,
My life belongs to the defence of my Motherland."

Bridging every peak and valley,
A blazing wildfire
In the darkest night,
You became the radiant spark
That tore apart the veil of gloom.
Your fearlessness
Became the nation's assurance;
Even Death itself Stepped aside before your stride.
You rose once more.... Another Mangal Pandey!
O fearless warrior,
Captain Manoj Kumar Pandey!





Your mother's heart Swells with immortal pride;
Your sacrifice Awakened the soul of a nation.
You played Holi with bullets,
So that Diwali Could brighten our doorsteps.
To your fearless heart,
Boulders turned into blossoms;
Grenades became mere playthings,
And the enemy trembled
Before your indomitable courage.
By capturing Kukarthanng,
You paved the path For Operation Vijay.
O valiant one, The Jubar Hills Still echo your battlefield glory.
Commander of the Gorkha Rifles,
Leadership found its meaning in you,
Courage found its voice in you.
You marched ahead,
Leading your men from the front,
A guardian
Who sang a lullaby of peace To the nation.

You were The blazing eye of Lord Shiva,
The divine Sudarshana Chakra of Lord Narayana.
Though two bullets Pierced your chest,
You stormed the enemy With undiminished fury.
Another Alluri...
Another Subhash...
A Parashurama
Without the battle-axe...
The living embodiment Of every heroic virtue.

Soldier, We Salute You!



O brave soldier!
Without warriors like you,
We have no life,
No breath,
No tomorrow.
Trusting your eternal vigil,
Mother India Sleeps in peace,
Like an innocent child Cradled in her mother's lap.
You blazed forth
As the living Sudarshana Chakra..
O very Param Vir Chakra!
These humble verses
Are my offering at your feet,
Captain Manoj Kumar Pandey.
Protect us...
Guard us forever,
O Great Soul!

Written & Translated By
Ramadevi Kulakarni,
Hyderabad
8985613123





19. The Conqueror of Death

(Subedar Yogendra Singh Yadav)



Oh young hero, beloved son of soldier Karan Singh Yadav,
stepping into the dawn of youth with a blazing spirit!
Leaving behind warm cocoon of family
to hold the cold metal of a deadly rifle,
you pledged your very life to the Indian nation.
Forsaking sleep and peace,
driven by a sense of duty
you walked fearlessly
in your brave father's footsteps.
To repay the sacred debt owed to Mother India,
Sans fear of death, far from mother's embrace.

Right on time and resolute, you blew the conch
and charged forward into the tempest of war!
To shatter the enemy bunkers atop Tiger Hill,
you braved the sheer, deadly ice-clad heights
with the brave souls of the 18 Grenadiers.
Though struck by enemy fire,
drenched in a heavy rain of bullets,
you refused to yield or retreat.
With brilliant tactics,
you hurled grenades into enemy land
laying the hostile forces to waste.
Ascending the mountain peak, leaving a trail of brave blood,
you turned the deadly battlefield into an arena of supreme valor.

Soldier, We Salute You!



Capturing the second bunker,
you took the enemy head-on.
As bullets tore through you and shattered your arm
you showed no fatigue, erupting like a storm!
You wiped out the adversary until you collapsed.
As death came to claim you,
you tore open the jaw of death,
kissed the sacred soil of the motherland,
and endured a 16-month struggle between life and death

You were an unyielding ray of hope and sacrifice,
you vanquished the heavens,
rekindled the flame of life,
and returned triumphantly back as duty beckoned

Oh Mrityunjaya Yogendra—the Conqueror of Death—
holy soul who received Param Vir Chakra
at a tender young age,
we offer these fervent words
as a reverent homage at your feet!

Dr. Tallapalli Yakamma

Mahaboobabad

9704226681



Translated by :

Usha Turaga-Revelli

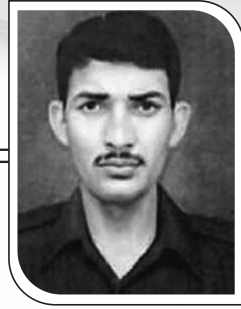
Hyderabad

9848429169





20. Indebted to the Motherland (Rifleman Sanjay Kumar)



Oh beloved child of Mother India, brave Sanjay Kumar!
Jai Jawan! Victory to the Soldier!
Echoing the timeless cry of Jai Jawan, Jai Kisan,
you stand as a protective shield,
unflinchingly guarding this vast land
You shall forever bask in
benevolence of Mother Bharat.
Born in a remote village of Himachal Pradesh,
you grew with a burning desire to serve the nation.
No matter how many setbacks,
your resolve carried you forward
Your dream came true as you donned the colours
of a proud Rifleman in the Armed Forces.

With your courage as your backbone,
you were admired in the 13th Battalion.
With relentless vigilance, you kept watch over the nation—
braving the piercing mountain cold, scorching sun, and pouring rain,
keeping sleepless vigil high atop Point 4875.
When hostile forces set foot upon our sacred soil,
you unleashed a strategic storm of gunfire
Nation's safety as your command,

Soldier, We Salute You!



you faced the enemy perched on great heights
you were a true soldier making a path
for fellow men advancing from below,
hitting enemies in the bunkers
and marching ahead with vigour
As you pressed toward the second bunker,
the enemy ambushed you in a sudden, treacherous burst of fire.
Though bullets pierced your legs,
you refused to stop, O Soldier.

Even when the loss of a comrade
Captain Vikram Batra tore at your heart,
you held on to the warrior's creed:
Victory or Martyrdom it is !
With supreme valor, your life on line,
you waged an unforgettable fight.
Honoring your grit, service, and battle skill,
you were honoured with Param Vir Chakra

As the great poet declared:
Birth is yours, death is yours,
but your whole life belongs to society.
Under your vigilant care,
we feel peaceful and safe
How can we repay such a sacrifice
except offer you heartfelt salutation!
May your immortal fame shine for all eternity!
Jai Jawan! Victory to you, brave Sanjay Kumar!
Victory to the bearer of the Param Vir Chakra!
Victory to the beloved son of Mother India!



Kolipaka Sobha Rani

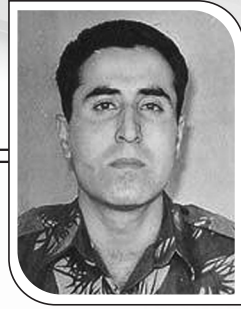
Karimnagar
9491367409

Translated by :
Usha Turaga-Revelli
9848429169





21. He is a Marvel (Captain Vikram Batra)



Yes, truly, he is a marvel
Standing like a steadfast charioteer
between the relentless march of Time
and the silent flow of tears.
He competes every single day
with the sun's blazing ray
a sentinel with ever-watchful vision,
watching over every direction
like the three-eyed Shiva,
an embodiment of mighty Pashupatastra

He shines like the morning star.
day or night with no fatigue or fear
With unfailing precision and lightning speed,
he fires his rounds into the battle field
Mindful of even his own shadow,
rifle as the truest friend
sun as his only kin
he is the brave soul
who never retreats
or shies away from war



Unflinching honesty his nature,
Indefatigable courage his core
Breaching deadly strategies with master strokes,
vanquishing weapons with sharp force
he radiates the brilliant splendor of the Sudarshana Chakra.
Seasons change, unshaken is his spirit
enduring like the timeless elements
Bound by a sacred oath to serve his motherland,
a decorated hero of Param Vir Chakra award

To make Bharat proud
to thrill this holy motherland
he offered his mortal life like a fleeting petal
a floral offering at the feet of Mother India
He the lionhearted, valourous soldier
rests forever in the loving embrace of the Mother.

Valape Satyaneelima

Wanaparti
9502156813



Translated by :

Usha Turaga-Revelli

9848429169



*The First Ever
Tri-lingual Anthology of
Poems on the Lives of Indian Soldiers*

सैनिक तुझे
सलाम!
**SOLDIER,
WE SALUTE YOU!**
సేనానికి సేనాన!

*A Poetic Tribute to the Param Vir Chakra Soldiers
in Hindi, English, Telugu Languages*

हिंदी • English • తెలుగు



Aksharayan Telugu Women Writers Foundation
Abhigna Bharath Organisation

అక్షరాయణ తెలుగు విమెన్ రాइटర్స్ ఫౌండేషన్
అభిగ్నా భారత్ ఆర్గనైజేషన్



నా సమాధి చెంత ఏడ్వకండి..!

నన్ను వెతుక్కుంటూ వచ్చిన నా హితులారా!
నా సమాధి వద్ద నిలబడి నా కోసం ఏడ్వకండి
నా ఖననస్థలి చెంత నా కోసం చింతించకండి
నేను అక్కడ లేను నేను అక్కడ నిద్రిస్తూ కూడా లేను!
నేను ఇప్పుడు సహస్ర పవనాల వీచికను
మంచుపై కురుస్తున్న వజ్ర వాహికను
కోతకొచ్చిన ధాన్యంపై ప్రసరిస్తున్న సూర్యరశ్మిని
సున్నితంగా కురుస్తున్న శిశిర కాలపు వర్షాన్ని!
వేకువ సందడికి నువ్వు మేల్కొన్న క్షణాన
వేగంగా సంచరించే జనం హోరును నేనే
ఆకాశంలో వృత్తాకారంలో
ఎగురుతున్న ప్రశాంత పక్షుల హోయలును నేనే
రాత్రి చీకట్లలో
మిళుకు మిళుకున మెరిసే మెత్తని నక్షత్రాల్ని నేనే..!

అందుకే నా సన్నిహితులారా!

నా సమాధి వద్ద నిలబడి - నా కోసం దుఃఖించకండి
నేను అక్కడే ఆగిపోలేదు - నేను మరణించనూ లేదు..!

ఆంగ్ల మూలం :
మేరీ ఎలిజెబెత్ ఫ్రెయ్

స్వేచ్ఛానువాదం:
డా॥ మామిడి హరికృష్ణ
8008005231

పరమ వీర చక్ర - అకుంతిత ధైర్యానికి నివాళి

ఇది హృద్యమైన కవిత సంకలనం

దేశ చరిత్రలో అసాధారణ పరాక్రమాన్ని ప్రదర్శించవలసిన క్షణాలు వస్తుంటాయి. అటువంటిప్పుడు మొక్కవోని ధైర్య సాహసాలు చూపిన ధీశాలురను గౌరవించుకునే సత్కారం 'పరమ వీర చక్ర' - భారత సైన్యంలో అత్యున్నత పురస్కారం. అటువంటి వీరులను దేశ ప్రజలందరికీ పరిచయం చేస్తోంది 'సలాం సైనికా!' పుస్తకం.

పరమ వీర పురస్కార గ్రహీతల గురించి కవయిత్రులు సమర్పించిన హృద్యమైన శ్రద్ధాంజలి ఈ అక్షరాంజలి. ఈ కవితలు యుద్ధ గాథల కంటే కూడా సైనికుల అంతర్మథనం, వారి ప్రాణ త్యాగాలు, వారిలోని దేశభక్తి గురించి పాఠకుల కళ్ళు చెమర్చేలా, మనసు ఆర్ద్రమయ్యేలా చెప్తాయి. అక్షరయాన్ - తెలుగు ఉమెన్ రైటర్స్ ఫౌండేషన్ కవయిత్రుల ఈ అద్వితీయమైన ప్రయత్నానికి, వారికి నా హృదయపూర్వక ధన్యవాదాలు తెలియజేస్తున్నాను.

సైనికుడు పొందే ప్రతి పతకం వెనుకా ఒక మానవీయ కథనం ఉంటుంది. అందులో అతని తల్లిదండ్రుల ప్రేమ, అర్ధాంగి నిరీక్షణ.. ఇంటికి తిరిగి వెళ్ళాలనే స్వప్నం దాగి ఉంటాయి. సైనికుడు పొందిన పతకం అతని వీరత్వానికి చిహ్నం కాగా, అతని గురించిన కవిత అతని అంతరంగ ఆవిష్కరణగా నిలుస్తోంది.

యుద్ధాలకు మూగ సాక్షులుగా నిలిచిన మహిళల దృక్పథం ఈ సైనిక వీరులను కథనాలను సరికొత్త కోణంలో చూపిస్తోంది. ఒక సైనికుడి త్యాగం అతని యావత్ కుటుంబం, సమాజం, దేశం పంచుకునే దుఃఖం. అది దేశానికే గర్వకారణం. ఈ కవితల ద్వారా కవయిత్రులు ఆవిష్కరిస్తున్న మనసు దృష్టి అదే.

అమ్మలైన కవయిత్రులు చేసిన ఈ ప్రశంసనీయ ప్రయత్నాన్ని మనస్ఫూర్తిగా ఆభినందిస్తున్నాను. అక్షరయాన్ తెలుగు విమెన్ రైటర్స్ ఫౌండేషన్ సభ్యులందరికీ ధన్యవాదాలు. వీరి కవితలు మన ఈ వీరులను కేవలం చరిత్ర పుటలకే పరిమితం చేయకుండా, మన అందరి సామూహిక స్మృతిలో సజీవంగా నిలుపుతాయి. ఈ కవితా సంకలనం మన యువతకు ధైర్యం, కర్తవ్యం, దేశ సేవ యొక్క నిజమైన అర్థాన్ని తెలియజేస్తుందని ఆశిస్తున్నాను. రేపటి మన భద్రమైన భవిష్యత్తు కోసం ఈనాటి తమ వర్తమానాన్ని త్యాగం చేసిన ఆ అమరవీరులకు మనం శ్రద్ధాంజలి ఘటిస్తున్నాం.

జై హింద్!

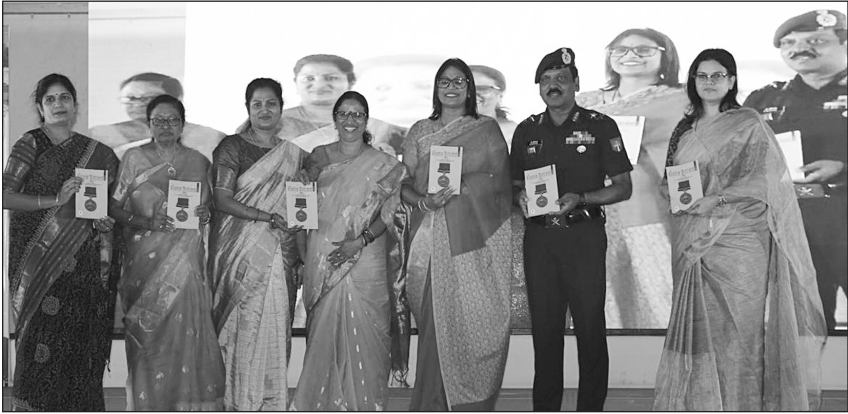
- మేజర్ జనరల్ జి. శ్రీనివాస్

విశిష్ట సేవా మెడల్,

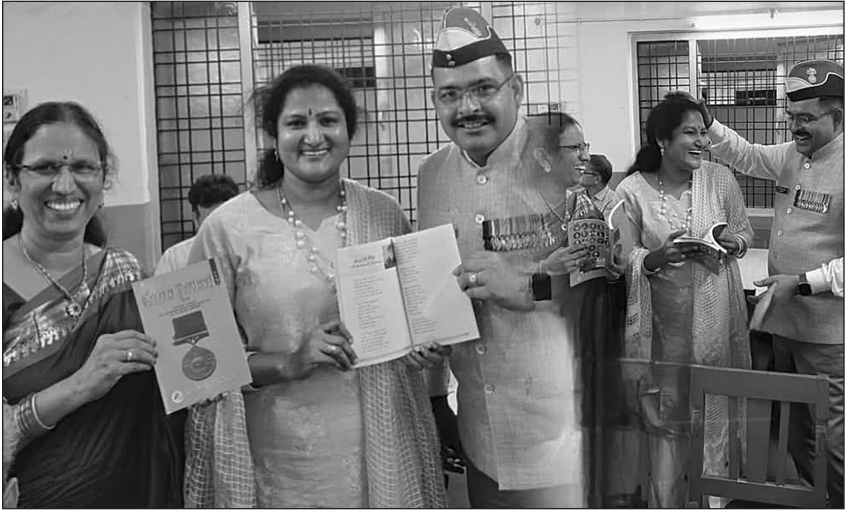
జనరల్ ఆఫీసర్ కమాండింగ్

తెలంగాణ-ఆంధ్ర సబ్ ఏరియా

MEMORIES



Major General Srinivas ji with the Book Salam Sainika and Aksharayan Team



A Memory with Sri Yogendra Singh Yadav (Param Vir Chakra) with Aksharyan Team



Book Launching Ceremony with Airforce Team (2022 November)

జయహో పరమ వీర చక్రధారి!

సోల్డర్... ఈ పేరు పలుకుతుంటేనే ఎదలో ఏదో భరోసా కలుగుతుంది, గౌరవభావం ఉద్భవిస్తోంది. ఈ దేశంలో గుండెల మీద చెయ్యేసుకొని నిశ్చింతగా పడుకోవాలనే ప్రతి మనిషి పొగిడి తీరాల్సిన వ్యక్తి, పూజించాల్సిన శక్తి సోల్డర్. మీరెప్పుడూ విధి నిర్వహణలో సరిహద్దు కంచె దగ్గర కళ్ళనే కెమెరాగా చేసి దేశ రక్షణ కోసం పహారా కాస్తూనో, థార్ ఎడారి మండుటెండల్లో భగభగ మండే బుల్లెట్ల వర్షమై మెరుస్తూనో, కశ్మీర్ మంచుకొండల్లో దేహాల్ని పేల్చే పిరికి తీవ్రవాదుల ముందు గుండుకెదురుగా గుండె నిలిపి చిరునవ్వుతో దేశానికి సెల్యూట్ చేస్తూనో, తూరుపు చిట్టడువుల్లో ఎక్కుపెట్టిన విల్లులా సంచరిస్తూనే వుంటారు. ఉదయాన కాపలా కాసే సూర్యుడిలా, రాత్రికి పహారా కాసే చంద్రుడిలా నిరంతరం దేశం చుట్టూ పరిభ్రమిస్తూ ఉంటారు. ప్రకతి విపత్తులొచ్చినప్పుడు పరుగెత్తుకొని వచ్చి అదుకొనేది వారే. వరదల్లో కొట్టుకుపోతున్న వారిని ఒడ్డుకు చేర్చి అదుకొనేది వాళ్ళే. భూకంపల్లో కూరుకుపోతున్న వారిని ప్రాణలొడ్డి కాపాడేది వాళ్ళే. భారీ అగ్ని ప్రమాదాల్లో భస్మమై పోతున్న వాళ్ళని కాపాడి దేశ జెండాలా నిలబడి ఆత్మ విశ్వాసాన్ని నలుదిశలా పరిచేది వాళ్ళే. దేవుడు మొక్కితేనే వచ్చి కాపాడుతాడు. కానీ, సోల్డర్ దేశానికి ఏ కష్ట వచ్చినా తానున్నానంటూ వెన్ను తట్టి నిలబడి మన దేశాన్ని నిలబెడతాడు. అదే సోల్డరిజం - పేరు తెలియదు, ఊరు తెలియదు, జాతి, మతం తెలియదు... అందరికీ ఒకే బ్రాండ్.. అదే సోల్డరిజమ్. వారి ఔన్నత్యం ఎంతో గొప్పది. బంధాల్ని, అనుబంధాల్ని, కుటుంబాల్ని వదిలేసి దేశరక్షణ బంధానికి కట్టుబడి నిత్యం దేశసేవలో తరించే పూజారులు వారు. అమ్మా నాన్నల దీవెనలు ఉండాల్సిన తల మీద ఇసుప టోపీ పెట్టుకొని చిన్నారి బిడ్డల లేత ముద్దుల ముద్రలు ఉండాల్సిన ముఖం మీద నల్లటి చారికలు గీసుకొని భార్య చేతిని స్పర్శించాల్సిన చెయ్యిని ట్రిగ్గర్ మీద ఉంచేసి ఎన్ని అంతర్యుద్ధాల్ని గుండెల్లో మోస్తుంటారో కదా! జ్ఞాపకాల పుటల్లో ఎన్ని దిగుళ్ల నెగళ్ళను చవి చూస్తుంటారో కదా! మనసును రాయిలా మార్చి కంటి రెటీనా వెనుక ఎన్ని అశ్రువులను గడ్డ కట్టించి ఉంటారో కదా ! పెదాల మాటున రక్తబంధాన్ని, పాదాల దిగువన స్నేహ సుగంధాన్ని పోసి ఒక లక్ష్యంతో, ఒక నినాదంతో ఒకే ఒక్క గమ్యంతో దూసుకెళ్తుంటారు కదా!

దేశభక్తి అనేది ఇన్స్టంట్గా ఏ సిరంజిలోనో పోసి ఎక్కించే ఇంజక్షన్ కాదు. ఇది చిన్నప్పటినుంచి హృదయంలో ఎదగాలి. అందుకు తల్లిదండ్రులు, గురువులు బాధ్యత వహించాలి. నా మట్టుకు నాకు మా అన్న చెప్పిన ఎన్నెన్నో విషయాలు ఎంతో గొప్పగా అనిపించేవి. మా అన్నయ్య ఎయిర్ ఫోర్స్ లో మెకానికల్ వింగ్ లో పనిచేసేవారు. అస్సాంలోనూ, లడక్ లోనూ తన అనుభవాలు చెప్తుంటే నా ఒళ్లు గగ్గుర్నొడిచేది. మా అన్నయ్య (ఐ.సి. శేఖర్) మాకు హీరోలా కనిపించేవాడు. అణువణువు దేశభక్తిని నింపుకొని ఎంత నిబద్ధంగా పనిచేస్తున్నారో చెబుతూ కేవలం వారి గురించే కాక ఎందరో సైనిక వీరుల సాహసగాధలను గొప్పగా వినిపించేవారు. అందుకే నేనెప్పుడూ ఎక్కడ ఏ ఆర్మీ కార్యక్రమం జరిగినా నాకు తెలిస్తే తప్పక వెళతాను. అది నాకెంతో మానసిక సంతృప్తినిస్తుంది.

19 ఏళ్ళ వయసులో దేహంలోకి బుల్లెట్లు దూరి తూట్లు పొడుస్తున్నా లెక్కచేయక కార్గిల్ వార్లో శిఖరంపైకి ఎక్కి సైనికులకు దారిచూపిన వేగుచుక్క సుబేదార్ యోగేందర్ సింగ్ యాదవ్ను కన్న నేల మనది. 'నేను తిరిగి వస్తాను. మన త్రివర్ణ పతాకాన్ని కార్గిల్ పై ఎగరేసిన తర్వాతైనా, లేక త్రివర్ణ పతాకాన్ని నా దేహం చుట్టూ చుట్టుకొని శవంగావైనా సరే, నేను ఖచ్చితంగా విజయంతోనే తిరిగి వస్తాను' అని తల్లి కమల్ భాత్రాతో చెప్పిన వీర కిశోరం కెప్టెన్ విక్రమ్భాత్రా నడయాడిన నేల ఇది. ఇండో-పాక్ యుద్ధంలో మేజర్ జనరల్ ఇయాన్ కర్డోజ్ మందుపాతరలో కాలు తీవ్రంగా గాయపడితే తనకు తానుగా ఆ కాలును కత్తరించుకొని యుద్ధంలో తిరిగి దూకి దేశం ముక్కలు కాకుండా ఉండడానికి తాను ఎన్ని ముక్కలైనా ఫర్వాలేదని చెప్పారని విని వారి స్థైరం ఎంత గొప్పదా అని ఆలోచించేవాళ్ళం.

దేశభక్తి నిస్సందేహంగా మందగిస్తున్న క్షణాల్లో, దేశద్రోహం నిర్లజ్జగా ఎదుగుతున్న తరుణంలో, అంతులేని అవినీతి అంతటా వ్యాపిస్తున్న స్థలాల్లో, అంతుపట్టని అభద్రత అందరినీ వేదిస్తున్న కాలాల్లో సైతం 'మమ్మల్ని ఏమార్చి దేశద్రోహాలు తప్పించుకోగలుగుతారా' అంటూ దేశం కోసం బలిదానాలు చేసే వీరులు వారు. 'భారత దేశ సిపాయిల్నివ్వండి, ప్రపంచాన్ని జయించి చూపిస్తానని' ఒక యోధుడు చెప్పిన మాట ముమ్మాటికీ నిజం. ఎన్నో వీరోచిత గాధలు నిత్యం మన నోళ్లలో చందమామ పాటలా మార్యోగుతుంటాయి. మనందరికీ ఒకే కుటుంబం, కానీ వీరందరికీ దేశమే కుటుంబం.

త్రివిధ దళాలు భారతమృకు త్రినేత్రాలు. ఆకాశంలో ఎయిర్ ఫోర్స్ గా, జలంలో నేవీగా, భూభాగంలో ఆర్మీగా దేశానికి మూడు కళ్ళుగా ఉండి నిరంతరం కాపాడుకుంటున్నారు. విధి నిర్వహణలో పడి కళ్ళనిండుగా వాళ్ళ కుటుంబాన్ని చూసి ఎన్ని రోజులవుతుందో! బంకర్లలో మాగన్నూని నిద్ర పడుతున్న సందర్భంలో ఎక్కడో ఒక చిన్న పాప ఏడుపు వినిపించిన భ్రమలో ఉలిక్కిపడి లేచి దిక్కులు చూస్తే కనిపించేది చిమ్మచీకటి! మాట్లాడాలని ఉన్నా సాటి మనిషికూడా కానరాని పరిస్థితి. ఎక్కడ మెత్తటి మట్టి కనిపించినా అమ్మ స్పర్శంత మెత్తగా ఉందంటూ నుదుట బొట్టుగా పెట్టుకొని ఆనందించేవారు సోల్డర్స్. కర్రపోటుతో ఏ వద్దుడు కనిపించినా భుజం సాయం పట్టి, తాతా అంటూ పాదాలు మొక్కిది సోల్డర్స్. ఏ పూల పరిమళమో సోకినపుడు కళ్లనిండా నీళ్ళతో భార్య గుర్తొచ్చి ఆ కళ్ళ తడి గుండెల్లోకి జారకుండా దేశ జెండావంక చూసి నమస్కారం చేసే వారి సంస్కారానికి ఏమిచ్చి రుణం తీర్చుకోగలుగుతాం? అంతేనా - పరమ వీర చక్ర పురస్కార గ్రహీతల జీవితాల్ని ఎన్నో పాఠశాలల్లో కథలుగా చెప్పాం మేము.

పరమవీరచక్రాన్ని రూపొందించిన సావిత్రిబాయి అసలు పేరు ఇవా వాన్ మే డిమారోస్. ఈమె స్విట్జర్లాండ్ వనిత. సెయింట్స్ ఆఫ్ మహారాష్ట్ర పుస్తకాన్ని రాశారావిడ. భారతీయ విద్యాభవన్వారు ప్రచురించిన ఈ పుస్తకం ఎన్నో వేలమందిని ఆకట్టుకుంది. ఈమె విదేశీ వనిత అయినప్పటికీ భారతదేశానికి వచ్చాక మరాఠీ, సంస్కృతంలో అఖండ పాండిత్యాన్ని గడించింది. ప్రేమించి మేజర్ జనరల్ విక్రమ్ ఖానోల్కర్ని పెళ్ళి చేసుకుంది. మేజర్ జనరల్ అటల్ బిశికి వీరి కుటుంబంతో మంచి దోస్తానీ ఉండేది. 1948లో స్వాతంత్ర్యానంతరం గొప్పగా సైనిక పాటవాన్ని ప్రదర్శించి వీరోచితంగా దేశంకోసం

పోరాడిన వారికోసం ఒక ప్రత్యేక పతకాన్ని డిజైన్ చేసే అవకాశం అటల్ జీకి లభించింది. విక్రమ్ తోను, సావిత్రిబాయితో ఆ విశేషాల్ని పంచుకున్నారు హీరాలాల్ అటల్. దానిని అద్భుతంగా రూపొందించారు సావిత్రిబాయి. మూడున్నర సెంటీమీటర్ల వ్యాసంలో 32 మిల్లీమీటర్ల ఊదారంగు రిబ్బన్ తో ఉన్న ఈ పతకంలో మన భారతీయ సంస్కృతినంతా రంగరించి పోశారు. దీచి తన వెన్నెముకను ఆయుధంగా చేసి ఇచ్చిన వజ్రాయుధంగా, హైందవ రాజ్య స్థాపనలో శివాజీకి లభించిన భవానీ ఖడ్గాన్ని తీసుకొని ఇరువైపులా వీటిని అమర్చి అశోక చిహ్నాన్ని మధ్యలో వుంచి ఈ పతకాన్ని రూపొందించారు సావిత్రిబాయి. ప్రతి సైనికుడు పరమవీరచక్ర కంచు పతకం తన గుండెల మీద నిలవాలని కలలు కంటూ ఉంటాడు. పరమవీరచక్రాన్ని ధరించినవారి జీవిత చరిత్రలతో పాటు ఒక విదేశీవనితగా భారతీయ గడ్డపై కాలుమోపి ఈ దేశ సంస్కృతిని, విలువల్ని ఎంతో ప్రేమించి అచ్చమైన భారతీయ వనితగా మారి మన భాషను నేర్చుకొని రామాయణ, భారత, భగవద్గీతలను అవపోసన పట్టిన ఒక విదేశీ వనిత రూపొందించిన పరమవీరచక్ర పతక కథ ఇది.

ఒక సభ కోసం నేను ప్రజ్ఞాభారతి వి.ఎస్.శర్మగారికి ఫోన్ చేస్తే వారు పరమవీర చక్రధారులుగురించి ఎంతో ఉత్తేజకరంగా చెప్పారు. నేనెంతో భక్తిభావంతో విన్నాను. వారు స్వయంగా వచ్చి ఎంతో శ్రమకోర్చి ఒక పుస్తకాన్ని నాకందించారు. సద్గుణబాల పక్షపత్రికవారు ప్రచురించిన ‘పనకళ్ళ వీరపు’ రచించిన పుస్తకమది. ఆచార్య డి.ఆర్.ఎస్. నరేంద్రగారు ఎడిటర్ గా ఉన్న పక్షపత్రిక అది. దాదాపు మూడు సంవత్సరాలు వరుసగా ఈ పరమవీరచక్ర పురస్కార గ్రహీతల గురించి రాసిన ఆ పుస్తకాన్ని ఆ రాత్రంతా నేను చదివి ఐ.ఎం.సి.టి.ఎఫ్. (ఇనీషియేటివ్ ఫర్ మోరల్ అండ్ కల్చర్ ట్రైనింగ్ ఫౌండేషన్) వారు పరమవీర చక్ర ప్రచారం కోసం ఎంతో గొప్ప ప్రయత్నం చేస్తున్నారో శర్మ గారి ద్వారా తెలుసుకుని మా కార్యక్రమంలో దాన్ని ప్రదర్శించటం జరిగింది. వారిని నాకు పరిచయం చేసిన బి.ఎస్.శర్మగారికి ప్రత్యేక ధన్యవాదాలు. ఆ పుస్తకం చదివిన మా కవయిత్రులు కూడా ఎంతో స్పందించారు.

అక్షరయాన్ నుంచి మేము కూడా ఈ త్యాగధనుల కోసం ఏదన్నా చేయాలనిపించింది. అందుకే అక్షరయాన్ మహిళా కవయిత్రులమీద అచంచల విశ్వాసంతో కేవలం 15 రోజులు మాత్రమే సమయమిచ్చి ఎంపిక చేయబడ్డ ఆ 42 మందితో ఒక్కొక్క వీరుని మీద ఇద్దరు కవయిత్రులు రాసేలాగా ప్రణాళిక రచించాము. వాటిని రెండు పుస్తకాలుగా రెండు వేరు వేరు సందర్భాలలో అందించాలన్నది అక్షరయాన్ కోరిక. అక్షరయాన్, తెలుగు ఉమెన్ రైటర్స్ ఫౌండేషన్ తెలుగు సాహితీ ప్రపంచంలో ప్రభంజనం సృష్టిస్తోంది. 1500 మంది మహిళా సాహితీకారులు ప్రపంచం మొత్తంమీద ఏ మహిళా సాహితీ సంస్థలోనూ లేరు. 19 విభాగాలున్నాయి. తెలంగాణలోని పాత పదిజిల్లాలకు 10, ఆంధ్ర ప్రదేశ్ లో అన్ని జిల్లాలకు కలిపి 6, ఎనిమిది రాష్ట్రాలకు కలిపి 2, విదేశాల్లో వారికోసం ఒక విభాగం తెలుగు సాహిత్యం కోసం పనిచేస్తున్నాయి. ప్రణాళికాబద్ధంగా కార్యక్రమాలు నిర్వహించుకుంటూ ఇప్పటివరకు పూల సింగిడి, హితైషి, సింగిని గెలిచిన నేల, ఆమె పోలీస్ అయితే, డాక్టర్ ఫైల్స్, అక్షరాలా అదిలాబాద్, మాతృవందనం, తెలుగు ప్రపంచ వేదిక వారి కోసం దాదాపు

9 పుస్తకాలను, విత్తనాభివద్ది సంస్థ వారికి విత్తనం చెప్పిన కథలు, బీజస్వరాలు పుస్తకాలను ప్రచురణ కోసం రాసి అందించింది. అక్షరయాన్ స్వయంగా పసిమొలకలు రుధిరజ్వాలలు - చిన్నపిల్లలమీద జరిగే అత్యాచారాలపై అందించింది. వజ్రోత్పన్నభారతికి కవితా హారతిగా 'సముజ్జ్వల భారతి'ని ప్రచురింపచాం. దేశంకోసం మేమిస్తున్న చిరుకాసుకగా 2022లోనే ఈ 'సలాం సైనికా!' ను అందించాం.

ఈ మధ్య రాష్ట్రపతి నిలయంలో 'కార్గిల్ విజయతోవ దివస్' సందర్భంగా ఆంధ్రప్రదేశ్, తెలంగాణ, సబ్ ఏరియా జనరల్ ఆఫీసర్ కమాండింగ్ మేజర్ జనరల్ జి. శ్రీనివాస్ గారిని కలిసి వారికి ఈ పుస్తకాన్ని బహూకరించాం. వారు ఎంతో గొప్పగా మా కృషిని అభినందించారు. హిందీ, ఆంగ్ల భాషల్లో వస్తే బాగుంటుందని సూచన చేశారు. దాంతో ఆగస్టు 15 కల్లా అందిస్తామని చెప్పాం. కానీ మనసులో గుబులుగా ఉంది. పట్టుమని మూడు వారాలు కూడా లేదే అని. అయితే మేము రెండే రెండు విషయాలు నమ్మాం. ఒకటి సంకల్పం మంచిదైనప్పుడు ప్రకృతి మనకు సహకరిస్తుందని, రెండోది మా తోటి కవయిత్రుల పాండిత్యం మీద, ప్రతిభ మీద మాకున్న నమ్మకం. ఈ మొత్తం పుస్తకాన్ని మా అక్షరయాన్ అనువాద విభాగంలోని కవయిత్రులే అనువదించడం విశేషం. ఇలా మీ చేతుల్లో త్రిభాషా పుస్తకంగా సైనికులకు సలాం చేస్తూ సగర్వంగా నిలబడింది ఈ 'సలాం సైనికా!' పుస్తకం. మాలో ఈ స్ఫూర్తిని కలిగించిన మేజర్ జనరల్ శ్రీనివాస్ గారికి, ఈ మహదావకాశాన్ని మా కందించిన రాష్ట్రపతి నిలయం అధికారిణి డా. కె. రజని ప్రియ గారికి కృతజ్ఞతలు. ఈ ప్రక్రియలో కో-ఆర్డినేట్ చేసిన కర్నల్ సురేష్ గారికి ధన్యవాదాలు. అందంగా ప్రచురించిన సాయిలిఖిత ప్రింటర్స్ కి, ట్రూఫ్ చూసిన పి.వి.సి. సతీష్ కి ధన్యవాదాలు.

చివరగా ఒక్కమాట చెప్పగలుగుతున్నాం. సైనికులారా! మీ త్యాగం అమరం! మీ ధైర్యం అజరామరం! మీరు మాకెప్పుడూ హీరోలు, వీరులు, ధీరులే! మీరే మా ధైర్యం! మీరే మా స్థైర్యం! మీరే మా బలం! మీరే మా బలగం! శాంతిని స్థాపించే యుద్ధంలో మీ బలిదానం నిత్య కథాగానం! మీ ధీరత్వం ఆత్మ విశ్వాస చేతనం! మీ పట్టుదల, మీ నిబద్ధత మాకు నిత్య స్ఫూర్తి! మీ నిస్వార్థం, నిజాయితీ మాకు నిరంతర దీప్తి!

పరమవీర చక్రధారుల్లారా! మీరంతా మీరు మరణించారనో, వీరమరణం పొందారనో అంటున్నారు. దేశప్రజల కళ్ళల్లో, దేశం గుండెల్లో మీరెప్పుడూ సజీవంగానే ఉంటారు. మా తొలి వేకువ ప్రార్థనల్లో మీరుంటారు. 'సలాం సైనికా!' అంటూ మీ ఆత్మలకు అక్షరనివాళి పడుతున్నాం. వయస్సులో చిన్నవారిని ఆశీర్వాదిస్తున్నాం. అమ్మలుగా, అమ్మమ్మలుగా, అక్షర బతుకమ్మలుగా ఈ కవితా నివాళిని నిండుగుండెతో మీకు సమర్పిస్తున్నాం. దేశంకోసం ఆత్మబలిదానం చేసిన త్రివిధ దళాల సైనికులకు ఈ పుస్తకాన్ని సెల్యూట్ చేస్తూ అంకితమిస్తున్నాం.

ఇది మా అక్షరయాన్ అశ్రునివాళి! ఇది మా అక్షరయాన్ కవితాక్షర నివాళి!!

అయినంపూడి శ్రీలక్ష్మి

9989928562

సుధా శేఖర్

+1(630) 6216815

డా. దుంపా శ్రీదేవి

9440481111

విషయ సూచిక

1. మేజర్ సోమనాథ్ శర్మ	- నామని సుజనాదేవి	129
2. నాయక్ జదునాథ్ సింగ్	- వురిమళ్ల సునంద	132
3. సెకండ్ లెఫ్టినెంట్ రామ రఘోభారాణి	- వి. శాంతి ప్రబోధ	135
4. కంపెనీ హవల్దార్ మేజర్ పిరూసింగ్ షెఖావత్	- డా. అడువాల సుజాత	137
5. లాన్స్ నాయక్ కరమ్సింగ్	- కళాగోపాల్	139
6. కెప్టెన్ గురుబచన్ సింగ్ సలారియా	- ఘాలి లలిత ప్రవల్లిక	141
7. మేజర్ ధన్సింగ్ థాపా	- రమాదేవి బాలబోయిన	143
8. సుబేదార్ జోగిందర్ సింగ్	- బండారు జయశ్రీ	145
9. మేజర్ శైతాన్ సింగ్	- డా. సి. భవానీదేవి	147
10. హవల్దార్ అబ్దుల్ హమీద్	- సలీమ	149
11. లెఫ్టినెంట్ కల్నల్ అర్దేశిర్ బుర్జోర్జీ తారపోర్	- కిరణ్బాల	151
12. లాన్స్ నాయక్ అల్బర్ట్ ఎక్కా	- డా. వాణి దేవులపల్లి వాణి	153
13. నిర్మల్జీత్ సింగ్ సెఖాన్	- సుధాశేఖర్	156
14. సెకండ్ లెఫ్టినెంట్ అరుణ్ ఖేతర్పాల్	- డా. శారదా హన్మాండ్లు	158
15. మేజర్ హోషియార్ సింగ్	- డా. సమ్మెట విజయ	160
16. సుబేదార్ బాణాసింగ్	- నెల్లుట్ల రమాదేవి	162
17. మేజర్ రామస్వామి పరమేశ్వరన్	- చివుకుల శ్రీలక్ష్మి	164
18. కెప్టెన్ మనోజ్ కుమార్ పాండే	- రమాదేవి కులకర్ణి	166
19. గ్రెనేడియర్ యోగేంద్ర సింగ్ యాదవ్	- విశ్వేష్	168
20. రైఫిల్మెన్ సంజయ్ కుమార్	- కొలిపాక శోభారాణి	171
21. కెప్టెన్ విక్రమ్ బాత్రా	- అయినంపూడి శ్రీలక్ష్మి	173

పరమోత్కృష్టం - పరమవీర చక్రం

అవును మరి...
దేశం కోసం ప్రాణం,
తృణప్రాయం అనుకున్న
ప్రతి జవానూ..మరో దధీచియే...!

త్రిమూర్తులు - బ్రహ్మ,విష్ణు, మహేశ్వరులు
సృష్టి స్థితి లయ కారకులు.
త్రివిధ దళాలు దేశమాత రక్షకులు
సృష్టి స్థితికి కాపలాదారులు.....!

మీ ధీ: పటిమకు సమర్పణం
అత్యున్నత ధైర్య పరమ వీర చక్రం
అమెరికా - “మెడల్ ఆఫ్ ఆనర్” తో
బ్రిటన్ - “విక్టోరియా క్రాస్” తో ధీటుగా...!

మీ త్యాగాలకు జ్ఞాపికగా
దధీచి వెన్ను వజ్రాయుధ సమంగా
సావిత్రీ ఖణ్డోల్కర్ రూపొందించగా
భారత చిహ్నపు, కాంస్యపు వృత్తాకార చక్రం...!

భారత పాకిస్తాన్ యుద్ధంలో అమరుడు
మేజర్ సోమనాథశర్మ బాడ్గాం యుద్ధ వీరుడు.
పరమ వీర చక్ర పొందిన తొలి యోధుడు
యాద్యచ్ఛికం సావిత్రీ ఖణ్డోల్కర్ మేనల్లుడు...!

1.375 అంగుళాల ఊదారంగు రిబ్బనుచుట్టిన
వజ్ర నమూనాల వృత్తాకార చక్రం
పరమోత్కృష్టమైన వీర చక్రం
మీ త్యాగాలకు ఇచ్చు గౌరవం....!

ప్రతి బిడ్డా ఒక వీర సైనికుడై
భరత భూమికి క్షేత్రపాలకుడై
కదలాలనే సంకల్ప బలం ఈ వీర చక్రం
ఇంతకన్నా ఏమివ్యగలం మీ కోసం ...!

కన్నీటి పన్నీట మీ పాదాలు కడిగినా
తీరుతుందా మీ త్యాగాల ఋణం
జాతి బతుకున వెలుగు నింపిన మీ ధైర్యం
పరమ వీరచక్రమునకే మీరు ఆభరణం ...!

- రమాదేవి కులకర్ణి



1. పాక్పై ఎక్కు పెట్టిన పాశుపతాస్త్రం (మేజర్ సోమనాథ్ శర్మ)



రక్షణ ఇవ్వాలంటే రక్తం చిందించాలని లేదు
బంధం కావాలంటే ఒకే కుటుంబంలో పుట్టాలని లేదు!
రక్త బంధాన్ని మరిపించిన రమణీయమైన ఆ అమరత్వం
మరో ప్రపంచాన్ని వాగ్దానం చేసింది!

ఒకే కుటుంబంలో ఒకే రక్తం పంచుకొని పుట్టిన
తోబుట్టువుల మధ్య బంధమే ప్రశ్నార్థకమవుతున్నవేళ
అఖిల భారతావని రక్షణకు అప్రమత్తతతో
అహరహం అవిశ్రాంత సూర్యుడిలా శ్రమిస్తూ
మాతృదేశానికి తలమానికమై కాపలా కాస్తూ
అసువులు తృణప్రాయంగా త్యజిస్తూ, ఉత్తేజపరుస్తూ,
బాసిస్తున్న రక్షకుడైన సైనికుడై, తూటల వర్షానికి గొడుగై
ఏడింతల ఎక్కువ బలగాలున్న శత్రువుల చూసి
వెనకడుగు వేయక అరివీర భయంకరంగా, తపస్సుగా
అలుపెరుగని పోరాటం చేస్తూ చిచ్చర పిడుగులా చెలరేగి
వీరమరణం పొందిన అరుణ కిరణమే మేజర్ సోమనాథ్ శర్మ!
అసమాన ధైర్య సాహసాల ప్రతీకైన
అతన్ని చూసి ముచ్చటపడి వరించడానికి
పురుషోసుకుంది పరమ వీర చక్ర పురస్కారం!

మొదటి కాశ్మీర్ యుద్ధంలో మారువేశాల్లో
శ్రీనగర్ ఆక్రమణే లక్ష్యంగా మొదలైన ఆపరేషన్ గుల్ మార్గ్లో
మట్టు పెట్టడానికి వచ్చిన శత్రు మూకలను



కొద్దిపాటి బలగంతో ఎదుర్కొన్న ధీరుడు,
పరమవీరచక్ర పొందిన ప్రథమ వీరుడు
ఫోర్ట్ బెటాలియన్ కుమావు రెజిమెంట్ మేజర్ సోమనాథ శర్మ!

మూడు టీములుగా విభజించిన బలగాలతో
అధికారులకు సమాచారమందించి
రిలీఫ్ టీమ్స్ రాకున్నా
కాశ్మీర్ పాకిస్తాన్ చేతుల్లోకి వెళ్లకుండా
నిలువరించిన క్షణం అతడు
పాక్ పై ఎక్కుపెట్టిన పాశుపతాస్త్రం!

చెక్కుచెదరని ఆ గుండె నిబ్బరానికి
గాయమై కట్టు వేసిన చేయి కూడా తలవంచి
ఫ్రంట్ లైన్ లో ఉండి పోరాటం చేసింది!
ఉద్యమించిన ఉక్కు సంకల్పానికి
బుల్లెట్ల వర్షం కూడా బెదిరి పాకు సైన్యాన్ని బెంబేలెత్తించింది!

మంచుకొండలను ఎరుపు కొండలుగా
మార్చేసి శత్రు సంహారం చేసిన మహా యోధుడికి
ఆకాశం ఎరుపెక్కి లాల్ సలాం చేసింది!
అయిపోయిన మందు గుండు సామాగ్రిపై
తక్షణ సమాచారం ఇస్తూ
శ్రీనగర్ ఎయిర్పోర్టులో
సైన్యం దిగితేనే సహాయమందించగలమన్న బ్రిగేడ్ కు
చివరి బుల్లెట్ ఉన్నంతవరకు
చివరి శ్వాస వరకు పోరాడుతూనే ఉంటామని
చివరి సందేశంలో తెలిపినట్లే
కొన ఊపిరి దాకా పోరాడి
భరతమాత ఒడిలో ఒరిగిన చైతన్య స్ఫూర్తి,
ఉరకలెత్తించే పోరాట దీప్తి అతడు!



భారతావని మురిసి అక్కున చేర్చుకున్న
భరతమాత ముద్దు బిడ్డయై అజరామరంగా
ఆ చంద్ర తారార్కం నింగిలో ధ్రువతారైనాడు!
తన దేశం మీద తన దేహం మీద
చెయ్యేసిన శత్రువుని తుద ముట్టించి,
అకుంఠిత దీక్షతో అసమాన పరాక్రమాన్ని చూపిన వీరుడా!

ప్రథమ పరమవీరచక్రగా అంకురించిన ధీరుడా!
అద్వితీయం నీ పోరాటం! అజరామరం నీ సాహసం!
చరిత్ర మరవదు నీ త్యాగం!
అందరి మది మందిరాలలో అక్షరమై, అక్షయమై
కొలువైన నీకు లేదు మరణం!
అందుకో అఖిల భారతావని జోతలు!
శతకోటి అక్షర నీరాజనాలు!

నామని సుజనాదేవి

7799305575

వరంగల్





2. యువ కిశోరమా..! (నాయక్ జదూనాథ్ సింగ్)



యువ కిశోరమా..!
అరుణారుణ కీర్తి పతాకమా!

నూనూగు మీసాల నూత్న యవ్వనంలో
ఇష్టంగా మనసులోకి ఒంపుకొన్న
భరత మాత రక్షణ బాధ్యత!

కన్నవారి కలలు నిజం చేయాల్సిన తరుణంలో
“జననీ జన్మ భూమిశ్చ స్వర్గాదపీ గరీయసి” వాక్యాన్ని
మనసు పెదవులతో మధురంగా మననం చేసుకుంటూ
దేహమిచ్చిన జననీ జనకులను ఒప్పించి
కర్తవ్య దీక్షతో తీసుకున్న కఠిన నిర్ణయం

దేశమాత సేవలో పునీతమయ్యేందుకు
నిండు నూరేళ్ళ జీవితాన్ని
నిర్భయంగా అర్పించిన కొదమ సింహమా!

అనుబంధాలకు అతీతంగా
హనుమాన్ భగత్ బాల బ్రహ్మచారివై
తల్లి ఋణం తీర్చేందుకు
సైనికుని రూపమెత్తిన జాదూనాథ్ సింగ్ నాయకా!
ధీశాలీ వందనం!





అక్రమంగా

అండమాన్ నికోబార్ దీవులను

ఆక్రమించుకున్న జపాన్ సైన్యంపై

ఉప్పెనలా విరుచుకుపడి

తోక ముడిచి పారిపోయేలా చేసిన వీర విక్రమ తేజమా!

భారతమ్మ నుదుట

ఇనబింబమై మెరిసే

కాశ్మీర కుంకుమ తిలకం చెరగనీయకుండా

అహరహం పహారా కాస్తూ

పాకిస్తాన్ రైడర్ల దాడిని

తిప్పికొట్టిన పాశుపతాస్త్రమా!

మంచు కొండల్లో

మహోజ్వల పోరాట కాంతులను వెదజల్లుతూ

సెక్షన్ కమాండర్ గా

నాయకత్వానికి అసలైన భాష్యం చెప్పిన శూరుడా! నవోదయ సూర్యుడా!

ప్రణామం!

నౌషేరాగేట్ సాక్ష్యంగా

శత్రు మూకలు చేసిన బుల్లెట్ల గాయాలకు జల్లెడైన దేహంలోంచి

రుధిరం ధారలై ప్రవిస్తున్నా లెక్క చేయక

సింహంలా గర్జిస్తూ

ముష్కర సైన్యాలను ముప్పు తిప్పలు పెట్టిన వీరాభిమన్యుడా! లాల్ సలాం!

సైన్యానికి

సాగరమంత ధైర్యాన్ని నూరిపోసిన సాహసీ! జోహార్లు!

సలాం సైనికా!



ఆఖరి క్షణం వరకూ అరివీర భయంకరుడివై
అమ్మ భారతి భద్రత కోసం
ఆత్మ బలిదానం చేసిన జవానుడా!
అమరం అమరం నీ చరితం!

చరిత యవనికపై
శాశ్వతంగా లిఖించబడిన నీ పరాక్రమ గాధ
ముందు తరాలకు అవుతుంది దిశా నిర్దేశనం!

మూడు పదుల వయసులోనే
సువు చేసిన త్యాగం
అనునిత్యం ప్రాత: స్మరణీయం
నిన్ను కన్న తల్లి దండ్రుల జన్మ ధన్యం!

దేశమాత కన్నుల్లో ప్రస్ఫుటించే నీపై అనురాగం
ఆచంద్ర తారార్కం వెలిగే ఆత్మాభిమాన అఖండ దీపం!

నీ అసమాన వీరత్వానికి ఇచ్చిన
పరమ వీర చక్ర పురస్కార గౌరవ కేతనం
ఆకాశాన ఎగురుతూనే వుంటుంది నిరంతరం!

పురిమళ్ల సునంద

ఖమ్మం

94418 15722





3. రణక్షేత్రంలో అగ్ని కీల (సెకండ్ లెఫ్టినెంట్ రామరఘోభా రాణె) ◆▶



స్వతంత్ర భారతావని శ్వాసలో...
 సహాయ నిరాకరణోద్యమపు చైతన్య బీజం మొలకెత్తిన వేళ,
 రెండవ ప్రపంచ యుద్ధపు సెగలు తాకిన ఆ కౌమారంలో,
 ఒక యోధుడు భరతమాత రుణం తీర్చుకోవడానికి
 సరిహద్దుల్లోకి అడుగుపెట్టిన క్షణమది!
 చిండియా కార్పాస్ గడ్డపై పుట్టి,
 భారత సైనిక రణక్షేత్రంలో శిఖరమై నిలిచిన
 మేజర్ రామ రఘోభా రాణె!
 నీవు కేవలం సైనికుడివి కాదు...
 నువ్వు నడిచిన బాట, నీవు వేసిన అడుగు
 భారత రక్షణ చరిత్రలో ఒక అజరామర అధ్యాయం!

మంచు కొండల కౌగిలిలో...
 శత్రువు కట్టిన మృత్యు వలయాలు -
 ల్యాండ్ మైన్ల విస్ఫోటనాల హోరు,
 నిప్పులు చిమ్మే మోర్టార్ల అట్టహాసం,
 పాములా పడగ విప్పిన కొండ దారుల విషవలయం!
 “నేను ముందుంటాను .. నన్ను అనుసరించండి” అని,
 నిలకడలేని పరిస్థితుల్లోనూ నిబ్బరంగా నిలిచిన నాయకుడివి నీవు



సైనికులకు అభయం ఇస్తూ, భయాన్ని పటాపంచలు చేస్తూ,
 శత్రువు గుండెల్లోకి చొచ్చుకుపోయిన నీ సాహస గమనానికి,
 నీ బలగాల రక్తపు చుక్కలే సాక్ష్యంగా,
 నౌషాహ్ నుండి రాజౌరి వరకు
 విజయ సోపానాలు నిర్మించిన శిల్పివి నీవు!
 నిద్రాహారాలు మరచి...
 ముందుకు కదలని యుద్ధ ట్యాంకర్లకు ప్రాణమై,
 వడగళ్లలా కురుస్తున్న బుల్లెట్ల మధ్య మృత్యువును ఓడించి,
 అసాధ్యమనుకున్న కార్యాన్ని సంకల్పంతో
 సుసాధ్యం చేసిన కృషీవలుడవు !
 రాజౌరి ప్రజల గుండెల్లో...
 చిరస్థాయిగా నిలిచిన ధీరోదాత్తమైన వీర గాథ నీవు!

నీ ఎదపై మెరిసిన ఆ పరమ వీర చక్ర...
 ఏదో లోహం కాదు,
 నీ అద్వితీయ త్యాగానికి, నీ నిశ్చల ధైర్యానికి
 జాతి గర్వంతో అందించిన అశ్రుతర్పణం!
 సరిహద్దుల్లో నీవు వేసిన ప్రతి అడుగు..
 నేటి భారతీయులకు స్వాతంత్ర్యపు చిరునామా !
 INS విక్రాంత్ మ్యూజియం నుంచి,
 సముద్ర గర్భంలో రామ రఘోబా రాణే పేరుతో
 ప్రవహించే ప్రతి అల...
 నీ కీర్తిని దశదిశలా చాటుతూనే ఉంటుంది!

వి. శాంతి ప్రబోధ

9866703223

వర్ని, నిజామాబాద్





4. అతడే ఒక అంతులేని సైన్యం (హవల్దార్ మేజర్ పిరూసింగ్ షెఖావత్) ◆▶



కన్న తల్లి రుణం కన్నా
 నేల తల్లి రుణం మిన్న
 అని నిరూపించిన
 అలుపెరుగని వీరుడు...
 అరి వీర భయంకరుడు...
 శత్రువు మూకలను ఎదిరించడంలో
 అతనికి అతడే సాటి...
 పాకిస్తాన్ సైనికులకు
 పగలే చుక్కలను చూపిన ధీరుడు...
 పాకిస్తాన్ ఆయుధాగారం పైన దాడి చేసి
 శత్రు సైన్యాన్ని తరిమివేసి
 అతి ముఖ్యమైన ఆ పర్వతాన్ని
 భారత్ పరం చేసిన దేశభక్తి పరాయణుడు
 అతడే .. కంపెనీ హవల్దార్ మేజర్ పిరూ సింగ్ షెఖావత్...
 వీరుడా!...
 గుంట నక్కలై దొంగ దాడి చేసిన పాక్ సైన్యపు
 గుండెల్లో నిలిచిన అగ్నిపర్వతం నువ్వు.
 రాజ్పుతాన ఫిరంగి దాడులు చేయాలనే వ్యూహం..
 సఫలీకృతం కానందున ..
 సమయం కోసం ఎదురుచూసి
 పాక్ పన్నాగంతో బలైపోయి
 అరగంటలోభారత వీరులు 51 మంది
 రక్త తర్పణం చేస్తూ ఎర్రమందారాలై నిలిచారు.
 ఫిరంగి తానై నిలుస్తూ



దిక్కులు పిక్క టిల్లే రణ గోన ధ్వనులలో
శత్రు మూకలను ఎదిరించడంలో
ఎక్కుపెట్టిన బాణమైనాడు షేఖావత్

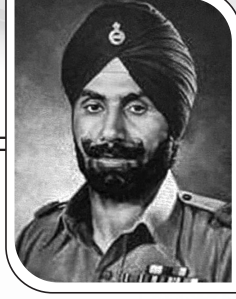
పార్క్ మిషన్ గన్ పోస్టుపై
గ్రానైట్ తో దాడి చేసి,
ధ్వంసం చేసిన మగధీరుడు..
తనువు రక్తసిక్తమై తూలుతుండగా
మరొక గ్రానైట్ తో పాక్ రెండో బంకును
ధ్వంసం చేసిన వీరాభిమన్యుడు..
భరతమాత పాదాలను రుధిరంతో స్పృశిస్తూ
ముందుకు సాగిన అలుపెరుగని వీరుడు
మూడవ బంకును పేల్చి,
పాక్ ఆయుధాగారాన్ని అర నిమిషంలో కాల్చి వేసి..
దేశభక్తి బావుటాను ఎగరేసిన ఘన చరితుడు
తారావతి ముద్దుబిడ్డ గా తారకై వెలిగాడు.
పరమవీరచక్రానికి వన్నె గాంచి నిలిచాడు...
కంపెనీ హవెల్డార్ పిరూసింగ్ షేఖావత్!
అంతులేని సైన్యమై అమరుడవై వెలిగావు
లేదు నీకు మరణం! నీ జన్మ అమరం!
సైనికా! నీ త్యాగానికి మేమేమిచ్చి
నీ రుణం తీసుకోగలం?
మా గుండెనే గుడి చేసి అందులో
నీ రూపం పదిలపరుచుకోవడం తప్ప!
హృదయపూర్వకంగా ఒక సలాం చేయడం తప్ప!
అందుకే సైనికా!
మా వందనాలు... మా అభినందన చందనాలు... అక్షర
నీరాజనాలు.....

డా. అడువాల సుజాత
కరీంనగర్
సెల్: 9989558678





5. S/o సర్దార్ C/o యుద్ధ ఫిరంగి (లాన్స్ నాయక్ కరమ్ సింగ్)



అతడొక దయావృక్షం
 కుంకుమ పూలలోయలో
 అతివల మాన ప్రాణాలను
 సంరక్షించిన వీరోచిత శిఖరం !
 సరిహద్దుల్లో యుద్ధం
 నివురు కప్పిన నిప్పులా విచ్చుకుంటుంటే
 నింగిని దాటిన నేల దురాక్రమణను
 ఎదిరించి నిల్చిన అగ్నిశిఖ అతడి పరాక్రమం!
 సమాచార సంబంధాలు తెగిపోయిన రణక్షేత్రంలో
 బంకర్లే అతడి మూడో కన్నుగా
 ఆయుధాలు అందకున్నా వట్టి చేతులతో శత్రుసైన్యాల్ని..
 చీల్చిన అతడి తెంపరితనానికి జోహార్లంటూ
 మిలటరీ అవార్డు అతడి గుండెలనంటి మురిసింది!
 అడ్మిన్ బాక్స్ యుద్ధమైనా
 రిచ్ మార్ లోయ దురాక్రమణ ఐనా
 గెలుపే అతడి సింహనాదమై
 మంచు పర్వతాల్లో ప్రతిధ్వనించింది!

వెనుదిరుగని పోరాటపటిమ అతడి నెట్వర్క్
 ధైర్యసాహసాలే అతడి వెంట నడిచే వైఫై
 యముడికి సైతం లొంగని బింకంతో
 శత్రుమూకపై స్మృక్ బాంబ్ విసిరిన



విద్యుద్ధాత వీరుడతను!
గాయపడిన దేహమైనా
ఓరిమితో సిపాయిలకు
చికిత్సనందించిన
మరో నాన్న అతడు !

ఆజాదీ భారత్ తిరంగా రెపరెపలతో
భరతమాత మురవగా పరమవీరచక్ర
అందుకున్న తొలి సజీవ వీరుడిగా ఈతడి
చరిత్ర అఖండ జాతికే గర్వకారణం!

ఈ మట్టి తాకి ముద్దాడిన నీ పవిత్ర పాదాలకు ప్రణమిల్లుతూ..
ఈ గుప్పెడన్ని అక్షరాల్లో నిన్ను లిఖించుకుంటాం..!!
మా తడితడి గుండెల్లో నిన్నెప్పుటికీ నిలుపుకుంటాం..!!

బి.కళాగోపాల్

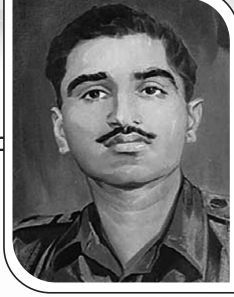
నిజామాబాద్

918645239





6. శాంతి కపోతం - గుర్బచన్సింగ్ (సలారియా)



కారడవి చీల్చే కత్తిలా
మంచుకొండను దాటే కాలంలా
భారత కీర్తి రెపరెపల కోసం
ఊపిరి ఆగని సైనికుడి పయనం!
పంచనది పావన తీరాన
జాన్‌వాల్ మట్టి పులకరించిన వేళ
నవంబరు ఇరువది తొమ్మిది వెలుగులో
మున్నీరామ్ ధన్‌దేవిలఱడిలో నవ్విస సింహపు కూన

పేదరికపు నీడలో మెరిసిన పట్టుదల
NDA ఫీజుకై కరిగిన తల్లి నగలు
బాక్సింగ్ పిడికిలితో తీరిన అప్పు
బెంగళూరు RMS లోని విత్తు
డెహ్రాడూన్ ఐఎంఎ లో విస్తరించిన శాఖలతో
ఎదిగిన యశో వృక్షం
గూర్ఖా టోపీకి గర్వమైన అలంకారం
జూన్ అరవై ఒకటి కాంగో నేలపై
ఐరాస నీలి జెండా నీడలో
ఎలిజబెత్‌విల్లే విమానాశ్రయపు దారిలో
మూగబోయిన శాంతిని రక్షించే యజ్ఞం



పదహారు మాత్రమే ధైర్యపు దీపాలు
 ఎదురుగా తొంభై చీకట్ల సైన్యం
 మాటు వేసిన మరణాన్ని చూసి నవ్విస్తా
 అచంచల సింహపు చూపు
 ట్యాంకు శిఖరాన అగ్నిజ్వాలై
 గ్రేనేడ్ల వర్షమై కురిసిన పిడుగు
 నలుబది శత్రువుల గుండెల్లో దిగిన పేరు
 మెడపై గాయపు ఎర్రని తిలకం
 లెక్క చేయక చివరి శ్వాస వరకు
 శాంతి కోసం చిందించిన రక్త తర్పణం

డిసెంబరు ఐదు నింగికెగిరిన
 ఇరువది ఆరు వసంతాల సంతకం
 పరమవీర చక్రపు ఆరవ మెరుపు
 సావిత్రమ్మ చేతుల స్వర్ణ గౌరవం
 కాంగో మట్టిలో కలిసినా
 భారత గుండెల్లో రగిలే జ్వాల
 దేహానికి స్వస్తి దేశానికి నమస్తే
 ఇదే సలారీయా శాశ్వత ప్రమాణం
 చిందించిన ప్రతి రక్తపు బొట్టు
 శాంతి మంత్రపు అక్షరమై
 కలకాలం ప్రతిధ్వనించే కీర్తి

జై గురుబచన్ సింగ్!
 సలాం సలారీయా! జై హింద్!

ఘాలి లలిత ప్రవల్లిక
 9603274351
 మహబూబ్ నగర్





7. కీర్తి పతాకమై (మేజర్ ధన్ సింగ్ థాపా)



హద్దు దాటి కారాకోరం పాస్ ఆక్రమణ
పాకిస్తాన్‌కు చైనా మిత్ర సాయం
పరుల సొమ్ము లాక్కొని దాడి చేయుట
విద్రోహ దేశాలకు అమిత ఆనందం !

అందాల కాశ్మీర్‌నూ ఆక్సాయ్ చిన్నూ దోచి
యుద్ధానికి సై అంటూ ముందడుగు
హిందీ చీనీ భాయ్ బాయ్ అని నమ్మించి
ఆదమరిచిన భారత్ పై వెన్నుపోటు

భారత బంకర్ల వద్దనే కాల్పులు జరిపి
సైనికుల్ని లొంగిపొమ్మని హెచ్చరికలు
మేజర్ ధన్ సింగ్ థాపా నాయుకత్వంలో
అగ్ని రవ్వలే అణుబాంబులై విస్ఫోటనాలు !

ఒక్కొక్క నిప్పురవ్వ అగ్నిపర్యతమై
లావా విరజిమ్ముతూ శత్రు నాశనం
ప్రాణాలు లెక్కచేయని కర్తవ్యధీరులు
చూపుల్ని తూటాలుగా మార్చి భస్మం !



పద్మ వ్యూహంలో అభిమన్యుడిగా ఢాఢా
భయోత్పాతం సృష్టిస్తూ వీర విహారం !
వీరులైన సైనికులు అతితక్కువన్నా
విచ్చుకత్తులై చైనా గుండెలు చిద్రం!

చీల్చి చెండాడే మన సైన్యాన్ని వంచించి
చుట్టుముట్టి బంధించి చిత్రహింసలు,
నీతి న్యాయం నరనరానా పారే సైనికులు
ఎంత కుళ్ళు బొడిచినా విప్పలేదు నోళ్ళు !

ఒక్క రహస్యమూ రాబట్టలేని చైనా
చేసేదిలేక యుద్ధభైదీల విడుదల !
పరమవీర చక్ర పొందిన ఢాఢా శౌర్యం
ఎగిసింది కీర్తి పతాకమై హిమాలయాల కావల !

డా. కందేపి రాణిప్రసాద్

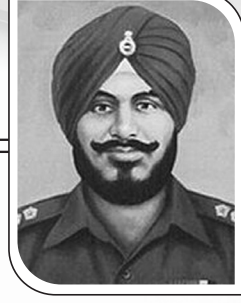
సిరిసిల్లా

+91 98661 60378





8. జై హింద్ జోగిందర్ సింగ్ (సుబేదార్ జోగిందర్ సింగ్)



సింహం పోరాడినా, గర్జించినా
అరణ్యం అదిరిపడుతుంది
సింహం గెలిచినా, ఓడినా
అరణ్యం గుర్తు పెట్టుకుంటుంది
అదే సైనిక సింహం అయితే
అరి వీర భయంకరమై
మధ్యందిన మార్తాండమై
శత్రువుపై విరుచుకుపడుతుంది
ప్రత్యక్షంగా ప్రపంచమే సాక్ష్యమయ్యింది
చైనాతో యుద్ధంలో!
ఇక్కడ కొదమసింహం మహావీరుడు జోగిందర్ సింగ్!

సిక్కు రెజిమెంట్ ఫస్ట్ బెటాలియన్
ధీరోదాత్త దేశభక్తుడు జోగిందర్ సింగ్,
అరుణాచల్ ప్రదేశ్కు దూసుకువస్తున్న
చైనా ముష్కరమూకలను నిలువరించేందుకు,
తంగ్ పెన్ లా భారత సైనిక పోస్టుకు సాగిపోయాడు
కన్నేసిన చైనీయులు
భారీ దళాలతో చొరబడ్డారు
చివరి తూటా, చివరి క్షణం వరకూ
పోరాడతానే తప్ప శత్రువుకు వెన్ను చూపనని
భరత మాతకు ప్రమాణం చేసిన ధీశాలి
చైనీయుల అడ్డుకట్టతో



లక్ష్యాన్ని చేరలేకపోయినా
 మొక్కువోని విశ్వాసంతో,
 ఉక్కు సంకల్పంతో
 జోగిందర్ చైనీయులతో తలపడ్డాడు
 యుద్ధం భీకరమైనా చైనీయులనెందరినో
 మట్టి కరిచిన ధీరుడతడు!
 శత్రువులు చక్రబంధం చేసినా
 వెరవక, వెనుకంజ వేయక
 ఆ ముప్పురులతో ముఖాముఖి పోరు సల్పి
 ఒంటి చేతితో, గుండె నిబ్బరంతో
 ఎందరో చైనీయులను వీరోచితంగా హతమార్చి
 పిరికిపందల వెన్నుపోటుతో
 వీరమరణం పొందిన
 పరమ వీర చక్ర బిరుదాంకితుడు
 భారతీయుల హృదయాల్లో నిలిచిన
 వీరకిశోరం

బండారు జయశ్రీ

భువనగిరి

9885623485





9. ఎక్కుపెట్టిన గన్! (మేజర్ శైతాన్ సింగ్)



ఆ పరమవీరుని నుదుటి అరుణతిలకం
కుమాయూ రెజిమెంట్ హృదయంలా
కణకణలాడుతూనే ఉంది
ఆ సైనిక యూనిఫాంని
తడిపేసిన రుధిరం
భరతపౌరుషానికి అంజలించిన
చైనా దోసిలిలా ఉంది
లడఖ్ రిజంగ్లా గుట్టలమాటున
పటిమ చాటిన
మూడుసింహాల టోపీ
యావద్భారతాన్నీ
మోకరిల్లజేసుకుంది.

ఉయ్యాలలో ఉగ్గతాగే పాలనవ్వులు
సరసనిశితో కాలంపట్టని నవదంపతులు
వ్యాపారులు.. విద్యార్థులు..
పౌరులంతా ఆ కనురెప్పలకింద
కంటిపాపలౌతున్నప్పుడు
పదిహేనువేల అడుగుల ఎత్తున పోరాటంలో
కునుకెరుగని శైతాన్ సింగ్
తోటి జవాన్లను మళ్ళీ మళ్ళీ ఉత్తేజపరుస్తూ
ఎక్కుపెట్టిన గన్ లోకే
ప్రాణం ధారపోసిన సింహవిక్రముడయ్యాడు



ఆ ధీశాలి కాళ్ళలో.. గుండెలో.. పొట్టలో
దిగబడిన పగవారి తూటాలకు
ఎన్ని గౌరవ పతకాలు ప్రకటిస్తే మాత్రం
ఆ దీపదానానికి సరితూగుతాయా!
ఎన్ని సెల్యూట్లు సమర్పిస్తే మాత్రం
ఆ మాతృరక్షకుడికి మహానివాళి అవుతుందా!

- డా. సి.భవానీదేవి

హైదరాబాద్

9866847000





10. మరణం లేని భీరుడా! (హవల్దార్ అబ్దుల్ హమీద్)



నీకు జన్మనిచ్చిన తల్లి గర్వంతో ఉప్పొంగిపోయింది
నీవు నడయాడిన నేలమ్మ నిలువెల్లా పులకించిపోయింది

దర్జీ కుటుంబంలో పుట్టి
ఫోర్త్ గ్రెనెడియర్స్ సైనికుడిగా
తుదిశ్వాస విడిచావు
దర్జాగా మా మనసులో
పదిలంగా నిలిచిపోయావు

శాంతి రెక్కలను విప్పి సరిహద్దుల్లో విహరించే
మిలటరీ కపోతానివి నీవు
యుద్ధం అనివార్యమయినపుడు
దేశ ప్రజలను నీ బిడ్డలా భావించావు
దేశ రక్షణకై నీ గుండెను కవచంలా అడ్డుపెట్టావు

నీ చుట్టూ స్మశానం ఆవహించినా
ఆవగింజంతైనా ధైర్యాన్ని కోల్పోలేదు
తోటి శరీరాలన్నీ ముక్కలవుతున్నా
క్షణం కూడా కుంగిపోలేదు
శత్రువుతో పోరాడి ఆకలి దప్పులను మరిచి
ఒంటరిగా అడుగులువేస్తూ



వేలమైళ్ళు దాటుకుని
మాతృ నేలను ముద్దాడావు

తాను నిలువెల్లా దహించుకుపోయినా
లోకానికి వెలుగునిచ్చే సూర్యుడివి నీవు
నీ తనువు రక్తమోడుతున్నా
శత్రువు పంపిన యుద్ధ ట్యాంకులకు
చుక్కలు చూపించే కన్ను మూశావు

పున్నమి నాటి నిండు జాబిలివై
నేనున్నానంటూ చల్లని నీ వెన్నెల నీడలో
ప్రతి రాత్రి మమ్ముల్ని నిద్రపుచ్చుతావు
నీవు మాత్రం కండ్లలో కాగడాలు వెలిగించుకొని
భరతమాతకు పహారా కాశావు.

నాలుగు ప్యాటన్ ట్యాంకులను ధైర్యంగా నేలకూల్చి
వీరుడిగా నేల కొరిగావు
నీకోసం నిత్యం తపించే నీ కుటుంబానికి మమ్ముల్ని
ఎప్పటికీ తీర్చలేని రుణగ్రస్తులను చేశావు...
పరమ వీర చక్రతో దేశమాత గుండెల్లో
ఎప్పటికీ వుంటావు... దేశాన్ని గర్వంగా నిలబెట్టుంటావు.

సలీమ

హైదరాబాద్

9490099083





11. వీరుడెప్పుడూ విజేతయే! (లెఫ్టినెంట్ కల్నల్ ఎ.బి. తారపూర్) ◆➤



యోధుడికి యుద్ధం ఒక ఆట
తాను ఓడకుండా
ప్రత్యర్థిని గెలవనీయకుండా
ఒదువుగా దూసుకుపోయే సాహసక్రీడ

అది పాకిస్థాన్లో భారత్ యుద్ధం
'పిలోరా' సియల్కోట్ సెక్టార్ పై గురి
పాక్ యుద్ధ ట్యాంకుల ధ్వంసమే ధ్యేయం!
పూణే 17వ హార్న్ రెజిమెంట్ రంగంలోకి దిగింది

లెఫ్టినెంట్ కల్నల్ ఏబీ తారపూర్
ట్యాంక్ స్క్వాడ్రన్ కమాండ్ర్ ఆఫీసర్
కుడి-ఎడమల దాడికై
వ్యూహం పన్నాడు
భారత యుద్ధ ట్యాంకులను
ముందుకు నడిపించాడు

యోధుడికి యుద్ధం ఒక కసి
దిగినకొద్దీ లోతు చూస్తూ
పగవాడి అంతుచూసే బీభత్సకేళి!

కొడితే ఏనుగు కుంభస్థలాన్నే కొట్టాలి
కొదమసింహమై చెలరేగిన తారపూర్
భారత ట్యాంక్ స్క్వాడ్రన్ లో
ఉత్సాహం ఉరకలెత్తించాడు
భూమ్యాకాశాలు దద్దరిల్లేలా
ఇరుపక్షాల కాల్పుల వర్షం

సలాం సైనికా!



ప్రమాదం పసిగట్టిన
శత్రు సైన్యం నాయకుడు
తారపూర్ని నిలువరించాలని
చేశాడు విశ్వప్రయత్నం!

యోధుడికి యుద్ధం మృత్యుకుహరం
శత్రువుతోనే కాదు... మృత్యువుతోనూ
యుద్ధం చేయాలి!

దండెత్తిన దాయాదిదళం
విరామమెరుగని భీకరసంగ్రామం
దూసుకొచ్చిన తూటాలు
నిప్పుకణికలై దేహాన్ని తాకాయి
దెబ్బతిన్న బెబ్బలి తారపూర్

యోధుడికి యుద్ధం ఒక పద్యవ్యాహం
చొచ్చుకుపోవటమొక్కటే దారి!
విజయమైతే... సరే, వీరమరణమా... సైసై!

ప్రాణాలను అదిమిపట్టి,
శక్తిసంతాకూడగట్టి
ఆఖరి ఊపిరి వరకూ
దేశమాత రక్షణకై తానే ఒక సైన్యమై
పోరాటం సలిపి
యుద్ధభూమిలోనే నేలకొరిగాడు
లెఫ్టినెంట్ కల్నల్ అర్దేశిర్ బుర్జోర్జీ తారపోర్!

గెలిచినా, ఓడినా - బ్రతికినా, చచ్చినా
వీరుడెప్పుడూ విజేతయే!
‘పరమవీర చక్ర’ వరించిన
అమరవీరుడు ఎ.బి. తారపూర్!

కిరణ్ బాల

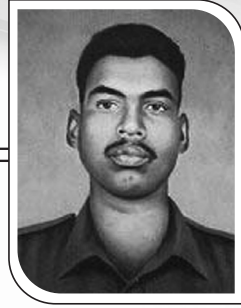
ఆర్మూర్

9848868067





12. దేశం కోసం వీర్ బహురీ (లాన్స్ నాయక్ ఆల్బర్ట్ ఎక్కా)



అతనో గిరిపుత్రుడు!

మారుమూల కొండప్రాంత ఆదివాసి!

నిరంతర క్రీడా వేటతో సహవాసి!!

విల్లంబులనే దుస్తులుగా ధరించి

అడవినే ఆవాసం చేసుకున్న స్వేచ్ఛా విహారి!

గురిచూసి లక్ష్యాన్ని చేదించడంలో

అర్జునుడంతటి ధనుర్ధారి!!

మాతృ భూమికి సేవలందించాలని

తహతహలాడిన తపస్వి!

బీహార్ రెజిమెంట్‌తో ప్రస్థానం మొదలెట్టి

అంచెలంచెలుగా లాన్స్ నాయక్‌గా ఎదిగిన మనస్వి!!

తన పోరాట పటిమతో

భారత పాకిస్థాన్ యుద్ధంలో

గంగా సాగర్ బ్యాటిల్‌లో

అభేద్యమైన శత్రుస్థావర

యుద్ధ బంకర్లను

తుత్తునియలు చేసిన సవ్యసాచి!

బంగ్లా వార్గా పిలిచే యుద్ధంలో

తన అప్రతిహత యుద్ధ భేరి మ్రోగించి

శత్రు గుండెల్లో రైళ్లు పరిగెత్తించిన

వెన్ను చూపని మన్యం వీరుడు!!

గంగా సాగర్ దిశగా సాగే రెజిమెంట్

ముందుకెళ్లాల్సిన ఒకే ఒక్క మార్గం -

శత్రు బంకర్లతో ముప్పిరిగిస్తూ మూసుకు పోయింది!

ధైర్యమే సాహసంగా

సాహసమే ఊపిరిగా

సమరం కొనసాగించాల్సిన స్థితి!



అయితేనేం?

అతడో భారతీయ సైనికుడు!

ఆత్మ విశ్వాసానికి పర్యాయ పదం!

పరాక్రమానికి పెట్టింది. పేరు!

త్యాగానికి నిలుపుటద్దం!!

కదన క్షేత్రంలో తానో కొదమ సింహమై

ముందుకురికి

గ్రేనేడ్ తో

శత్రు పోస్తును ధ్వంసం చేసాక

లైట్ మెషిన్ గన్ తో విరుచుకు పడుతున్న

చిట్ట చివరి శత్రు సైనికుడినీ తుద ముట్టించి

విజయాన్ని ఇష్టంగా ముద్దాడి

ప్రాణాన్ని తృణ ప్రాయంగా

త్యజించిన భరత తేజం!!

శత్రువు కెదురేగి చేసిన

ముఖా ముఖీ యుద్ధంలో

చివరి రక్తపు బొట్టు వరకూ పోరాడి

అసువులు బాసిన అమరుడు,

అజేయుడు, అమేయుడు, అలుపెరుగని యోధుడు!

తన దేశ భక్తి తో పుట్టిన నేల

జార్జండ్ కు వన్నె తెచ్చిన

జంగల్ వారియర్!!

తన కదన వ్యూహంతో ప్రత్యర్థి వెన్నులో

చలి పుట్టించిన

వీర్ బిహారీ!!

మాతృభూమికి మణిహారమైన దేశ ప్రేమికుడు!!

సూర్య చంద్రులున్నంత వరకు

నీ కీర్తి దిగంతాలకు వ్యాపిస్తూనే వుంటుంది

విక్రమ పరాక్రమా! ఓ పరమ వీర చక్రా

అల్ఫర్డ్ ఎక్కా!! అందుకో మా జోత

డా. వాణీ దేవులపల్లి

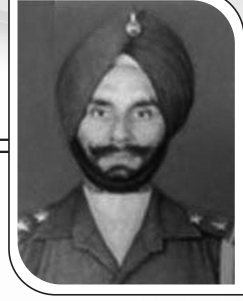
వరంగల్

091 98669 62414





13 వీర ఛత్రం (నిర్మల్ జీత్ సింగ్ సెఖాన్)



అతను

పిట్ట కన్నును మాత్రమే చూసిన ఆధునిక అర్జునుడు
రాగ ద్వేషాలకన్నా దేశభక్తిలోనే
ఆత్మనందాన్ని పొందిన ఆధునిక భీష్ముడు
భారతదళాలు రావాలంటే శ్రీనగర్ రన్వే ఉండాలంటూ
కశ్మీర్ హైవే మిగలాలంటూ
అతడే ఒక సైన్యంగా పరుగులెట్టినవాడు

మత నినాదాన్ని పట్టుకుని
సమర నినాదాన్ని ప్రకటించే వారికి
బాంబుల భాష తప్ప
మానవీయ భాషలు తెలియనివారికి
అసలైన యుద్ధాన్ని చూపించిన వాడు
పేరులోనే జీత్ని నిలుపుకున్న
సెఖాన్ కాక మరెవ్వరు ?

తండ్రి తర్లోక్ సింగ్ని పైలెట్గా చూసిన స్ఫూర్తితో
విమానాలమీద మనసు చిన్నప్పుడే పారేసుకున్నవాడు
గగనతలంలో యుద్ధ విమానాలు లెక్క పెట్టి పెట్టి
ఆకాశాన్ని ప్రేమించినవాడు
చందమామతో చుంబనం కోసం
ఆకాశమంతగా ఎదిగినవాడు

పెషావర్లో లేచిన యుద్ధవిమానాలు
లైన్ ఆఫ్ కంట్రోల్ని దాటేసి
మన దేశ రాడాల్ని ఏమార్చి



శ్రీనగర్ రన్ వే మీద తొలి బాంబ్ వేసాక
ఆరు యఫ్ 86 యుద్ధ విమానాలపై ఫైటర్ జెట్ తో
యుద్ధం ప్రకటించినవాడు

రాజీ దేశ రక్తంలో లేదంటూ
ఫైటర్ కర్తవ్యం వెనుతిరిగేది కాదంటూ
తన 18వ స్క్వాడ్రన్ వైపు చూసి
మంచు మేలి ముసుగేసుకున్న శ్రీనగర్ కి
గౌరవంగా సెల్యూట్ చేసినవాడు

దేశభక్తి నే కవచంగా, ధైర్యమే ఆయుధంగా నిల్చి
పాకిస్తానీని బెంబేలెత్తించి
వారి జెట్లని తోక ముడిచేలా చేసినవాడు
పారాచూట్ తో నేలకు దిగుతూ ఫైరింగ్ లో కిందపడి
మరణంలోనూ చిరునవ్వుతో
తన కీర్తిని పైపైకి ఎగరేసినవాడు
తొలిసారి పరమవీర చక్ర పురస్కారాన్ని
వాయుసేనకి బహుకరించిన ధీరుడతడు

అవును... మనమెప్పుడూ శాంతి కోసం పాపురాలని
గాల్లోకి స్వేచ్ఛగా ఎగరెయ్యటాన్ని చూసినవాళ్ళమే
ఓ తెల్ల పాపురమై నిర్మల్ జీత్ సింగ్ సెఖాన్
యుద్ధం చేయటాన్ని సరికొత్తగా చూసాం

తన వీరత్వం విజయ సంకేతం!
తన ధీరత్వం ఆత్మవిశ్వాస కేతనం!!
తన నిబద్ధత నిత్య స్ఫూర్తి!
తన నిస్వార్థం నిరంతర దీప్తి!!

డా. సుధా శేఖర్
మిల్ వాకీ, యుఎస్ ఏ
+1 6306216815





14. నెత్తుటి సూర్యుడు (అరుణ్ ఖేతర్ పాల్)



మత పైశాచిక కోరలు
ఉనికిని లాక్కునప్పుడు
ఒక పిడికిలి సైనికుడై ఉద్భవించింది
మరొక వీరుడికి పురుడు పోసింది

చీకటిని ఛేదించడానికి
నెత్తుటి సూర్యుడి విశ్వప్రయత్నం
మట్టి రుణం తీర్చుకోవడానికి
ఆకుంఠిత దీక్షా పరాయణత్వం
దేశమాతను గెలిపించడానికి
అరుణ్ ఖేతర్ పాల్ లెఫ్టినెంట్ ధీరత్వ పోరాటం

సరసరానా దేశభక్తి
వారసత్వంగా ప్రవహిస్తుంటే
ఆడుకునే పిన్న వయస్సు ఆటంబాంబై ప్రకోపించింది
తండ్రి బ్రిగేడియర్ ఖేతర్ పాల్
హృదయం గర్వసంద్రమై ఉప్పొంగింది

ఇండో-పాకిస్థాన్ బసంతర్ యుద్ధం
అరుణ్ కు బుల్లెట్లతో ఆడుకునే క్రీడా ప్రాంగణం
పూనా గుర్రమై ఒంటరిగా శత్రుకూటమిపై
ఉరికిన సింహకిషోరం
రెండు ట్యాంకులతో పది ట్యాంకులను
ధ్వంసం చేసిన వీరోచిత పోరాటం
భారత సైన్యపు యవనికపై సువర్ణ లిఖితం



మండుతున్న ఫమగుస్తా ట్యాంకుతో
మహోజ్వల అగ్ని కెరటమై ఎగిసిన సునామీయై
శత్రు మూకలను దునుమాడి
షకర్ యుద్ధభూమిని
పునీతం చేశాడు

అతని మరణం అమరత్వం
అతని త్యాగం చిరస్మరణీయం
త్రివర్ణాలు పులకించిన వేళ
భారతావని పులకాంకురమైన వేళ
ఒక ప్రాణం దీపమై వెలిగింది
దేశభక్తి కిరణాలను విరజిమ్మింది
పరమ వీర చక్రను వరించింది.

- డాక్టర్ శారదా హన్మాండ్లు
నిజామాబాద్,
9912275801.





15. యోధుడా సలాం!

(మేజర్ హోషియార్ సింగ్)



అతడు భరతమాత చేసుకున్న పుణ్యఫలం
హీరాసింగ్ మాధురిల ముద్దుబిడ్డ
ధనో దేవి హృదయేశ్వరుడు
దేశానికి అసలు సిసలు సైనికుడు!

చదువులలో మేటి, ఆటలలో సాటి
అడుగు పెడితే అటు మైదానం
ఇటు యుద్ధభూమి దద్దరిల్లాల్సిందే!

మూడవ గ్రేనేడియర్ గా సత్తా చాటి
బసంతర్ నది శత్రుమూకను ఛేదించి
అవరోధాలను అధిగమించి
పాక్ సైన్యంని తరిమి కొట్టిన సాహసి!

పేరులోని హోషియార్
నడతలో అప్రమత్తత
నాలుగు దఫాల దాడుల తిప్పి కొట్టి
3 ఫ్లాటూన్ల పాక్ యుద్ధ ట్యాంకుల రణాన్ని
ఎదిరించి గెలిచిన ఘనుడు!

కాలులో దిగిన బుల్లెట్ ఖాతర్ చేయక
కదన రంగాన్ని ముందుకు నడిపి
పాక్ దాడుల ఎదురించి గెలిచిన బాహుబలి!



ఆ స్థైర్యానికి, ఆ ధైర్యానికి
మువ్వన్నెల జెండా మురిసిపోయింది!
ఆ త్యాగధనుడి కోసం
పదవిలో ఉండగానే
పరమవీరచక్ర వరించింది
పుడమి పులకించింది!

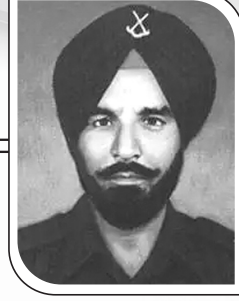
పదోన్నతులు పరుగున చేరాయి
ఆ రెండో పాక్ యుద్ధ వీరుడు
ధిల్లీ నేషనల్ వార్ మెమోరియల్ ధీరుడు
నేటి తరానికి ఓ నిత్య స్ఫూర్తి!
పరమ వీర చక్ర మేజర్ హోషియార్ సింగ్!
యోధుడా అందుకో మా సలాం!!

- డా. సమ్మెట విజయ
హైదరాబాద్
9989820215





16. అగ్నిశరం! (సుబేదార్ బాణా సింగ్)



నువ్వు నేనూ బతకడానికే యుద్ధం చేస్తాం
అతడు మనం భరోసాగా జీవించేందుకు
మరణాన్ని పిడికిట పట్టి యుద్ధం చేస్తాడు.
నీకూ నాకూ నలుగురున్న ఓ కుటుంబం ఉండొచ్చు
అతడి తల మీద కోట్ల కుటుంబాలుంటాయి
అతడి భుజం మీద బారెల్ తుపాకీయే కాదు
కోట్ల జనజాతి కీర్తి ప్రతిష్ఠలు ఉంటాయి

అతడొక అగ్నిబాణం...

అతడొక్కడే శత సైన్యగణం
విఫలమైన ఆపరేషన్ మేఘదూత కీ
విగతులైన వీర సైనికుల ప్రాణాలకీ
బదులు తీర్చుకోవాలని
ఖాయీదే ఆజం జిన్నా పోస్టు శిఖరంపై
త్రివర్ణ పతాకం రెపరెపలాడించాలని
శత్రువు దురాక్రమించిన సియాచిన్ హిమఖండాన్ని
గెలిచి తెచ్చి తిరిగి వచ్చి కనిపిస్తామని
కొడిగట్టే ప్రతిష్ఠను నిలబెట్టే ప్రతిజ్ఞ చేసాక
ఏరికోరి ఎదురు వెళ్లి ప్రమాదాన్ని వరించాక
జమ్మూ కాశ్మీర్ లైట్ ఇన్ ఫెంట్రి రెజిమెంట్ నుండి
ఆపరేషన్ రాజీవ్ లో అతి ముఖ్య భాగమయ్యాక
ఉడుకెత్తిన నెత్తుటి పౌరుషాన్ని
ప్రపంచంలోకెల్లా ప్రమాద యుద్ధ క్షేత్రం భయపెట్టగలదా ?
ఉరకలేసే లావా నిప్పుల ప్రవాహాన్ని
మైనస్ యాభై డిగ్రీల మంచుకొండలు చల్లార్చగలవా ?

సలాం సైనికా!



మరణానికి సవాలు విసిరే రణ సింహాన్ని
మంచు తుఫాను మట్టు పెట్టగలదా ?
అటు అభేద్య శిఖరం అది అతి సాహస పయనం
ఇటు సంధించిన బాణం శత్రు స్థావరమే దాని లక్ష్యం
దారి కూరుకుపోయినా, ప్రయాణం క్లిష్టతరమైనా
మునుముందుకే సాగిన ఆ నలుగురి సేన
వారి నాయక సింహమే మన బాణా ..

ఎముకలు కొరికే చలి .. ఎదురుగా మృత్యువు కౌగిలి
అయినా యుద్ధం ఆపలేదు వీర కేసరి
ప్రాణాన్ని పణంగా పెట్టి
మరోదారిలో మంచుకొండనెక్కి
బంకర్లలో మాటువేసిన శత్రువుల్ని మట్టుబెట్టి
ముఖాముఖీ పోరులో ముప్పురలను తుదముట్టించి
ప్రపంచంలో రెండవ ఎత్తైన శిఖరాన్ని
జాతికి బహుమతిగా అందించిన వీరుడు!
భారత పతాకాన్ని మంచుకోటపై నాటిన సుబేదారుడు !
తన పేరును పర్వత శిఖరానికి కానుకగా ఇచ్చిన ఘనుడు !

ఖాయీదే ఆజం పోస్ట్ పేరు చెరిపి
బాణా టాప్ గా
పిలిచే గౌరవాన్ని సైన్యం నుండీ
పరమవీరచక్ర గౌరవ పతకాన్ని ప్రభుత్వం నుండీ
దేశాన్ని గెలిపించి తాను గెలుపొందిన శూరుడు !

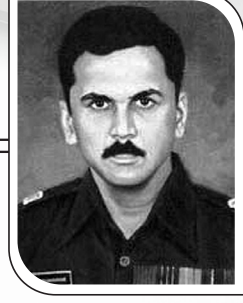
అతడు అగ్నిబాణం ..
అపజయమెరుగని కొదమ సింగం !

నెల్లుట్ల రమాదేవి
వరంగల్
94406 22781





17. శాంతి కపోతం (మేజర్ రామమూర్తి పరమేశ్వరన్) ◆▶



మేజర్ రామమూర్తి పరమేశ్వరన్
శాంతిని నెలకొల్పిన తెల్ల పావురం

యుద్ధంలో గెలుపెంత అనివార్యమో
యుద్ధం లేని శాంతి కూడా అంతే అనివార్యం
భరతమాత ముద్దుబిడ్డలు త్రివిధ దళాలు
ధైర్య సాహసాలకు పెట్టింది పేరు

స్వదేశీ సరిహద్దు పోరాటాలు
విదేశీ అత్యవసర సేవలు
శత్రుమూకలైనా ఉగ్రవాదులైనా
లక్ష్యాన్ని ఛేదించడమే ప్రథమ కర్తవ్యం

రామస్వామిజానకిల ముద్దుబిడ్డ
మేజర్ రామస్వామి పరమేశ్వరన్
పాతికేళ్ల వయసులో సైన్యంలో చేరి
'మహర్' రెజిమెంటు ఖ్యాతిని నిలిపాడు

ఎల్.టి.టి.ఇ.తీవ్రవాదులు శ్రీలంకలో చెలరేగ
యు.ఎన్.ఓ.తో చేతులు కలిపిన భారత్
ఇండో శ్రీలంక ఒప్పందం- 'ఆపరేషన్ విండ్'
ఉగ్రవాదులనుదును మాడశాంతిసేన కదిలె!

ఆహారం, నీరు, విద్యుత్ అందని పరదేశాన
ఆయుధ స్థావరాల వెతుకులాట
రేడియో జాకీలు పనిచేయనిచోట
బాణాలు, తుపాకులు, గ్రనేడ్లుధరించిన పహారా



మేజర్ దళం నేలపై ప్రాకుతూ
ఉగ్రదళం కొబ్బరిచెట్లపై కాపుకాస్తూ
అర్ధరాత్రి చిమ్మచీకటిలో మెరుపుదాడులు
జూలు విదిల్చిన సింహాల్లా చెలరేగుచుండ

పేలిన శత్రువుల భారీ మెషిన్ గన్ తో
మేజర్ మణికట్టు తెగి పడె
ఉగ్రవాది పేల్చిన తూటా గుండెల్లో దిగె
ఉవ్వెత్తున ఎగసిపడెను భరతసుతుని రక్తధార

గాయాలను గాలి కొదలి లక్ష్మమనే శ్వాస నిలిపి
తన గుండెను చీల్చిన తుపాకీ తూటా
రిపు గుండెపై ఎక్కుపెట్టె రామస్వామి
చివరిశ్వాసతోడ ఆదేశాలిచ్చె కమాండోలకు

అరి మూకల మట్టుపెట్టి శత్రుస్థావరాన్ని గెలిచె
భయమెరుగని వీరుని కనులు గెలుపు చూసె
రక్తపుధారలలో భూమాత పులకించె
సాహసానికి మారురూపై తుది శ్వాస విడచె!
శాంతిని నెలకొల్పిన తెల్ల పావురం నింగికెగసె.

అధునాతన ఆయుధ నిల్వలు ధ్వంసం
ఐదుగురు ఉగ్రవాదులు నేలకూలగ
అపజయ మెరుగని పోరు వీరత్వపుచిహ్నమై
వీరసైనికుల చరితను సువర్ణపుటను చేర్చె!

చెన్నైలో పరమేశ్వరన్ విహార్ కాలనీ
పట్టుదల సూచించే కనులతో కాంస్య విగ్రహము
విశ్వ శాంతి కోసం దివికేగిన వీరునికి
'పరమవీరచక్రం' అందించి పులకించె భరతమాత!

చివుకుల శ్రీలక్ష్మి
విజయనగరం
9441957325





18. వీరసుదర్శన చక్రం! (కెప్టెన్ మనోజ్ కుమార్ పాండే)



ఎంత గొప్పదానివి
అమ్మా..భారతాంబిక నీవు..!
పరమ వీరచక్ర సాధనే
తన లక్ష్యసాధనమని,
దేశరక్షణకై తన ప్రాణమని
వినాడో చెప్పిన ధీర సుతుడు
మనోజ్ కుమార్ పాండేను కన్ను మాతవు...!

ఎత్తు పల్లములన్నీ ఏకం చేసి
కటిక చీకటిలో కార్చిచువై
తమస్సును చీల్చే కణికవై ప్రజ్వరిల్లిన
నీ నిర్భయమే జాతికి అభయమవ్వగా
మృత్యువే నిన్ను చూసి దారివిడువగా
మరో మంగళ పాండేవై చెలరేగిన
ఓ ధీరా..మనోజ్ కుమార్ పాండే...!

ఉప్పొంగుతుంది నీ తల్లి హృదయం
కదిలించింది జాతి మదిని నీ త్యాగం
గోళీలతో హోళీ అడుతూ నువ్వు
మా వాకిలిలోకి దీపావళిని పంపావు
బండరాళ్లు పువ్వుల్లాయె నీ గుండెకు
గ్రెనెడ్లు బంతులైపోయే నీ దెబ్బకు
పాక్ ముష్కరులు వణికిపోయే నీ తెగువకు...!



“ఖూకర్ థాంగ్” ను జాతి కిచ్చి
 ఆపరేషన్ విజయ్ కు శ్రీకారం చుట్టిన ధీరా..
 నీ పోరాట పటిమ కదా “జుబార్ హిల్స్”
 “గూర్ఖా రైఫిల్ కాలుబారు” నాయకుడా..
 లీడర్ అంటే నీవు, ఫైటర్ అంటే నీవు
 సైనికులను ముందుడి నడిపిన దక్షుడా..
 జాతి జగతికి జోల పాడిన రక్షకుడా...!

పరమశివుడి అగ్నినేత్రం నీవు
 నారాయణుడి సుదర్శన చక్రం నీవు
 రెండు గుండ్లు గుండెలో దిగినా
 శత్రువులపై విజృంభించిన మరో అల్లూరివా
 క్షమతా, దక్షతల కలబోత సుభాష్ వా..
 గండ్రగొడ్డలి లేని పరశురాముడివా ..
 అందరి అంశనిండిన ఆదిశక్తివా...!

వీర సైనికా....! నీవు లేకుంటే మాకు
 బతుకు లేదు, ఊపిరి లేదు.
 మిమ్ము నమ్మి హాయిగా నిశ్చసిస్తుంది,
 అమ్మ ఒడిలో పసిబిడ్డలా భారతావని,
 సుదర్శన చక్రమై జ్వలించిన
 ఓ.. పరమవీరచక్రమా. !
 అక్షర తర్పణమిది
 కెప్టెన్ మనోజ్ కుమార్ పాండే”
 రక్ష రక్ష మహాభాగ....!!

రమాదేవి కులకర్ణి
 హైదరాబాద్
 8985613123





19. అమర పరాక్రమం (గ్రెనేడియర్ యోగేంద్ర సింగ్ యాదవ్)



కార్గిల్ కారుచీకట్ల నడుమ
ఫిరంగుల అగ్నివర్షాల మధ్య
శౌర్య శిఖరమై
ఉదయించిన నవ, యువ సూర్యుడతడు
ఆతని అచంచల సంకల్పానికి
భరతమాత స్వయంగా
విజయ తిలకాన్ని దిద్దింది

ఉత్తరప్రదేశ్ నేలపై
వీరత్వానికి రూపమై జన్మించి
తండ్రి కరణ్ సింగ్ దేశభక్తి రక్తాన్ని
వారసత్వంగా అందుకొని
సైనికుల వీరగాథలను
ఊయల పాటలుగా ఆలకించి
జన్మభూమికి అంకితమైన
జాతీయగీతాన్ని తన గుండె చప్పుడుగా చేసుకున్న ధీరుడు

పద్దెనిమిదో గ్రెనేడియర్స్ దళంలో
భారత భుజబలమై నిలబడి
పదిహేడు వేల అడుగుల ఎత్తున
మంచుకొండల నిశ్శబ్దాన్ని చీల్చుకుంటూ
శత్రు శిబిరాలలోకి
చొచ్చుకుపోయిన నిశ్శబ్దతూటా



ఆ రోజు..

సాహసానికి కొత్త నిర్వచనం రాసింది

అతని అడుగులే..

వేకువకు ముందు

చీకటిదారులలోనే

తోటి వీరులతో శిఖరాలెక్కిన వేళ..

తూటాల వర్షం కురిసింది

రక్తం ధారలై పారింది..

సహచరులు ఒక్కొక్కరుగా నేలరాలినా..

అతని ధైర్యం మాత్రం

హిమశిఖరాలకంటే ఎత్తుగా నిలిచింది

ఒక్కొక్క బంకర్..

అతని విజయానికి సాక్ష్యమైంది

మెరుపులా దూసుకెళ్లి

మృత్యువు కళ్లలోకి సూటిగా చూసి

రణరంగాన్ని రుద్రతాండవంగా మార్చాడు

అతడు కేవలం సైనికుడు కాదు..

అమర పరాక్రమానికి

అసలైన రూపం

పదిహేను బుల్లెట్లు

శరీరాన్ని ఛేదించాయి

అతని సంకల్పాన్ని మాత్రం కాదు

గాయాల నొప్పిని మరచి

మంచుపై పాకుతూ

శత్రువు ప్రతి కదలికను గమనించి

వారి కుట్రలను ఛేదించి

టైగర్ హిల్స్‌పై

మువ్వన్నెల జెండాను

మళ్లీ గర్వంగా రెపరెపలాడించాడు



పదహారునెలల దేహబాధ
అనేక శస్త్రచికిత్సలు
అయినా.. అతడి ఆత్మవిశ్వాసం
ఎప్పుడూ ఓడిపోలేదు

కర్తవ్యమే శ్వాసగా
దేశమే దేవాలయంగా
సేవయే ఆరాధనగా
మళ్ళీ సైన్యంలో అడుగుపెట్టాడు

కేవలం పంతామ్మిదేళ్ల వయసులోనే
పరమవీరచక్రను అందుకొని
భరతజాతి చరిత్రలో
శాశ్వత అక్షరంగా నిలిచిపోయాడు

గ్రెనేడియర్ యోగేంద్ర సింగ్ యాదవ్..
అతడు ఒక వ్యక్తివి కాదు..
భరతమాత నుదుటిపై మెరిసే
విజయ సింధూరం
అమరవీరుల త్యాగాలకు
సజీవ ప్రతిరూపం
సరిహద్దుల్లో నిలిచే
ప్రతి జవాన్‌కు ప్రేరణా జ్యోతి
ప్రతి భారతీయుని గుండెల్లో
అమరత్వంగా వెలిగే
అజరామర శౌర్యగాధ

విశ్లేషక

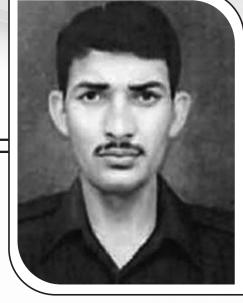
సికింద్రాబాదు

9550183143





20. మాతృ ఋణం (రైఫిల్ మేన్ సంజయ్ కుమార్)



జై జవాన్! జై కిసాన్!
నినాదం కాదు భారత జీవన విధానం
భారతావనిని కంటికి
రెప్పలా కాపుకాసే రక్షణవలయాలు సైనికులే
హిమాచల్ ప్రదేశ్ లో జన్మించి
దేశరక్షణలో పాలుపంచుకోవాలన్న
తపనతో లక్ష్య సాధనతో
ఎన్ని ఓటము లెదురైనా
దృఢ సంకల్పంతో భారత రక్షణదళంలో
రైఫిల్ మేన్ గా ఉద్యోగం
సాధించి కలల్ని నిజం చేసుకొన్నాడు.

గుండెబలమే వెన్నుదన్నుగా
13వరక్షణ దళంలో చురుగ్గా
కంట్లో కన్ను పెట్టుకొని నిరంతరం
దేశాన్ని పహారా కాశాడు
4875 పర్వతంపై కాపలాగా
దేశ భూభాగాన్ని ఆక్రమించనెంచిన
పాక్ సేనపై వ్యూహాత్మకంగా
బుల్లెట్ల వర్షం కురిపించాడు
పర్వతం పై ఉన్న శత్రువుతో తలపడేందుకు
దిగువన ఉన్న తోటి సైనికులకి



దారిని సుగమం చేస్తూ
 బంకర్లో దాక్కున్న శత్రువును
 మట్టుబెట్టుతూ
 రెండవ బంకర్ దగ్గర కు
 చేరే సమయంలో ముప్పురమూక
 నిశ్శబ్దంగ
 ఒక్కుమ్మడిగా గుండ్ల వర్షం
 కురిపించారు.
 కాలికి గాయమైనా లెక్కచెయ్యక అగిపోక

విజయమో వీరస్వర్గమో..
 విక్రమించిన పరాక్రమంతో
 ప్రాణం పణంగా పెట్టి.. పోరు సలిపినాడు
 నీ కృషికి, సేవకు, పోరాట పటిమకు మెచ్చి
 పరమ వీరచక్ర పతకం ఇచ్చి
 తనను తాను గౌరవించుకుంది దేశం

అజరామరమైన
 తన కీర్తి ఎప్పటికి
 వెలుగొందుతూనే ఉంటుంది.
 వీర సంజయకుమారా..!
 జయహో పరమవీరచక్ర ధరుడా!!
 జయహో భారత మాత ముద్దు బిడ్డా!!!

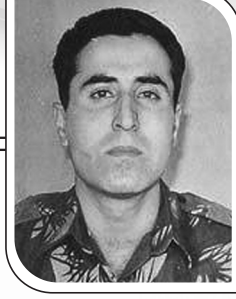
కొలిపాక శోభారాణి
 రాజన్న సిరిసిల్ల జిల్లా
 9491367409





21. పహారా సూర్యుడు!

(విక్రమ్ బాత్రా)



ఉదయపు కాపలా సూర్యుడు
 రాత్రికి పహారా చంద్రుడు
 వేరువేరు కావొచ్చు
 రెండు కాలాల రక్షకుడు సిపాయే
 దేశ నిఘా నేత్రం
 జాతి రక్షణ హస్తం సిపాయే
 దేశం ముక్కలు కానివ్వకుండా
 దేశాన్ని ముక్కలు చేసుకునేది సిపాయే

ఆక్రమించటానికి కార్గిల్
 లొక్కొటానికి దేశం ఊరికే లేవని
 తమను దాటి చూడాలని రణ సమర నాదాన్ని
 దిక్కులు పిక్కటిల్లేలా వినిపించాడు విక్రమ్

మతాన్ని పౌడర్ లా పులుముకున్న శత్రువులు
 దేశదేహంపై రక్త కళ్యాపి చల్లుతూ పోయారు
 శత్రువుల్లో వణుకు పుట్టిస్తానని
 చిన్ననాడే ఆర్మీని వరించాడు

జవాన్ల మర్మాంగాలను కోసి
 వికృత విన్యాసాలను చేసారు
 గన్ తోనే గుణపాఠం నేర్చి
 జాతీయ పతాకాన్ని





చేత్తో పట్టుకొనో ఒంటికి చుట్టుకొనో
జయం కలిగేలా చేస్తానని
విజయలక్ష్మిని వెంట తెస్తానని
తల్లి కమల్ బాత్రాకి మాటిచ్చాడు

టోలోలింగ్ పర్వతం ఎత్తు
5140 అడుగులు ఐతేనేం -
పాలంపూర్ పాశుపతాస్త్రం
ముందు తలొగ్గి నిలుచుంది
వందల సంఖ్యలో ట్యాంకర్లు ఐతేనేం
జంవాల్ తో కల్పిన విక్రమ్ సంకల్పానికి బుగ్గి బుగ్గి అయ్యాయి
దేశభక్తే అతని గుండెకి ఆక్సిజన్
దిల్ మాంగే మోర్గా గర్జించింది
షేర్వాగా గెలిచి నిలిచింది

ఆర్మీ జనరల్
విపి మాలిక్ అభినందనలు
కోట్ల చప్పట్ల ప్రశంసలు
ఇంకేం - వీర రక్తం యుద్ధ భూమికే మళ్ళీ తరిమింది

మూడు బంకర్లు నేలమట్టం
నాల్గవ బంకర్ వైపు సాగిన అడుగు
ఏ దిక్కునుండో బుల్లెట్ దూసుకొచ్చింది
తన గుండెను అడ్డుపెట్టి
పిల్లలున్న సైనికుడిని వెనక్కి నెట్టి
చిరునవ్వుతో సెల్యూట్ చేసాడు
దేశమాత ఒడిలో ఒరిగాడు



ఓ కార్గిల్ శూరుడా ! విక్రమ్ వీర జవానుడా !

శాంతిని స్థాపించటానికి కూడా

యుద్ధాలే చేయాల్సిన కాలమిది

వీర తిలకాన్ని దిద్దుకోటానికి స్వంత రక్తాన్నే

తర్పణమివ్వాలన్న తరుణమిది

కార్గిల్ యాత్రలో నీ పోరును

జనావళి తలుస్తుంది

4875 పాయింట్ కి

దేశం నీ పేరును పెట్టుకుంది

నీ త్యాగానికి యావత్ దేశం సలాం చేస్తుంది

నీ గుండె ధైర్యానికి సాగిలబడి మొక్కుతుంది

నీ సాహసాన్ని బృందగానంగా పాడుతుంది

జయహో విక్రమ్ బాత్రా ! జయ జయహో వీర జవానుడా !

వర్ధిల్లుతుంది నీ పేరు తల్లి భారతి ఉన్నంతదాకా !

అయినంపూడి శ్రీలక్ష్మి

హైదరాబాద్

9989928562

